जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

# राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 20 संख्याः 91 प्रभात जालोर, मंगलवार 8 जुलाई, 2025 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

# मेवाड़ की 28 सीटों में 17 आदिवासी सीटें हैं

## इन 28 सीटों में से केवल छः में कांग्रेस जीती थी

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जुलाई। डॉ. सी. पी. जोशी ने उदयपुर के मेवाड़ डिवीजन में एक रैली का आयोजन किया, जो एक आदिवासी बहुल इलाका है। इस रैली में एक भी आदिवासी नेता को मंच से बोलने का मौका नहीं दिया गया।

अब पार्टी के लोगों के बीच यह सवाल उठ रहा है कि क्या इस बैठक का मकसद पार्टी को आदिवासियों से जोड़ना था या उन्हें अपमानित करना और नीचा दिखाना?

ये सवाल सिर्फ उदयपुर से नहीं, बल्कि पूरे राजस्थान से उठ रहे हैं।

रैली में वरिष्ठ आदिवासी नेता रघुवीर सिंह मीणा भी मौजूद थे, जो कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी) के सदस्य और मंत्री रह चुके हैं, लेकिन उन्हें भी बोलने का मौका नहीं मिला।

इस इलाके की 28 सीटों में से 17 सीटें आदिवासी वर्ग की हैं।

यहाँ कांग्रेस को आदिवासी पार्टी बीएपी से कड़ी टक्कर मिल रही है, जिसके पास एक सांसद है, तीन विधायक हैं और दो सीटों पर वह बहुत कम अंतर से हारी थी तथा दूसरे नम्बर पर रही थी।

इस रैली में पार्टी के कई बड़े नेता बुलाए गए थे, जैसे एआईसीसी के राजस्थान प्रभारी रंधावा, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा, कांग्रेस विधायक दल के नेता टीका राम जूली आदि। दिल्ली से मीडिया प्रमुख पवन खेड़ा को भी बुलाया गया था।

ऐसा माना जा रहा है कि वरिष्ठ नेता, जैसे अशोक गहलोत, सी. पी. जोशी और अन्य, अपने-अपने क्षेत्रों पर पकड़ मजबूत करना चाहते हैं, जैसे गहलोत जोधपुर में, जोशी उदयपुर में और शांति धारीवाल कोटा में। और इसके पीछे का मकसद सचिन पायलट को किनारे करना है।

गहलोत की राजनीति की सोच स्पष्ट रुप से यही है कि पायलट को जितना हो सके, रैलियों से दूर रखा जाए।

समस्या यह है कि पिछले चुनावों में जिन इलाकों पर इन वरिष्ठ नेताओं का प्रभाव था, वहाँ कांग्रेस को बड़ी हार का सामना करना पड़ा। उस समय के मुख्यमंत्री (गहलोत) ने कई ऐसे उम्मीदवारों की हार सुनिश्चित की, जो उनके विरोधी खेमे से जुड़े थे।

अब मेवाड़ में आदिवासी पार्टी बीएपी कांग्रेस के लिए बड़ी चुनौती के रुप में उभर रही है, लेकिन इसके बावजूद सी. पी. जोशी ने किसी भी आदिवासी नेता को मंच पर बोलने नहीं दिया।

ऐसे में यह सवाल उठता है कि रंधावा वहाँ क्या कर रहे थे? क्या यह

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- सी.पी. जोशी अपने आपको मेवाड़ का नेता जताते हैं। अतः उन्होंने, उदयपुर ट्राइबल्स का सम्मेलन आयोजित किया, पर, मंच से किसी आदिवासी को बोलने का मौका नहीं दिया। यहाँ तक की रघुवीर मीणा, जो सी.डब्ल्यु.सी. सदस्य रहे हैं तथा पूर्व मंत्री भी हैं, मंच पर बैठे, पर श्रोताओं को संबोधित नहीं कर सके।
- चर्चा यह है कि गहलोत ने यह राजनीतिक, जाल बिछाया है, जिसके तहत जोधपुर में उनका आधिपत्य रहेगा, उदयपुर में सी.पी. जोशी का और कोटा में शांति धारीवाल का तथा इन क्षेत्रों से सचिन पायलट को बाहर ही रखा जाएगा, रैलियों से, आम सभाओं से तथा कांग्रेस के अन्य आयोजनों से।
- पर समस्या यह है कि पिछले चुनाव में, जिन संभागों में इन वरिष्ठ नेताओं की चलती थी, वहाँ कांग्रेस बुरी तरह हारी थी।
- क्या उदयपुर में आयोजित कांग्रेस के इस आयोजन में आदिवासी वोटर को साधना था या केवल दिल्ली को अपनी तथाकथित सक्रियता दिखानी, जिससे दिल्ली में कुछ स्थान मिल जाए। इस संदर्भ में सी.पी. जोशी ने दिल्ली की यात्रा की, वेणुगोपाल तथा मनिकम टैगोर से सम्पर्क साधने का प्रयास किया।
- क्या इसी प्रयास में दिल्ली से पवन खेड़ा को बुलाया गया। हालांकि, वे आदिवासी नहीं हैं।

## हाईकोर्ट ने मलिंगा का केस धौलपुर से जयपुर ट्रांसफर किया

जयपुर, 7 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने पूर्व विधायक गिर्राज सिंह मलिंगा की ओर से बिजली विभाग के एईएन से मारपीट के मामले में धौलपुर की अदालत में चल रहे मुकदमे को जयपुर जिले की एससी, एसटी कोर्ट में ट्रांसफर करने के आदेश दिए हैं। जस्टिस उमाशंकर व्यास की एकलपीठ ने यह आदेश पीडित हर्षाधिपति की आपराधिक याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

अदालत ने कहा कि आरोपी को जमानत मिलने के बाद निकाले गए जुलूस से प्रतीत होता है कि उसने शक्ति प्रदर्शन किया था, जबकि उसके खिलाफ

- अदालत ने जयपुर पुलिस कमिश्नर को सुनवाई के दौरान सुरक्षा का पुख्ता इंतजाम करने को कहा।

मारपीट के अन्य प्रकरण भी दर्ज हैं। ऐसे में मारपीट के इस केस को ट्रांसफर करना उचित है। इसके साथ ही अदालत ने जयपुर पुलिस आयुक्त को कहा है कि वे प्रकरण की सुनवाई के दौरान सुरक्षा व्यवस्था का पुख्ता इंतजाम करेंगे। इसके अलावा धौलपुर एसपी गवाहों समन व नोटिस तामील कराने में सहयोग देंगे। अदालत ने मामले की त्वरित सुनवाई के लिए केस ऑफिसर स्कीम के तहत एक एसआई और दो एएसआई को भी सहयोग देने के लिए कहा है।

आपराधिक याचिका में अधिवक्ता अखिल सिमलोट ने अदालत को बताया

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# दलाई लामा के जन्म दिवस समारोह में केन्द्रीय मंत्री रिजिजु, अरूणाचल के मु.मंत्री आदि उपस्थित रहे

## इस उपस्थिति तथा प्र.मंत्री द्वारा दलाई लामा को बधाई देने से भारत का मैसेज साफ था कि भारत, चीन की स्थिति अटपटी करने के ऐसे मौके छोड़ेगा नहीं, जब तक चीन भारत के हितों का ध्यान नहीं रखेगा

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जुलाई। भारत द्वारा रविवार को दलाई लामा के 90वें जन्मदिन पर दी गई बधाई ने चीन को नाराज़ कर दिया है और चीन ने भारत को उसके आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करने की चेतावनी दी है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को तिब्बती धर्मगुरु को उनके जन्मदिन पर शुभकामनाएं भेजी थीं।

गौर करने वाली बात यह है कि इस बार भारतीय अधिकारियों और कुछ मंत्रियों ने इस समारोह में भाग भी लिया, जिससे चीन की नाराज़गी और बढ़ गई। केन्द्रीय मंत्री किरेन रिजिजु, जो स्वयं बौद्ध हैं, समारोह में मौजूद थे। इनके अलावा, अरुणाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री भी शामिल हुए, जिसे चीन दक्षिण तिब्बत के रूप में अपना क्षेत्र मानता है।

यह भारत की ओर से चीन को एक स्पष्ट संकेत है कि अगर चीन भारत पर धौंस जमाने की नीति अपनाता है, तो भारत भी ऐसे किसी अवसर को छोड़ेगा नहीं। सेना के उप प्रमुख ने पहले ही खुलासा किया था कि पाकिस्तान को हाल ही में "ऑपरेशन सिंदूर", जो पाकिस्तानी

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- अपने 90वें जन्म दिन पर दलाई लामा ने पुरजोर ढंग से कहा कि उनका उत्तराधिकारी बौद्ध धर्म की पुरानी परम्परा के अनुसार ही चुना जायेगा, पर चीन चाहता है, उत्तराधिकारी के चयन में उसकी निर्णायक भूमिका होनी चाहिए।
- चीन चाहता है, संभावित उम्मीदवारों के नाम की चिट एक "जार" में रख दी जाए तथा पर्ची निकाल कर नये दलाई लामा का नाम घोषित हो।
- इसे इतिहास व परम्पराओं का उपहास मानते हैं, दलाई लामा व बौद्ध अनुयायी। इनके अनुसार, दलाई लामा का पुनर्जन्म होता है तथा किस व्यक्ति के रूप में दलाई लामा ने पुनर्जन्म लिया, उसको पहचानने की एक धार्मिक परम्परा व पद्धति है।
- पिछली बार दलाई लामा ने जिस बच्चे का चयन किया था, उसका अपहरण कर लिया था। चीन की सरकार ने, और अभी तक पता नहीं चला वह कहाँ गया।

# '3 से 5 करोड़ के बदले निजी मैडिकल कॉलेज को मान्यता देते हैं, हैल्थ मिनिस्ट्री के अफसर'

## कांग्रेस ने देश भर के 40 निजी मैडिकल कॉलेजों को नैशनल मैडिकल कमीशन (एन.एम.सी.) द्वारा मान्यता देने में करोड़ों रूपए के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते हुए दावा किया

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जुलाई। कांग्रेस ने सोमवार को देशभर के 40 से अधिक निजी मेडिकल कॉलेजों की मान्यता के संबंध में स्वास्थ्य मंत्रालय में बड़े घोटाले का खुलासा किया है, जिसमें नैशनल मैडिकल कमीशन (एनएमसी) द्वारा 3 से 5 करोड़ रुपये तक की रिश्वत, जाली रिकॉर्ड और झूठी निरीक्षण रिपोर्टों के माध्यम से यह मान्यता दी गई थी।

कांग्रेस प्रवक्ता डॉ. मोनिका मेहरोत्रा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा कि इस घोटाले के लिए सरकार जिम्मेदार है। उन्होंने कहा, यह एक स्पष्ट मामला है, जिसमें गंभीर लापरवाही और व्यवस्थित भ्रष्टाचार हुआ है, और यह सवाल उठाया कि क्या कोई ऐसा तंत्र है, जो यह जांच कर सके कि मान्यताएँ किस आधार पर दी गई थीं।

उन्होंने कहा कि जांचकर्ताओं का मानना है कि 3 से 5 करोड़ रुपये तक

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- कांग्रेस प्रवक्ता डॉ. मोनिका मेहरोत्रा ने कहा कि यह संगठित भ्रष्टाचार का मामला है, और पूछा कि क्या यह जानने का कोई मैकनिज़्म है कि एन.एम.सी. द्वारा निजी कॉलेजों को किस आधार पर मान्यता दी जाती है।
- कांग्रेस प्रवक्ता ने आरोप लगाया कि यह सारी कहानी केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय में शुरु हुई है। निजी मैडिकल कॉलेजों की मंजूरी से संबंधित दस्तावेज़ अफसर ही लीक करते थे।
- उन्होंने कहा, इन दस्तावेज़ों में आतंरिक नोटिंग, निरीक्षण के कार्यक्रम, निरीक्षण करने वाले अफसर आदि की जानकारी होती है। यह जानकारी निजी मैडिकल कॉलेजों के एजेन्ट्स को दे दी जाती है। फिर वे निरीक्षण के समय फर्जी फैकल्टी, नकली मरीज़, नकली बायोमैट्रिक की व्यवस्था करते हैं। कई बार तो इस सब में अधिकारी ही उनकी मदद करते हैं।

## एसआई 2021 पेपर लीक की सुनवाई मंगलवार को जारी रहेगी

जयपुर, 7 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट में सोमवार को एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक मामले में सुनवाई हुई। राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता की बहस अधूरी रहने पर अदालत ने मामले की सुनवाई मंगलवार को तय की है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने ये आदेश कैलाश चन्द्र शर्मा व अन्य की याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान, राज्य सरकार की ओर से प्रार्थना पत्र पेश किया गया,

- महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने याचिका को सारहीन बताया।

जिसमें याचिका को सारहीन बताया गया व खारिज करने की गुहार की गई। महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता ने समान मामले में पूर्व में भी याचिका दायर की थी। हालांकि बाद में याचिकाकर्ता की ओर से याचिका वापस लेने के आधार पर अदालत ने उसे खारिज कर दिया था। उन्होंने कहा, याचिकाकर्ता ने यह तथ्य अदालत से छिपाया है। इसके अलावा,

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

# जज के पद पर नियुक्ति के लम्बे इंतज़ार से उकताकर दावेदारी वापस ले रहे हैं कई वरिष्ठ वकील

## वकीलों का आरोप है, सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम की अनुशंसा के बाद भी उनकी नियुक्ति में टालमटोल की जा रही है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 7 जुलाई। वरिष्ठ वकीलों में इन दिनों निराशा बढ़ती जा रही है क्योंकि सरकार, सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम द्वारा अनुशंसा किये जाने के बावजूद, उच्च न्यायालयों में न्यायाधीश के रूप में उनकी नियुक्तियों को रोक रही है। इस समय कम से कम 29 वकील केन्द्र सरकार की कार्रवाई का इंतजार कर रहे हैं, जिनकी नियुक्ति के लिए सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम ने जनवरी 2023 से अप्रैल 2025 के बीच अनुशंसा की थी।

इनमें से दो, मुंबई के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश सुधाकर दातार और दिल्ली की श्वेताश्री मजूमदार, पारदर्शिता की कमी और मनमानी देरी के कारण अपनी उम्मीदवारी वापस ले चुके हैं।

मुंबई में वरिष्ठ सिविल एवं कॉमर्शियल केसों के वकील दातार ने इसलिए अपनी उम्मीदवारी वापस ली, क्योंकि नौ महीने हो गए हैं और उनकी फाइल अभी भी वहीं की वहीं है। कोलीजियम ने सितंबर 2024 में चार नामों की अनुशंसा की थी, जस्टिस अनखड़ और नेलीकर ने 5 जुलाई को शपथ ली। दातार कहते हैं कि वे 55 साल के हो चुके हैं और जानते हैं कि उनका कार्यकाल छोटा होगा, क्योंकि उच्च न्यायालय के न्यायाधीश 62 वर्ष की आयु में सेवानिवृत्त हो जाते हैं। उनका कहना है कि और इंतज़ार करना उनके सम्मान और प्रोफेशनल प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाएगा।

एडवोकेट श्वेताश्री मजूमदार, जो बौद्धिक संपदा अधिकारों के केसों के लिए जानी जाती हैं, ने कुछ दिन पहले अपनी उम्मीदवारी वापस ले ली, जबकि अगस्त 2024 में दिल्ली उच्च न्यायालय में उनकी नियुक्ति के लिए अनुशंसा की गई थी। उनका मेडिकल टैस्ट तेजस क़ारिया के साथ हुआ था, जिनकी नियुक्ति को 12 फरवरी को मंजूरी दे दी गई।

क़ारिया, अजय डिगपॉल तथा हरीश वैद्यनाथन शंकर, जो एक ही बैच का हिस्सा थे, के नाम केन्द्र द्वारा इस साल की शुरुआत में मंजूर किए गए थे।

नियुक्तियों में देरी ने न्यायिक नियुक्तियों की प्रक्रिया की पारदर्शिता को लेकर चिंता बढ़ा दी है, क्योंकि इसमें केन्द्र "पिक एंड चूज़" का तरीका अपना रहा है। वरिष्ठ अधिवक्ता सौरभ किरपाल, जिनकी दिल्ली उच्च न्यायालय में

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- मुम्बई के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेश सुधाकर दातार सहित चार वकीलों को सितम्बर 2024 में हाई कोर्ट में बतौर जज नियुक्त करने की सिफारिश की गई थी। सुधाकर ने कहा, दो जज को शपथ दिलाई गई है। पर, उनकी फाइल जस की तस है। यह इतंज़ार अपमानजनक है, इसलिए मैंने दावेदारी वापस ले ली है।
- दिल्ली के एक वरिष्ठ वकील श्वेताश्री मजूमदार को भी अगस्त 2024 में हाई कोर्ट का जज बनाने की अनुशंसा की गई थी, सुप्रीम कोर्ट कोलीजियम द्वारा। श्वेताश्री का मैडिकल टैस्ट एक अन्य दावेदार तेजस कारिया के साथ हुआ था। कारिया को तो नियुक्ति मिल गई, पर, श्वेताश्री को नहीं, श्वेताश्री ने भी दावेदारी वापस ले ली है।

## शताब्दी वर्ष में एक लाख स्थानों पर हिंदू सम्मेलन करेगा संघ

नयी दिल्ली, 07 जुलाई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) अपने शताब्दी वर्ष में समाज के हर वर्ग से सम्पर्क करने के लिए विशेष अभियान चलाएगा और सामाजिक बुराइयों को दूर करने और धर्म-जागरण के लिए देश में एक लाख से ज्यादा स्थानों पर ' हिंदू सम्मेलन' आयोजित करेगा।

इस अभियान के तहत, संघ के कार्यकर्ता घर-घर जाकर लोगों से सम्पर्क-संवाद करेंगे। आरएसएस के प्रांत प्रचारकों के तीन दिवसीय सम्मेलन

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- आरएसएस के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने कहा कि इनका आयोजन हिंदुओं में धार्मिक पुनर्जागरण के लिए किया जा रहा है।

# 'जेन स्ट्रीट की हेराफेरी पर सेबी ने इतनी देर से मुँह क्यों खोला'

## राहुल गांधी ने अमेरिकन ट्रेडिंग कम्पनी जेन स्ट्रीट को सेबी द्वारा शेयर इन्डैक्स में हजारों करोड़ रूपए की हेराफेरी के आरोप में बैन करने पर यह टिप्पणी की

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 07 जुलाई। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने आज स्टॉक मार्केट रैगुलेटर सेबी पर "चुप रहने" और सरकार पर जेन स्ट्रीट नामक उस ट्रेडिंग फर्म के मामले में आंखें बंद करके बैठने का आरोप लगाया, जो अब इंडेक्स में हेरफेर करने की दोषी ठहराई गई है।

मार्केट रैगुलेटर ने न्यूयॉर्क आधारित हैज फंड, जेन स्ट्रीट (जे.एस.) को कैश, फ्यूचर्स ऑप्शंस (एफ. एण्ड ओ.) मार्केट में एक साथ दांव लगाकर मुनाफा कमाने के लिए इंडेक्स में हेरफेर करने का दोषी पाया है। सेबी ने इस हैज फंड की बाज़ार तक पहुंच को प्रतिबंधित कर दिया है और इसके मुनाफे में से 4,843 करोड़ रुपये से अधिक की राशि को जब्त कर लिया है।

जांच में यह पाया गया कि जे.एस. ने जनवरी 2023 से मई 2025 तक की जांच अवधि में शुद्ध रूप से 36,671 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया।

राहुल गांधी ने अपने एक्स हैण्डल पर हिन्दी में लिखा, "मैंने 2024 में स्पष्ट रूप से कहा था कि फ्यूचर्स एण्ड ऑप्शन्स (एफ.एण्ड ओ.) मार्केट अब बड़े खिलाड़ियों के लिए एक खेल का मैदान बन गया है, और छोटे निवेशकों की जेब लगातार खाली हो रही है।"

अब सेबी खुद यह स्वीकार कर रहा है कि जेन स्ट्रीट ने हजारों करोड़ का हेरफेर किया। सेबी इतनी देर तक चुप क्यों रहा? किसके आदेश पर सरकार अपनी आंखें बंद किए बैठी रही? और कितने और बड़े शार्क अब भी खुदरा निवेशकों को नुकसान पहुंचा रहे हैं?

राहुल ने आगे कहा, "हर मामले में यह स्पष्ट है, सरकार अमीरों को और अमीर बना रही है और सामान्य निवेशकों को बर्बादी के कगार पर धकेल रही है।"

विपक्ष ने सेबी की पूर्व चेयरपर्सन माधबी पुरी बुच पर भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर लगातार हमला किया है।

राहुल ने यह भी याद दिलाया कि कैसे पिछले साल सितंबर में उन्होंने यह पोस्ट किया था, "अनियंत्रित एफ. एण्ड ओ. ट्रेडिंग 5 सालों में पैंतालीस गुना बढ़ी है। 3 सालों में 90 प्रतिशत छोटे निवेशकों ने 1.8 लाख करोड़ खो दिए हैं। सेबी को उन तथाकथित बड़े खिलाड़ियों के नाम उजागर करने चाहिए, जो उनके खर्चे पर मालामाल हो रहे हैं।"

जेन स्ट्रीट की स्थापना सन् 2000 में हुई थी और इसका पिछले साल का वार्षिक राजस्व 20.5 बिलियन था।

जेन स्ट्रीट अपनी वेबसाइट पर खुद को एक ऐसी फर्म के रूप में प्रस्तुत करती है, जो दामों को स्थिर और भरोसेमंद बनाए रखने के लिए आंकड़ों का गहराई से विश्लेषण करती है और बाज़ार की चाल को अच्छी तरह समझती है।

जेन स्ट्रीट भारत में चार समूह संस्थाओं के माध्यम से काम करती है, जिनमें से दो संस्थाएं भारत में स्थित हैं, जबकि अन्य दो हांगकांग और सिंगापुर में हैं।

फर्म ने दिसंबर 2020 में अपनी पहली भारत इकाई शुरू की थी। अन्य दो एशियाई संस्थाएं भारत में पंजीकृत विदेशी निवेशक के

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- सेबी ने इस अमेरिकन ट्रेडिंग कम्पनी पर शेयर इंडैक्स में हेराफेरी करके 36,677 करोड़ रूपए का फायदा कमाने के आरोप की जाँच की और कम्पनी को दोषी पाते हुए उस पर प्रतिबंध लगाया है।
- राहुल गांधी ने इस प्रकरण को उठाते हुए सरकार पर अब तक आँखे मूँदे रखने का आरोप लगाया और एक्स पर लिखा कि, उन्होंने गत वर्ष भी कहा था कि फ्यूचर एण्ड ऑप्शन्स (एफ. एण्ड ओ.) बाज़ार बड़े खिलाड़ियों का खेल बन गया है, छोटे निवेशकों की जेब लगातार कट रही है।
- ज्ञातव्य है कि विपक्ष ने बार-बार सेबी की पूर्व अध्यक्ष माधबी पुरी बुच पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए हैं।
- जेन स्ट्रीट की स्थापना सन् 2000 में हुई थी। कम्पनी 2020 में भारत आई थी और इसकी चार शाखाएँ भारत में एक्टिव हैं, इनमें से दो भारत में हैं तथा एक-एक हाँगकाँग व सिंगापुर में काम करती हैं।

## थप्पड़ कांड में निचली अदालत की कार्यवाही पर अंतरिम रोक

जयपुर, 7 जुलाई। राजस्थान हाईकोर्ट ने देवली-उनियारा विधानसभा सीट पर उपचुनाव के मतदान के दौरान बूथ पर एसडीएम को थप्पड मारने के मामले में टोंक की एससी, एसटी कोर्ट में चल रही कार्रवाई पर अंतरिम रोक लगा दी है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में राज्य सरकार से जवाब तलब किया है। जस्टिस उमाशंकर व्यास की एकलपीठ ने यह आदेश नरेश मीणा की रिवीज़न याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

( शेष अंतिम पृष्ठ पर )

- मतदान के दौरान बूथ पर एसडीएम को थप्पड़ मारने के आरोपी नरेश मीणा की रिविज़न याचिका पर हाईकोर्ट ने यह आदेश दिया।

## विचार बिन्दु

**अगर इंसान सुख-दुःख की चिंताओं से ऊपर उठ जाये तो आसमान की ऊँचाई भी उसके पैरों तले आ जाये। –शेख सादी**

# इंसान क्यों बना हैवान?

'एक तरफा प्यार में छात्र द्वारा शिक्षिका की तलवार से हत्या''- बांसवाड़ा

''लाल बना काल, बेटे ने मां की चाकू से हत्या की, फिर ट्रेन से कटकर जान दी''- जयपुर

''पति-पत्नी अपने दो बच्चों के साथ टैंक में कूदे, चारों की मौत''- बाड़मेर

''शादी नहीं करने से नाराज युवती ने खुदकुशी की''- जयपुर

''सूदखोरी की आग में व्यापारी की मौत'' बयान के आधार पर मामला दर्ज, जांच शुरू

''खुद को आग लगाकर ट्रांसपोर्ट नगर थाने में घुसा प्रॉपर्टी डीलर, मोटा ब्याज वसूलने और प्रताड़ना का मामला साझेदार के खिलाफ दर्ज''

''यूपी में मुस्लिम युवती ने हिंदू बनकर शिक्षक से शादी की, सुहागरात पर मौत के घाट उतारा''-कुशीनगर

''ढाबा संचालक पर डंडे व सरियों से हमला, मोबाइल और 8000 रुपए लूटे, बेहोश होने तक पीटते रहे-जयपुर

''स्कॉर्पियो से बदमाशों ने बाइक सवार ज्वेलर को टक्कर मारी - 10 किलो चांदी 1 तोला सोना और नकदी लूटी''- जयपुर

''लखनऊ में दामाद ने सास-ससुर को उतारा मौत के घाट''

''दिल्ली में घरेलू नौकर ने मालकिन की डांट के बाद मालकिन और उसके बेटे की हत्या की''

''साठ वर्षीय फूफा के प्यार में शादी के बाद पति की हत्या करवाई''

उपरोक्त समाचार पत्रों की हेडलाइंस केवल एक या दो दिन की ही है। ऐसे ही समाचार हमें प्रतिदिन नियमित रूप से पढ़ने को मिलते रहते हैं और यह हाल केवल जयपुर या राजस्थान का ही नहीं है अपितु पूरे देश का है।

क्या यही वह संस्कृति है जिसका गुणगान करते हम नहीं थकते? क्या यही वह सभ्यता और समाज है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और जिसके आधार पर विश्वगुरु कहलाना चाहते हैं?

भारत सदैव सामाजिक सौहार्द्र, पारिवारिक संबंधों की मधुरता, मालिक - नौकर के बीच घरेलू संबंधों के लिए जाना जाता रहा है। सहिष्णुता, सहयोग, समन्वय, सदाशयता एवं संवेदनशीलता हमारी संस्कृति के विशिष्ट गुण रहे हैं।

अब ऐसा क्या हो गया कि प्रत्येक मानवीय संबंध चाहे वह पति-पत्नी का हो, पिता-पुत्र का हो, मां-बेटे का हो, मालिक-नौकर का हो ग्राहक-दुकानदार का हो, दोस्तों का हो, केवल और केवल हवस का शिकार हो गया है। यह हवस पैसे की हो सकती है, शारीरिक हो सकती है या फिर अहम की तुष्टि की भी हो सकती है।

हम उपरोक्त लिखित घटनाओं का आकलन करेंगे तो पाएंगे कि इन सब के मूल में मनुष्य की बढ़ती घृणा, यौन हिंसा, ईर्ष्या और अति भौतिकतावादी प्रवृत्ति है। हमारे समाज में इस प्रकार का पतन किस प्रकार हुआ और क्यों हम इस स्थिति में पहुंच गए कि प्रतिदिन हमें रिश्तो को तार-तार होते देखना पड़े या थोड़ी सी भौतिक सुख सुविधाओं के लिए किसी मासूम की हत्या करने के समाचार पढ़ने को मिलें?

एक मालकिन ने अपने घरेलू नौकर को थोड़ा सा डांट दिया तो उसने गुस्से में उत्तेजित होकर अपनी मालकिन और उसके 14 साल के मासूम बेटे की हत्या कर दी। उसके मन में एक क्षण के लिए भी यह विचार नहीं आया कि इन्हीं लोगों ने उसे काम दिया है। यह अविश्वसनीय लगता है किंतु हमारे देश में यह वास्तविकता बन चुका है ।

कोई दामाद अपने सास-ससुर की हत्या कर दे तो इसे क्या कहा जाएगा? जिस व्यक्ति के साथ सात फेरे लेकर जनम-जनम का साथ निभाने का वादा किया हो, उसी की हत्या जब कोई अपने प्रेमी के साथ मिलकर करवा दे तो इसे नैतिक पतन की पराकाष्ठा ही कहा जाएगा।

रिश्ते-नाते तो जैसे भूतकाल की बातें हो गई हैं। आजकल की घटनाएं देखकर 'उपकार' फिल्म के प्रसिद्ध गाने की ये पंक्तियां बरबस याद आ जाती हैं :–

''कसमें-वादे प्यार वफ़ा, सब बातें हैं बातों का क्या,
कोई किसी का नहीं, झूठे नाते हैं, नातों का क्या?''

आइए, हम इस प्रकार की स्थिति के लिए जिम्मेदार कारणों का विश्लेषण करने का प्रयास करें।

सबसे प्रथम कारण तो यह है कि संयुक्त परिवार की प्रथा लगभग समाप्त हो गई है। पहले दो-तीन पीढ़ियां एक साथ रहती थीं जिससे परिवार में ही साथ में रहने के लिए अत्यावश्यक गुण बचपन से ही विकसित हो जाते थे। जब सब मिल-बैठ कर भोजन करते थे तो सबके साथ बात करने का बहुत अवसर मिला करता था ।

बच्चों को सोने से पहले दादा-दादी या माता-पिता उनको पुरानी अच्छी कहानियां सुनाकर सुलाते थे। एक पर कोई कष्ट आता तो दूसरे सहायता करने को तत्पर रहते थे। बीमार होने पर पड़ोस के लोग भी परिजनों की ही तरह सेवा में लग जाते थे।

व्यवसाय या नौकरी के लिए बाहर जाने के कारण अधिकांश परिवार, एकल परिवार हो गए हैं। परिवार में केवल पति-पत्नी और उनके एक या दो बच्चे होते हैं। चाचा-चाची, मामा-मामी, मौसा-मौसी, बुआ-फूफा जैसे रिश्ते आजकल केवल नाम मात्र के रह गए हैं। लड़कियों की बहुत पढ़ाई होने लगी है। इस कारण आर्थिक रूप से वे आत्मनिर्भर हो गई हैं और वे भी पति के जितना ही कमाने लगी हैं। आर्थिक रूप से उनका आत्मनिर्भर होना अनुचित नहीं है, किंतु इसके कारण छोटा-मोटा विवाद भी तलाक तक पहुंच जाता है। किसी भी प्रकार की उत्तेजनात्मक स्थिति में उनके लिए अपने पति से अलग होने का निर्णय लेते समय उनके मन में कतई ख्याल नहीं आता है कि जिस परिवार को वे छोड़कर अचानक जा रही हैं, वह उनका दूसरा घर था।

**क्या यही वह संस्कृति है जिसका गुणगान करते हम नहीं थकते? क्या यही वह सभ्यता और समाज है जिस पर हम गर्व कर सकते हैं और जिसके आधार पर विश्वगुरु कहलाना चाहते हैं? भारत सदैव सामाजिक सौहार्द्र, पारिवारिक संबंधों की मधुरता, मालिक - नौकर के बीच घरेलू संबंधों के लिए जाना जाता रहा है। सहिष्णुता, सहयोग, समन्वय, सदाशयता एवं संवेदनशीलता हमारी संस्कृति के विशिष्ट गुण रहे हैं।**

तकनीकी विकास ने भी अतिरिक्त समस्या उत्पन्न कर दी है। पहले टीवी आया और परिवार के सभी सदस्य एक साथ बैठकर टीवी देखते थे, किंतु इसके कारण आपस में बात करके दुख दर्द बांटने का अवसर कम होता गया। जब से मोबाइल आ गया है, स्थितियां एकदम बदल गई हैं। युवा पूरा समय अकेले मोबाइल पर बिताते हैं। ऐसे दृश्य बिल्कुल आम हैं कि 10 व्यक्ति बैठे हैं और सभी आपस में बात नहीं कर रहे हैं। सब अपने अपने मोबाइल में ही व्यस्त हैं। व्यक्ति का अकेलापन मानसिक अवसाद की स्थिति पैदा करता है। जब उसे लगता है कि उसे किसी से कोई लेना-देना ही नहीं है तो फिर दूसरे भी उसकी परवाह करना छोड़ देते हैं। शायद यही कारण है की विदेशों की तरह यहां भी संतानें, माता-पिता को वृद्धाश्रम में भेजने लगी हैं। जिन मां-बाप ने अनेक कष्ट उठाकर अपने बच्चों को बड़ा किया और अपनी रातें उनकी सुख-सुविधाओं का ध्यान रखने में बिता दीं, आज वही बच्चे थोड़े से भौतिक स्वार्थ और सुविधा के लिए उन्हें ओल्ड एज होम में भेजने से भी नहीं हिचकते ।

आज किसी व्यक्ति के लिए पूरी दुनिया 'मैं' में सिमट कर रह गई है। इसमें दूसरे किसी का प्रवेश होना ही संभव नहीं है। यहां तक कि पति-पत्नी में भी यही बात लागू होती है। हाल ही में सोनम नाम की एक लड़की ने मध्य प्रदेश में राजा से शादी की और शादी के साथ ही उसने अपने पति की हत्या करने की साजिश रचना प्रारंभ कर दिया था। एक युवती ने अपने फूफा से सम्बन्ध के कारण शादी होते ही अपने पति को मरवा दिया।

पहले जहां बच्चे अच्छी नैतिक मूल्यों वाली कहानियां सुनकर बड़े होते थे, आजकल बचपन से ही हिंसा, अश्लीलता, घृणा और नफरत के वीडियो, फिल्में मोबाइल पर देखकर बड़े हो रहे हैं। आजकल तो बच्चा पैदा होते ही जब रोने लगता है तो मां-बाप उसे मोबाइल के माध्यम से चुप कराना ज्यादा सही समझने लगे हैं। मोबाइल की लत धीरे-धीरे उनके लिए कई प्रकार की मानसिक और शारीरिक बीमारियों का कारण बन जाती है। अधिकांश शारीरिक रोग जैसे स्पॉन्डिलाइटिस हो, कमर में दर्द हो, आंखों का खराब होना होना हो या मानसिक प्रदूषण की बात हो, सभी की जड़ में मोबाइल का दुष्प्रभाव ही है। मोबाइल के हानिकारक प्रभाव को देखते हुए ही जापान में 10 वर्ष की आयु तक बच्चों को मोबाइल से दूर रखा जाता है। ऑस्ट्रेलिया में भी 16 साल से कम आयु के बच्चे सोशल मीडिया अकाउंट नहीं खोल सकते हैं।

भारत में स्थिति इस के ठीक विपरीत है। जब कभी किसी जगह इंटरनेट बंद हो जाए या मोबाइल खो जाए तो जिस प्रकार की व्यग्रता मोबाइल धारकों में देखी जाती है उसको देखकर ऐसे लगता है कि शायद मोबाइल सदैव से, जीवन का अनिवार्य भाग रहा है। वास्तविकता यह है कि आज से 25-30 वर्ष पूर्व मोबाइल नहीं था, तो शायद जीवन कहीं अधिक सुविधाजनक और आनंददायक था।

मोबाइल के कारण जिस प्रकार की हिंसा और यौन हिंसा वाली फिल्में कच्ची उम्र में बच्चों को देखने को मिल रही हैं उसी के कारण उन घटनाओं को हम देखते हैं जिनका उल्लेख इस आलेख के प्रारंभ में किया गया है ।

आज एक-दूसरे की लाश पर पांव रखकर आगे बढ़ने की जो गला काट प्रतिस्पर्धा होती जा रही है वह भी इस प्रकार की हिंसक घटनाओं को बढ़ावा दे रही है ।

पति-पत्नी में आ रही रिश्तो में बढ़ती कड़वाहट और बिखरते रिश्तों को देखते हुए ही, आजकल अनेक युवा विवाह के बंधन में बंधने तक से बचने लगे हैं। कई लोग विवाह करने के बाद भी बच्चे पैदा करना एक मुसीबत का कारण मानते हैं। इस प्रकार की मनोवृति यदि थोड़े समय और चलती रही तो किस प्रकार यह सृष्टि बचेगी और किस प्रकार पारिवारिक संबंध बचेंगे, इस पर भी प्रश्न चिन्ह लगता है। तब, मनुष्य और जानवर में जो अंतर है वह भी समाप्त हो जाएगा।

इंसान है तो इंसानियत उसमें होनी चाहिए। जब कोई छात्र अपनी शिक्षिका का तलवार से गला काट ले या कोई कोई घनिष्ठ मित्र थोड़े से पैसे के लालच में अपने निकट दोस्त की हत्या कर दे, तो इसे हैवानियत ही कहा जाएगा। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मनुष्य इंसान तो नहीं बन पाया, शैतान और हैवान अवश्य बन गया।

यहां यह नहीं कहा जा रहा है कि मोबाइल की कोई उपयोगिता नहीं है, किंतु इस इसे काम में लेने के लिए जिस प्रकार के विवेक, समझ और बुद्धिमानी की आवश्यकता है वह विकसित करने की जिम्मेदारी माता-पिता के साथ ही समाज के प्रबुद्ध लोगों और शिक्षकों की भी है। यह तब ही संभव है जब वे स्वयं भी इन पर अत्यधिक निर्भरता को कम करें और इसके उपयोगी पक्ष को ही सामने रखते हुए विवेकपूर्ण कार्य करे।

मोबाइल के माध्यम से आज कच्ची बस्ती में रहने वाला व्यक्ति भी यह जानता है कि लंदन, वाशिंगटन या मुंबई में किस प्रकार का जीवन धनी लोग व्यतीत कर रहे हैं और फिर वह भी उसी प्रकार का जीवन जीने की लालसा पाल लेता है। अपनी क्षमता के आधार पर उतना पैसा नहीं कमा पाने की स्थिति में वह किसी भी असामाजिक या आपराधिक कार्य में लिप्त होने से नहीं हिचकता।

हम मनुष्य को इंसान बनाने की बात करते हैं और इसके लिए विभिन्न प्रकार के प्रयास भी करते हैं, किंतु मनुष्य इंसान बनना तो दूर, वह तो समय के साथ-साथ हैवान बनता जा रहा है।

देश के कर्णधारों, शिक्षाविदों, चिंतकों और जनप्रतिनिधियों को गंभीरतापूर्वक समाज में तेजी से बढ़ रही हिंसक मनोवृति पर लगाम लगाने के उपाय करने होंगे। क्या इसके लिए कुछ पुराने समय की अच्छी बातों को पुनर्स्थापित नहीं किया जा सकता? आशा करनी चाहिए कि समय रहते किए गए प्रयासों से नई पीढ़ी एक-दूसरे के प्रति आदर, सद्भाव, प्रेम, स्नेह और मिठास के आधार पर रिश्ते बनाएगी ताकि हम अपनी विरासत पर गर्व कर सकें। यदि हमने समय रहते इस पर कोई कार्य नहीं किया तो फिर आने वाली पीढ़ी हमें कतई माफ नहीं करेगी। समाज एक बार पतन के गर्त में चला जाएगा तो फिर वहां से ऊबर पाना ही असंभव हो जाएगा।

**–अतिथि सम्पादक,**
**राजेन्द्र भाणावत**
**( पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी )**

# इतिहास के झरोखे से मध्य पूर्व एशियाई देशों की राजनीति और इजरायल



महावीर सिंह

**29 जून को प्रकाशित लेख से आगे--**

राष्ट्रदूत के 29 जून 2025 के अंक में हमने जाना कि वर्तमान इजरायली राज्य का गठन, 1916-17 से कैसे कैसे विभिन्न समझौतों, घोषणाओं, प्रस्तावों के जरिए हुआ।

इस अंक में हम वर्तमान इजरायल- फिलिस्तीनी भूभाग की भौगोलिक स्थिति और इतिहास में इस भूभाग में घटी प्रमुख घटनाओं की जानकारी के साथ साथ यहूदी, ईसाई, इस्लाम धर्मों के माईथोलजी और ऐतिहासिक दृष्टि से आपसी संबंधों और संघर्षों को समझने का प्रयास करेंगे।

भौगोलिक स्थिति :- इजरायल का भू भाग जिसे इतिहासकार विभिन्न नामों यथा फिलिस्तीन, यहूदा राज्य, कनान, लेवांट आदि लिखते आए है, वह भूमध्य सागर से लगता है जिसके दक्षिण पश्चिम में मिश्र की सीमा लगती है। लेबनान और जॉर्डन की सीमा भी इजरायल से लगती है। इसके आस पास के दूसरे देश पूर्व में जॉर्डन, उतर में सीरिया व फिलिस्तीन, तुर्क स्थित है। जॉर्डन नदी इजरायल जॉर्डन की सीमा तय करती है और इसके पश्चिम का भाग, वर्तमान में विवादित वेस्टबैंक व गाजा पट्टी का है।

तेल अवीव, बेरुत, रामल्ला, जूडिया, बेथलेहेम,. गैलीली, जाफ़ा, हाइफा, हिब्रोन, एलाट, अकाबा आदि इस क्षेत्र के प्रमुख शहर है। अकाबा की खड़ी से लालसागर, अरब सागर का समुद्री मार्ग खुलता हैं। इनमें से अधिकांश शहर भूमध्य सागर के तट पर हैं। व्यापार-वाणिज्य-नोपरिवहन- कृषि की दृष्टि से यह क्षेत्र सदैव से महत्वपूर्ण रहा है

तुर्क के क्षेत्र से बहकर आने वाली तथा कई ऐतिहासिक सभ्यताओं की जननी नदिया दजला (टिगरिस) व फरात (युफ्रेटिस) आदि इस क्षेत्र में तुर्क, सीरिया, इराक आदि देशों में बहकर अरब सागर में मिलती हैं। इन नदियों के बीच का भूभाग मेसोपोटामिया के नाम से जाना जाता था। इसी क्षेत्र में सूमेरीयन, अक्काडियन, बेबिलोनियन, असीरियाई सभ्यताएं पनपी जो विश्व की ज्ञात सर्वाधिक पुरानी सभ्यताओं में से हैं।

इतिहास के झरोखे से फिलिस्तीन क्षेत्र की राज व्यवस्था :-फिलिस्तीन लेवेंट के नाम से जाने जाने वाले बड़े क्षेत्र का हिस्सा है जो इतिहास में विभिन्न सभ्यताओं का चौराहा रहा है। 1948 से पहले, फिलिस्तीन अरबों, यहूदियों और ईसाइयों की एक विविध आबादी का घर था, क्योंकि सभी समूहों का इस क्षेत्र, विशेष रूप से यरुशलम शहर से धार्मिक संबंध था। फिलिस्तीन क्षेत्र पर समय समय पर अक्कादियन, बेबिलोनिया, असीरियन, रोमन-बाईजेंटियन, यूनानी, फारसी (परसियन- ईरानी), मिश्र, सेलजुक तर्क, अरब शासकों ने राज किया या प्रभावित किया। यूनानी लेखकों के लेखन को सही मानते हुए कुछ इतिहासकारों के अनुसार 12 सदी ईशा पूर्व से सातवीं ईसापूर्व सदी तक यहां एक फलती-फूलती सभ्यता थी। कुछ का मानना है कि 5 वी (बीसी) से पहले के विश्वसनीय प्रमाण नहीं हैं किंतु इसके बाद इस क्षेत्र के बारे में ठीक लेखकों का लिखा काफी कुछ मिलता है।

सुमेरियन सभ्यता, मानव इतिहास की कृषि आधारित, बहुदेव वादी, शुरुआती शहरी सभ्यताओं में से एक थी, जो 4500 ईसा पूर्व के आसपास दक्षिणी मेसोपोटामिया में उभरी थी। इसने इस क्षेत्र को बड़े पैमाने पर प्रभावित किया। बहुदेव वादी अक्काडियन सभ्यता, प्राचीन मेसोपोटामिया की एक दूसरी सभ्यता थी जो लगभग 2334 ईसा पूर्व से 2154 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में थी। यह अक्कड़ शहर और उसके आसपास के क्षेत्र में केंद्रित थी, और इसमें अक्काडियन और सुमेरियन भाषी लोग शामिल थे। अक्काडियन साम्राज्य को इतिहास का पहला साम्राज्य माना जाता है, जिसने मेसोपोटामिया, लेवांट क्षेत्रों और अनातोलिया में महत्वपूर्ण प्रभाव डाला। इस सभ्यता का प्रसिद्ध राजा सारगौन दी ग्रेट था जिसने 24वी से 22वी शताब्दी ईसापूर्व में कई विजय प्राप्त की। गुटियन लोगों के आक्रमणों से यह सभ्यता 2154 ईशा पूर्व में समाप्त हो गई।

असीरियन सभ्यता भी इसी क्षेत्र में पनपी। यह तीन काल खंडों :- 2000 से 1600 बीसी, 1365 से 1056 बीसी, 911 से 612 ईसापूर्व में बनती बिगड़ती रही। यह सभ्यता भी बहुदेव वादी थी। राजनीति व धर्म का गठजोड़ था। इस सभ्यता बड़े टावर नुमा जिग्गुराट मंदिर के लिए भी जानी जाती है।इस सभ्यता का विस्तार मिश्र तक था। निन्वेह इसकी राजधानी थी जिसे 612 बीसी में बेबीलोन और मीडियनों ने नष्ट कर दिया। इस प्रकार इस सभ्यता का अंत हो गया। वर्तमान इराक व पुराना अशुर शहर इसका प्रमुख क्षेत्र था।

लगभग 720 ईसा पूर्व में, असीरियाई राजा तिग्लथ-पाइलसर ने उत्तरी इज़राइल के राज्य पर विजय प्राप्त की। दस इजरायली/यहूदी जनजातियों को असीरिया में निर्वासित कर दिया, जिन्हें यहूदी धर्म में 'खोई हुई जनजातियां' माना जाता है। इसके पश्चात नव बेबिलोनिया साम्राज्य के राजा नबूकदनेसर द्वितीय द्वारा 586 बीसी में इजरायल क्षेत्र में हमला कर,प्रथम बार यहूदियों के पवित्र पर्वत मंदिर को नष्ट किया।

63 बीसी में, जब इजरायल में यहूदी सभ्यता 1,000 साल से ज़्यादा पुरानी हो चुकी थी, रोम ने,जनरल पोम्पी के नेतृत्व में यहूदी राष्ट्र पर कब्ज़ा कर लिया। इस समय, रोमनस ने इस क्षेत्र की आबादी के एक हिस्से को निर्वासित कर दिया।रोमन शासन 636 ईस्वी तक रहा। यहूदियों के प्रति रोमनस का शुरुआती व्यवहार कठोर था। इसके कारण क्षेत्र में रोम के गवर्नरों के विरुद्ध विद्रोह भी हुए। कोखबा विद्रोह के बाद, इजरायल से, यहूदियों का निष्कासन भी हुआ। रोम में अपना वर्चस्व स्थापित करने के लिए 63 बीसी के आसपास ही येरुशलम के पवित्र मंदिर को जलाया।यह दूसरी बार हुआ। रोमन लोग इस क्षेत्र को जूडिया या सीरिया या प्लास्टिन के नाम से जानते थे।

636 ईस्वी तक रोमन साम्राज्य का हिस्सा रहने के बाद अरबों, तर्क ने इस पर अधिकार किया। ईरानी साम्राज्य (पार्थियन और सासानी) ने 2 शताब्दी ईसा पूर्व से 7 वीं शताब्दी ईस्वी (614-628)तक फिलिस्तीन के कुछ भागों पर शासन किया।वर्ष 614 में ईरानी पार्थियन शासकों में पूर्वी रोमन साम्राज्य (बाईजेंटीन) ने येरुशलम छीन लिया।1099 में प्रथम धर्म युद्ध के समय यरुशलम पर ईसाईयों में कब्जा कर लिया।

यहूदी धार्मिक पुस्तक तनख/तोरा व ओल्ड टेस्टामेंट में यहूदियों के मिश्र में बसने या जबरन ले जाए जाने और वहां से भागने का उल्लेख आता है। इस घटना के समय, कुछ इतिहासकार इजरायल को मिश्र का उपराज्य मानते है। इसका एक उल्लेख मेंरनेपटा स्टैल में लगभग 1207 ईशा पूर्व का मिलता है। यहूदी धार्मिक पुस्तकों में भी 13वी बीसी के आसपास की घटना में मूसा के नेतृत्व में यहूदियों का मिश्र की कैद अर्थात जबरिया दासत्व से भागने का उल्लेख है। इतिहासकारों में मतभेद है कि यह जबरन दासत्व/कैद थी या कनान क्षेत्र के यहूदियों का मिश्र में रोजगार के लिए स्वेच्छा से जाना था। मूसा की नेतृत्व में मिश्र से पलायन की घटना को यहूदी लोग हर साल फराह के त्यौहार के रूप में मनाते है।

तुर्क ओटोमन साम्राज्य ने 1517 से 1917 तक इस क्षेत्र के अधिकांश भाग पर शासन किया, लेकिन प्रथम विश्व युद्ध के बाद ब्रिटेन ने फिलिस्तीन और पूर्व साम्राज्य के अन्य क्षेत्रों पर नियंत्रण कर लिया। इस समय, लीग ऑफ नेशंस ने फिलिस्तीन के लिए एक ब्रिटिश शासनादेश जारी किया, जिसने ब्रिटेन को इस क्षेत्र पर प्रशासनिक नियंत्रण (मैंडेट) दिया।

लीग आफ नेशन्स के द्वारा ब्रिटेन को कब्जा देने के बाद से ही दूसरे देशों में बसे लोग प्रताड़नाओं के कारण इस क्षेत्र में आकर बसने लगे।यहां जमीन की करली।घर बनाकर खेती करने लगे। जगह-जगह छोटी-छोटी यहूदी बस्तियां, शहर बसने लगे और अंततः फिलिस्तीन पर यहूदियों का कब्जा स्थायी कब्जे में बदल गया है।

फिलिस्तीनी क्षेत्र में नई बस्तियां बसाना और मूल फिलिस्तीनियों को शरणार्थी बना देने की चल/नीति अब भी जारी है।

फिलिस्तीन में यहूदी, ईसाई, इस्लाम, तीनों के धार्मिक स्थल है :- यरुशलम में यहूदियों का माउंट मंदिर है जिसे जन मान्यताओं के अनुसार 1000 ईसापूर्व यहूदियों के राजा सोलोमन में बनाया। यहूदियों का यह सबसे बड़ा धार्मिक आस्था का स्थान है। इस मंदिर को प्रथम बार बेबीलोन के राजा नाबुकदनेसर सेकेंड में द्वारा आक्रमण कर 586 ईस्वी में नष्ट कर दिया। मंदिर का पुनर्निर्माण किया गया,जो सेकेंड टेंपल कहलाता है जिसे रोमनस द्वारा 63 बीसी के आसपास दृष्टि बार तोड़ा, जलाया।

इसी क्षेत्र में सिनाय पर्वत है जहां मान्यता के अनुसार यहूदी ईश्वर यहोवा में पैगम्बर मूसा को 10 आगाएं सुनाई जो यहूदी धर्म का आधार है। अन्य यहूदी धार्मिक स्थल तिबेरियस, रामल्ला, हेब्रोन शहरों में है। इसी स्थान, माउंट टेंपल पर अल-अकसा मस्जिद है जो मुस्लिम धर्म में मक्का, मदीना के बाद तीसरा सबसे पवित्र स्थान माना जाता है। माना जाता है, इसका निर्माण मुहम्मद साहब के मित्र खलीफा इल - अब्र खट्टाब में करवाया।मान्यता है कि इसी स्थान पर डोम आफ अर्क से पैगम्बर मुहम्मद साहब ने जन्नत की यात्रा की थी। ईसाईयों के भी यहां कई धार्मिक--पवित्र स्थान है।

बेथलहम का चर्च ऑफ नेटवीटी (ईशा जन्मस्थान), अल-अक्सा मस्जिद(जहां ईशा को फांसी पर लटकाया),गाजा का सेंट जार्ज मठ, रामल्ला का सेंट एंड्रयू चर्च आदि। तनख व ओल्ड टेस्टामेंट (बाइबल का एक भाग) में समय भिन्नता के साथ भौगोलिक वर्णन और कहानी में कई समानताएं है, व्याख्याओं में अंतर है। तीनों धर्म आदि पुरुष अब्राहम को मानते है। पैगम्बर प्रथा मानते है। मोटे तौर पर एकेश्वर वादी है। ईसाई धर्म में ईश्वर के साथ साथ उसके पुत्र और आत्मा की अवधारणा भी है। महान संतों की मूर्तियां भी है। इस्लाम और यहूदीधर्म में इसकी पूर्ण वर्जना है।

**–महावीर सिंह, पूर्व आईएएस**

# अंत्योदय शिविर : श्रीगंगानगर के चरणजीत को 48 वर्ष बाद आवासीय पट्टा मिला

**अपने** ही घर का पट्टा नहीं होने से चरणजीत सिंह दोहरी जिन्दगी जी रहा था। उसके पास अपना मकान तो था लेकिन पट्टा न होने के कारण उसका मालिकाना हक नहीं था, अतिक्रमण के नाम पर कभी भी उसे तोड़ा जा सकता था, उसे यह भी डर था कि कोई भूमाफिया इसे अपना ही आवास सिद्ध न कर दें या कोई अतिक्रमण हो जाये।

- **48 सालों में चरणजीत सिंह ने कई कार्यालयों के चक्कर लगाए, लेकिन कभी नियमों के कारण और कभी दस्तावेजों की कमी बताकर उसे पट्टा नहीं दिया गया**
- **चरणजीत सिंह ने बताया कि पट्टा नहीं मिलने के कारण अनेक योजनाओं के लाभ से वंचित रहा**

इस चिन्ता से मुक्त होने में उसे पूरे 48 साल लग गये। इन 48 सालों में उसने कई कार्यालयों के चक्कर लगाए लेकिन कभी नियमों के कारण और कभी दस्तावेजों की कमी बताकर उसे पट्टा नहीं दिया गया।



**अंत्योदय शिविर में शिविर प्रभारी ने आवश्यक रिपोर्ट व अन्य कार्यवाही करते हुए चरणजीत सिंह को आवासीय पट्टा सौंपा।**

श्रीगंगानगर जिले की रायसिंहनगर पंचायत समिति की ग्राम पंचायत 71 आरबी में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के शिविर में चरणजीत सिंह पुत्र भूपेन्द्र सिंह निवासी 13 आरबी ने आवासीय पट्टे के लिये प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया। शिविर प्रभारी ने आवश्यक रिपोर्ट व अन्य कार्यवाही करते हुए चरणजीत सिंह को आवासीय पट्टा सौंपा।

चरणजीत सिंह ने बताया कि गत 48 वर्षों से पट्टा नहीं मिलने के कारण अनेक योजनाओं के लाभ से वंचित रहा। अब उसे अपना मालिकाना हक मिला है, शांति के साथ जी सकता हूं कि बुढ़ापा चिन्तामुक्त निकलेगा, शांति के साथ मर सकता हूँ कि मेरे बच्चे आशियाने के लिए भटकेंगे नहीं। आवासीय पट्टा मिलने से लोन लेकर इसका विस्तार या मरम्मत भी करवा सकता हूँ।

चरणजीत सिंह ने भजनलाल सरकार का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मेरे जैसे कई लोगों के बरसों से लम्बित काम शिविर में हुए हैं। पूरे राजस्थान में पता नहीं कितने हजारों, लाखों लोगों के जरूरी काम हुए होंगे।

**अनिल कुमार शाक्य,**
**जनसम्पर्क अधिकारी,**
**श्रीगंगानगर**

## अंत्योदय शिविर में लोगों की परिवेदनाओं का समाधान

**रतनगढ़/राजलदेसर,** (निसं)। रतनगढ़ तहसील के ग्राम पंचायत सिमसिया में सोमवार को पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के तहत शिविर का आयोजन किया गया। सरपंच परमेश्वर लाल मेघवाल की अध्यक्षता में लगे शिविर में तहसीलदार जितेंद्र सिंह, नायब तहसीलदार पूजा पारीक, एडीओ लक्ष्मीनारायण सैनी, ग्राम विकास अधिकारी हिम्मत सिंह, कनिष्ठ सहायक भगवानाराम, गिरदावर सुरेंद्र सिंह पटवारी गोपाल राहड़ सहित अधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान नामांतरण, रास्तों के विवाद, आपसी बंटवारा, पट्टा वितरण आदि समस्याओं का मौके पर समाधान किया। ग्राम विकास अधिकारी हिम्मत सिंह ने बताया कि ''हरियालो राजस्थान'' के तहत वृक्षारोपण किया गया व गांववासियों को अधिकाधिक पेड़-पौधे लगाने और उनकी नियमित रूप से देखरेख करने का आव्हान किया। शिविर में 84 राजस्व के मामले, 20 पट्टे, 85 स्वामित्व पार्सल वितरित किए गए। तहसीलदार जितेंद्र सिंह ने कहा शिविर के दौरान आमजन से प्राप्त होने वाले प्रार्थना पत्र पर तत्काल कार्रवाई का प्रयास किया जाए और सरकार की योजनाओं से पात्र वंचित लोगों को लाभान्वित करें। इसके अलावा अधिक से अधिक पेड़ पौधे लगाए ताकि पर्यावरण संरक्षण के लिए एक अनूठा उदाहरण पेश हो।

## राशिफल मंगलवार 7 जुलाई, 2025



पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2082, ज्येष्ठा नक्षत्र रात्रि 3:15 तक, शुक्ल योग रात्रि 10:17 तक, कौलव करण दिन 11:35 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 3:15 से धनु राशि में संचार करेगा।

**ग्रह स्थिति:** सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-सिंह, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-वृष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज रवियोग रात्रि 3:15 से आरम्भ होगा। आज भौम प्रदोष व्रत है। आज से जया पार्वती व्रत आरम्भ होगा।

**श्रेष्ठ चौघड़िया:** चर 9:07 से 10:49 तक, लाभ-अमृत 10:49 से 2:14 तक, शुभ 3:56 से 5:38 तक।

**राहूकाल:** 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 5:43, सूर्यास्त 7:20



**मेष**

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आज पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।



**वृष**

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



**मिथुन**

व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।



**कर्क**

घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



**सिंह**

घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।



**कन्या**

आर्थिक मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित स्त्रोतों से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा।



**तुला**

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे।



**वृश्चिक**

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।



**धनु**

आज अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अरज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन असंतोष बना रहेगा।



**मकर**

आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है।



**कुंभ**

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।



**मीन**

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी

# कुड़ी भगतासनी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का निरीक्षण

**जोधपुर**, (कासं)। संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक मंत्री जोगाराम पटेल ने सोमवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुड़ी भगतासनी का औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान नगर निगम दक्षिण की महापौर वनिता सेठ भी साथ रही।

निरीक्षण के दौरान कार्मिकों की अनुपस्थित सहित अस्पताल परिसर में अव्यवस्थाएं मिली। संसदीय कार्य मंत्री ने संयुक्त निदेशक डॉ नरेन्द्र सक्सेना को मौके पर बुलाकर आज ही आवश्यक कार्यवाही कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

पटेल ने कहा हमारा लक्ष्य है कि क्षेत्र की जनता बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं मिले। उन्होंने कहा चिकित्सा विभाग के अधिकारी और चिकित्सक पूरी गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ कार्य करें।

संसदीय कार्य मंत्री ने कहा मरीजों के उपचार और अस्पताल संचालन में किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। इस दौरान जनरल ओपीडी, लेबर रूम,इंजेक्शन एवं ड्रेसिंग कक्ष, ईसीजी कक्ष, पुरूष वार्ड, महिला वार्ड,लेबर रूम, टीकाकरण कक्ष,पंजीकरण रजिस्टर एवं दवाओं के स्टॉक का अवलोकन कर व्यवस्थाओं की जानकारी ली।

संसदीय कार्य मंत्री ने सभी कार्मिकों को निर्देश दिए कि अस्पताल में समय पर उपस्थित रहकर मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सुविधा मुहैया कराए।

उन्होंने अभियान चलाकर अस्पताल परिसर एवं सभी वार्ड्स में सफाई व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

पटेल ने संयुक्त निदेशक और मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी को क्षेत्र के चिकित्सा संस्थानों में अधिकाधिक औचक निरीक्षण करने के निर्देश दिए।

उन्होंने रजिस्ट्रेशन काउंटर, आवश्यक सामग्री एवं शुद्ध पेयजल सहित अन्य व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

पटेल ने कहा कि मरीजों को किसी भी प्रकार की परेशानी ना हो, चिकित्सक इसका विशेष ध्यान रखा जाए।

उन्होंने अस्पताल के वार्डों के अवलोकन के दौरान मरीजों एवं उनके परिजनों से बातचीत कर राज्य सरकार द्वारा मिल रही निःशुल्क दवा, निःशुल्क जांच सहित अन्य सुविधाओं का फीडबैक लिया।

**संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक मंत्री जोगाराम पटेल नेसामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुड़ी भगतासनी की व्यवस्थाओं का जायजा लिया।**

## मिडिएशन फोर द नेशन अभियान 90 दिन तक चलेगा

**जालोर**, (कासं)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जालोर के अध्यक्ष एवं जिला न्यायाधीश हारून के निर्देशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव एहसान अहमद ने सोमवार को जिले के न्यायिक मजिस्ट्रेट की बैठक ली।

इस दौरान उन्होंने राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से चलाए जा रहे मिडिएशन फोर द नेशन अभियान के तहत आयोजित होने वाली मध्यस्थता गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह अभियान 90 दिनों तक चलेगा। अभियान का मुख्य उद्देश्य मध्यस्थता योग्य अधिक से अधिक प्रकरणों को मध्यस्थता के जरिए निस्तारित करना है। उन्होंने सभी अधिकारियों को कहा कि वे न्यायालयों में लंबित चल रहे सिविल प्रकरण, फौजदारी, 138 एनआईएक्ट, पारिवारिक मामलों सहित अन्य प्रकृति के मध्यस्थता योग्य प्रकरणों को जरिए मध्यस्थता निस्तारित करवाने में अपनी सकारात्मक भूमिका निभाते हुए कार्य करें। उन्होंने अधिक से अधिक प्रकरणों का चयन करने, मध्यस्थता के लिए चिन्हित प्रकरणों में पक्षकारों को यथा समय नोटिसेज जारी करने का कहा। इस दौरान उन्होंने आवश्यक सुझाव भी दिए। बैठक में जिला मुख्यालय के अधिकारी व्यक्तिगत रूप से उपस्थित रहे, जबकि मुख्यालय से बाहर पद स्थापित अधिकारियों ने जरिए वीसी भाग लिया।

# रामस्नेही संत गोपाल राम महाराज का चातुर्मास प्रवेश

**रामस्नेही संप्रदाय की तपोभूमि श्री रामद्वारा पाली में ब्यावर रामद्वारा से संत गोपाल राम महाराज ने चातुर्मास के लिए मंगल प्रवेश किया।** फोटो-राष्ट्रदूत

**पाली**, (नि.सं.)। रामस्नेही संप्रदाय की तपोभूमि श्री रामद्वारा पाली में ब्यावर रामद्वारा से पहुंचे संत गोपाल राम महाराज ने चातुर्मास कथा के प्रथम दिन धर्म सभा को संबोधित किया।

उन्होंने कहा कि रामायण को प्रेम का शास्त्र कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी। यह न केवल भगवान राम और सीता के बीच प्रेम, बल्कि भाई, मित्र, और भक्त के बीच प्रेम का भी उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है। रामायण में प्रेम, त्याग, कर्तव्य और धर्म का सुंदर मिश्रण है, जो इसे प्रेम का एक गहरा शास्त्र बनाता है।

रामायण में प्रेम के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया है। दाम्पत्य प्रेम, भ्रातृ प्रेम, भक्ति प्रेम,मित्रता का प्रेम, त्याग का प्रेम, धर्म के प्रति प्रेम। संक्षेप में रामायण प्रेम, त्याग, कर्तव्य और धर्म का एक गहन शास्त्र है, जो विभिन्न प्रकार के प्रेम को प्रदर्शित करता है, और मानव जीवन के लिए महत्वपूर्ण सीख प्रदान करता है।

कथा से पहले गीता भवन से राम द्वारा तक शोभायात्रा निकाली गई। जिसमें संत गोपाल राम महाराज, बाल संत संत गोविंद राम महाराज के ऊपर फूलों की बारिश करते हुए पुष्प माला पहनकर के स्वागत के साथ भक्त लोग ढोल नगाड़े और बैंड बाजे के साथ नृत्य कर रहे थे। श्री कृष्ण गोविंद हरे मुरारी का कीर्तन गाते हुए झूमते नाचते हुए रामद्वारा पहुंचे।

गांधी मूर्ति रामद्वारा में चातुर्मास कथा का समय सुबह 8:30 बजे से 9:30 बजे तक रखा गया है।

## सार-समाचार

### कुसुम को पी.एच.डी. उपाधि

कुसुम

**जोधपुर**, (नि.सं.)। कुसुम पत्नी ललित कुमार सांखला को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर से इतिहास मे डॉक्टरेट की प्रोविशनल सर्टिफिकेट विषय मारवाड़ मे राजनितिक एवम सांस्कृतिक इतिहास का आलोचनात्मक अध्यन (राव सिंहा से सन 1240 से राव जोधा सन 1489 तक ) पर शोध कर 20जुलाई 2023 को सब्मिट किया। यह शोध डॉ मनोरमा उपाध्याय आचार्य महिला पी जी महाविद्यालय कमला नेहरू नगर जोधपुर के दिशा निर्देश मे किया। यह उपाधि दिनांक 02 जुलाई 2025 को जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर द्वारा प्रदान की गई।

### विशाखा डाबी ने नामांकन दाखिल किया

**जोधपुर**, (कासं)। जोधपुर नागरिक सहकारी बैंक लिमिटेड के 13जुलाई को होने जा रहे संचालक मंडल के चुनाव में इस बार देश के ख्यातिनाम जादूगर गोपाल की पौत्री विशाखा ने आज नामांकन भरा। आज सुबह विशाखा अपने समर्थकों के साथ बैंक पहुंची तथा निर्वाचन अधिकारी अरुण बारहट के समक्ष नामांकन दाखिल किया। पंजाब यूनिवर्सिटी से बीकॉम. एल एल बी कर रहीं विशाखा शिक्षा के श्रेत्र में सदैव टॉपर रही है इसके साथ ही अपने दादा जादूगर गोपाल से विरासत में मिली जादू कला में भी दक्ष हैं। वे गत वर्ष वियतनाम में आयोजित इंटरनेशनल ऑनलाइन मैजिक कॉन्टेस्ट में प्रथम स्थान हासिल कर जोधपुर का नाम रोशन कर चुकी हैं। अब वे बैंक के संचालक मंडल के चुनाव में अपना भाग्य आजमाने जा रही हैं। आज नामांकन दाखिल करने के समय जादूगर गोपाल, पूनम चंद डाबी, नरपतराज जोरम, चंद्रप्रकाश आसेरी, गणपत डाबी, कैलाश मकवाणा, भरत मकवाना, नूतन डाबी सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

### श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन

**पोकरण**, (कासं)। भारतीय जनता पार्टी नगर मण्डल पोकरण द्वारा भारतीय जनसंघ के संस्थापक, महान राष्ट्र भक्त एवं प्रखर विचारक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की जयंती पर पोकरण शहर के बूथ संख्या 91,100,102, 103 एवं 105 पर श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन किया गया। इन सभाओं में वक्ताओं ने डॉ. मुखर्जी के राष्ट्रवाद, उनके त्याग, बलिदान एवं विचारधारा पर प्रकाश डालते हुए युवाओं से उनके जीवन से प्रेरणा लेने और उनके दिखाए मार्ग पर चलने का आहवान किया। वक्ताओं ने कहा कि डॉ. मुखर्जी का जीवन भारत की एकता और अखंडता के लिए समर्पित था। राजेश व्यास (सह-संयोजक), अचलाराम प्रजापत, रमेश टावरी, मण्डल अध्यक्ष जितेन्द्र माली, उपाध्यक्ष नखताराम ओड, बूथ अध्यक्ष अशोक प्रजापत, जितेन्द्र पुरोहित, पंकज शर्मा, युवा मोर्चा महामंत्री हरिओम पुरोहित, मनोज ओझा, मोहित दवे, निखिल छगानी, पुखराज भार्गव, भरत प्रजापत, मनीष प्रजापत, मालाराम प्रजापत, चुतराराम माली, राकेश माली, श्यामजी माली, मुकेश ओझा, हरीश रंगा सहित बडी संख्या में कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम का समापन डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। सभी कार्यकर्ताओं ने उनके राष्ट्रहित में दिए गए बलिदान को श्रद्धापूर्वक नमन किया।

### अंडरब्रिज का स्थान बदलने की मांग

**भीनमाल**, (निसं)। रिको उद्योग समिति भीनमाल ने औद्योगिक क्षेत्र में प्रस्तावित अंडरब्रिज के स्थान को लेकर उपखंड अधिकारी को ज्ञापन सौंपा है। प्राप्त जानकारी के अनुसार समिति ने रेलवे फाटक पर स्वीकृत अंडरब्रिज के वर्तमान स्थान को अव्यवहारिक बताते हुए उसका स्थान बदलने की मांग की है। अध्यक्ष सोमाराम माली के नेतृत्व में दिए गए ज्ञापन में बताया गया कि वर्तमान में स्वीकृत अंडरब्रिज स्थल पर जलभराव की समस्या गंभीर है और वहाँ भारी वाहन तथा ट्रकों की आवाजाही में बाधा उत्पन्न हो रही है। इसके चलते क्षेत्र की तेल मिलें, फर्नीचर शोरूम, पीवीसी पाइप, ट्रांसफार्मर, गारमेंट्स, स्टील आदि की औद्योगिक इकाइयों को भारी नुकसान उठाना पड रहा है। समिति का कहना है कि प्रस्तावित स्थान पर पहले से ही 13 फीट चौडा रेलवे मार्ग मौजूद है, जिससे केवल तीन इकाइयों को ही लाभ मिलेगा, जबकि बाकी उद्योगों को इस योजना से कोई राहत नहीं मिलेगी। समिति ने अंडरब्रिज के स्थान को रिको रेलवे फाटक (ष्ट-94) के निकट स्थानांतरित करने की मांग की है, जहां से सीधा औद्योगिक मार्ग होकर अधिकतर इकाइयाँ जुडती हैं। उद्योगों को नया, सुविधाजनक और टिकाऊ मार्ग मिल सकेगा।

### गौ सेवा एवं पौधारोपण कार्यक्रम हुआ

**जोधपुर**, (कासं)। साहस चैरिटेबल फाउंडेशन की ओर से गौ सेवा एवं वृक्षारोपण कार्यक्रम सोमवार,7 जुलाई को नंदी गौशाला, जोधपुर मैं आयोजित किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार साहस चैरिटेबल फाउंडेशन द्वारा आज नंदी गौशाला में गौ सेवा एवं पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्य से एक प्रेरणादायक सेवा कार्यक्रम आयोजित किया गया। गौ सेवा के अंतर्गत गौशाला में रह रही गौमाताओं के लिए 50 किलो सूखा चारा,30 किलो गुड़,हरा चारा समर्पित किया गया। साथ ही पर्यावरण को संरक्षित करने के संकल्प के तहत गौशाला परिसर में 11 छायादार व फलदार वृक्षों का रोपण भी किया गया। इस पुनीत कार्य में राजकुमारी गुप्ता, उषा कोठारी, लोकेश जी, रतन जी, कमला जी सहित अनेक समर्पित सदस्यों ने भाग लेकर सहयोग व प्रेरणा दी।

# चूरू के युवक की जोधपुर में मौत, दुकान के बाहर शव मिला, चोट के निशान

**जोधपुर**, (कासं)। सांगरिया पुल के पास में युवक का रक्तरंजित शव मिला। प्रथमदृष्टया मामला संदिग्ध प्रतीत होने पर शव का मेडिकल बोर्ड से पोस्टमार्टम करवाया गया है। शरीर पर चोटों के निशान मिले हैं, जोकि गिरने या हमले के हो सकते हैं। हालांकि मृतक के चाचा की तरफ से हत्या में रिपोर्ट दी गई है। मृतक चूरू जिले का रहने वाला था।

कुड़ी भगतासनी थानाधिकारी हमीर सिंह ने बताया कि राजगढ़ के महलाना दिखनादा निवासी हरिसिंह पुत्र गुगन सिंह ने हत्या की रिपोर्ट दी थी। रिपोर्ट में बताया था कि उनका भतीजा विजय कुमार (30) पिछले कुछ समय से जोधपुर में रहकर एक पैकिंग फर्म में काम करता था। 5 जुलाई की सुबह चाचा हरिसिंह को सूचना मिली कि विजय कुमार की मौत हो गई है। इस पर वे अपने गांव से 4-5 अन्य लोगों के साथ सुबह करीब दस बजे जोधपुर के लिए रवाना हुए और दोपहर तीन बजे यहां पहुंचे। यहां सांगरिया पुल से कुछ दूरी पर स्थित उसकी फर्म के नजदीक चार-पांच दुकान छोड़कर एक दुकान के सामने विजय कुमार का शव पड़ा था, जिसके सिर पर चोट, कान, मुंह और नाक से अत्यधिक खून का रिसाव और एक पैर मुड़ा हुआ था। पुलिस इसमें हत्या के एंगल से भी जांच कर रही है। आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज से पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है। मृतक अविवाहित था। आरंभिक जांच में यह भी पता लगा कि वह किसी महिला के संपर्क में था। वह बाड़मेर में भी काम कर चुका है और वहां पर लोगों को अपनी पत्नी बताता था। वह जोधपुर में कुछ समय पहले ही यहां मजदूरी के लिए आया था और पैकिंग के कार्य में लगा हुआ था।

### ट्रक ने ली जान

**जोधपुर**, (कासं)। शहर के कुड़ी भगतासनी स्थित इसरो के सामने एक ट्रक चालक की लापरवाही से राहगीर की जान चली गई। कुड़ी पुलिस ने बताया कि खारडा रणधीर निवासी हेमराज सांसी ने रिपोर्ट दी।

# साइक्लोनर टीम ने 40 हजार व 25 हजार के इनामी आरोपी गिरफ्तार किए

**जोधपुर**, (कासं)। जोधपुर रेंज की साइक्लोनर टीम ने एक बार फिर ऐसे दो अपराधियों की धरपकड़ की है जोकि नशे के कारोबार से लेकर हत्या जैसे जघन्य अपराध में लिप्त रहे हैं। इन पर 65 हजार का इनाम भी घोषित हो रखा था और वे दो साल से फरार चले आ रहे थे। साइक्लोनर टीम को जैसे जैसे उनका पता लगा और पीछे लगी रही, आखिर में उन्हें पकड़ पाने में सफलता हासिल की। इसके लिए पुलिस ने ऑपरेशन अस्मिता भ्रम और ऑपरेशन भलाल देव चलाया।

रेंज आईजी विकास कुमार ने बताया कि दो साल से हत्या जैसे जघन्य घटना को अंजाम देकर फरार चल रहे पीपाड़ के चिरढाणी निवासी विष्णु उर्फ ठेकेदार पुत्र पप्पाराम को ऑपरेशन अस्मिता भ्रम और मादक पदार्थों की लम्बे समय से तस्करी कर रहे चित्तौड़गढ़ के निम्बाहेड़ा निवासी भैरूलाल देवासी पुत्र मांगीलाल को ऑपरेशन भलाल देव चलाकर गिरफ्तार किया गया। आईजी विकास कुमार ने बताया कि विष्णु उर्फ ठेकेदार की गिरफ्तारी पर 40 हजार और चित्तौड़गढ़ के भैरूलाल की गिरफ्तारी पर 25 हजार का इनाम घोषित हो रखा था।

इनामी विष्णु जयपुर के जौहरी बाजार से और फरार भैरूलाल जयपुर जिले के फुलेरा जंक्शन से पुलिस की गिरफ्त में लिया गया।

आईजी विकास कुमार ने बताया कि विष्णु और उसके साथियों ने पहचान के भ्रम में किसी और के स्थान पर श्याम की हत्या कर दी थी। पिछले दो साल से अपनी पहचान बदल कर जयपुर में बैठकर विष्णु पुलिस को भ्रम में डाले बैठा था। पुलिस को उसकी पहचान का पता ही नहीं चलता था और पुलिस भी भ्रम में रहती थी।

भैरूलाल देवासी के नाम के वर्णों से भैरू से 'भ' और लाल और देवासी से देव निकाल कर ऑपरेशन का नाम भलालदेव रखा गया। उसने फैक्ट्री में डोडा की आपूर्ति से शुरू कर डोडा की आपूर्ति की फैक्ट्री बना ली। उसका पढ़ाई में मन न लगने पर पढ़ाई छोड़ कर घर के पास ही मांगरोल की सीमेंट की फैक्ट्री में ट्रेक्टर चलाने लगा था।

वहां के मजदूरों को आसपास के अड्डों से डोडा लाकर आपूर्ति करके थोड़े पैसे जोड़ लेता था। दो-दो किलो से शुरू कर जब क्विंटल में सप्लाई करने लगा भैरु तो स्थानीय पुलिस की निगाहों में चढ़ गया।

आईजी विकास कुमार ने बताया कि एक दिन आखिरकार निम्बाहेड़ा सदर पुलिस के हत्थे वह चढ़ गया और ट्रेक्टर पर दो क्विंटल डोडा लेकर आया था। जेल पंहुचने पर वहां उसका परिचय एक मजदूर के रिश्तेदार हनुमान से हुआ। परिचय गहरा हुआ तो बड़े पैमाने पर डोडा की आपूर्ति का धंधा शुरू कर दिया था। दोनों ने मिलकर जेल से ही धंधा करना शुरू कर दिया। जब बाहर आया तो पैसे बरसने लगे तब मजदूरों को आपूत छोड़ दी। फिर फुलटाइम सप्लायर बन गया। उसने बाद में एक और हनुमान नाम के शख्स से हाथ मिला दिया पहले वाला पुलिस गिरफ्त में आया हुआ था। दूसरा हनुमान नाम का शख्स बाड़मेर का रहने वाला था। जब दोनों का कारोबार अच्छा चला तो पहले वाले हनुमान के भाई को यह बात नागवार लगी। इस पर उसने साजिशपूर्ण तरीके से उनकी बड़ी खेप को बाड़मेर की आजीटी थाना पुलिस के हाथों पकड़वा दिया।

तस्करी के इस खेल में एक और सामने आई कि जिस भैरूलाल को बाड़मेर का पता नहीं था वह भी बाड़मेर पुलिस की नजरों में चढ़ गया और उस पर 25 हजार का इनाम घोषित कर दिया गया। वह अपनी फरारी काटने के लिए बार नाम पते बदल रहा था। इधर हनुमान के भाई द्वारा अपने मुखबिरों से बार-बार उसका ठिकाना पता लगाया जा रहा था। आखिरकार उसी के मुखबिरों ने साइक्लोनर टीम को उसकी जानकारी दी। वह खाटू श्याम गया था और खाटू बाबा की शरण ली थी, मगर बाबा के दर्शन कर रींगस से ट्रेन पकड़कर घर लौटने लगा था तब साइक्लोनर टीम ने उसे फुलेरा स्टेशन पर ट्रेन के इंतजार में पकड़ लिया।

इन दोनों केस में साइक्लोनर टीम के एसआई कन्हैयालाल, नेमाराम, प्रमित चौहान, देवाराम विश्नोई, हैडकांस्टेबल महेंद्र कुमार, महिपालसिंह और कांस्टेबल अशोक कुमार, राकेश,मनीष परमार, अशोक परिहार, झूमरराम, शेखरचंद, गोपाल जाणी, रोहिताश, घासीलाल शामिल रहे।

# औद्योगिक निवेश से बढ़ेंगे रोजगार के अवसर : जोराराम

**फालना में गोपालन, पशुपालन, डेयरी एवं देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत, सांसद पीपी चौधरी ने सेलो ग्रुप की ओर से 500 करोड़ रुपए का निवेश कर स्थापित ग्लासवेयर के नए प्लांट का निरीक्षण किया।**

**पाली**, (नि.सं.)। राइजिंग राजस्थान के तहत सेलो ग्रुप की ओर से 500 करोड़ रुपए का निवेश कर स्थापित किए गए ग्लासवेयर के नए प्लांट का निरीक्षण करने के लिए गोपालन, पशुपालन, डेयरी एवं देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत जिले के फालना पहुंचे। उनके साथ सांसद पीपी चौधरी भी मौजूद रहे।

दोनों नेताओं का फैक्ट्री पहुंचने पर सेलो ग्रुप के चैयरमेन प्रदीप राठौड़, जीएम अनिल माथुर, वाइस प्रेसिडेंट शंभु सिंह यादव ने जोरदार स्वागत किया। प्लांट के निरीक्षण के दौरान वहां के तकनीकी स्टाफ ने ग्लास से बनने वाले उत्पादों के बारे में बताया तथा उनकी संपूर्ण तकनीक की जानकारी दी। मंत्री कुमावत तथा सांसद चौधरी ने इनका बारीकी से अध्ययन किया और इस पर चर्चा की। उन्होंने कहा कि कहा कि राजस्थान सरकार उद्योगों के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार निवेशकों को हरसंभव सहायता प्रदान कर रही है, चाहे वह सब्सिडी हो, जमीन आवंटन हो या तकनीकी समस्याओं का समाधान। उन्होंने सेलो ग्रुप के उद्योग क्षेत्र के विकास में इसके योगदान को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि यहां और अधिक निवेश की आवश्यकता है, जिससे रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। इस प्लांट के स्थापित होने से स्थानीय स्तर पर रोजगार उपलब्ध करवाने पर भी चेयरमैन राठौड़ को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि इस से निश्चित ही स्थानीय स्तर पर उद्योगों का विकास होगा और रोजगार के नए अवसर पैदा होंगे। उन्होंने राजस्थान सरकार के प्रदेश स्तरीय वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत अधिकाधिक पौधे लगाने के लिए प्रेरित किया।

# जल एवं स्वच्छता मिशन की बैठक कल

**जालोर**, (कासं)। जल जीवन मिशन के तहत जिला जल एवं स्वच्छता मिशन की 37वीं मासिक बैठक जिला कलक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे की अध्यक्षता में 9 जुलाई को प्रातः 11 बजे कलेक्ट्रेट सभागार में होगी।

जन स्वास्थ्य एवं अभियांत्रिकी विभाग के अधीक्षण अभियंता संजय शर्मा ने बताया कि बैठक के दौरान गत बैठक में लिए गए निर्णयों एवं दिशा-निर्देशों, जल जीवन मिशन के तहत हर घर नल की वस्तुस्थिति, नर्मदा परियोजना में प्रगतिरत पेयजल योजनाओं, जेजेएम में पूर्ण हुई योजनाओं एवं एसबीएम-जी2 कार्यों की समीक्षा तथा जेजेएम के कार्य पूर्ण होने के उपरांत ग्रामीण पेयजल योजनाओं के संचालन व संधारण के हस्तांतरण एवं संभावित व्यय की समीक्षा एवं अनुमोदन, नल जल मित्रों के प्लम्बर ट्रेड को लेकर प्रशिक्षण, विद्यालयों व आंगनवाड़ियों में पेयजल की समीक्षा सहित विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा की जायेगी।

## प्रशिक्षण 17 जुलाई तक

**जालोर**, (कासं)। बीएलओ एवं सुपरवाइजर को 3 से 17 जुलाई 2025 तक ईआरओ स्तर पर प्रशिक्षण दिया जा रहा है। जालोर जिले में आहोर, जालोर, भीनमाल, सांचौर व रानीवाड़ा विधानसभा क्षेत्र में आयोजित प्रशिक्षण के दौरान मास्टर्स ट्रेनर्स द्वारा सेशन प्रथम में इलेक्ट्रोल रोल के प्रोसेस की जानकारी, द्वितीय सेशन में रोल प्ले, फॉर्म भरने एवं प्रकरणों का अध्ययन, सेशन तृतीय में बीएलओ एप और फॉर्म भरने संबंधी चर्चा हुई।

## पौधारोपण के निर्देश दिये

**पाली**, (नि.सं.)। जिला कलक्टर एलएन मंत्री की अध्यक्षता में जिला कलक्टर कार्यालय के सभागार में सोमवार को साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित हुयी। बैठक में जिला कलक्टर मंत्री ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अन्त्योदय सम्बल पखवाड़ा में शेष रहे दिनों में आयोजित होने वाले शिविरों व उनमें हो रहे कामों की प्रगति की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिये।

बैठक में उन्होंने शिविरों में विभागवार प्रगति को जाना और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये। साथ ही हरियालो राजस्थान के लिये उन्होंने विभागवार लक्ष्यानुसार वृक्षारोपण करने के विस्तार से चर्चा कर निर्देश दिये। साथ ही मानसून के सम्बन्ध में आवश्यक व्यवस्था करने, सीएसआर मीटींग के लिए, जल संसाधन विभाग बांधों में जल उपलब्धता की जानकारी ली।

बैठक में पीएचईडी जल वितरण, चिकित्सा विभाग में मौसमी बिमारियां, दवाईयों आदि के बारे में, रसद विभाग एनएफएसए की प्रगति, सहकरिता विभाग प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, सार्वजनिक निर्माण विभाग के कामों, हार्टीकल्चर एवं कृषि विभाग की योजनाओं की प्रगति की समीक्षा कर निर्देश दिये। साथ ही सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग की पेंशन सत्यापन, शिक्षा विभाग में व पौधारोपण लक्ष्य के लिये आदि अन्य सभी विभागों के कार्यों योजनाओं की समीक्षा कर आवश्यक निर्देश दिये।

साथ ही सम्पर्क पोर्टल पर दर्ज प्रकरणों के निस्तारण की समीक्षा कर उन्हें जल्द निस्तारण के लिये व ई-फाईलों पर कार्य के बारे में निर्देश दिये। बैठक में उन्होंने राज्य सरकार की फलैगशिप योजनाओं पर चर्चा की आवश्यक तैयारी के लिये कहा। बैठक में नगर निगम, नगर विकास न्यास आदि अन्य विभागों के कामों और योजनाओं की प्रगति की समीक्षा कर निर्देश दिये।

इस अवसर पर आईएफएस पी बाला मुरूगन व एडीएम अश्विनी के पंवार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी मुकेश चौधरी, यूआईटी सचिव डॉ पूजा सक्सेना सहित सभी जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

## विषाक्त से मौत

**जोधपुर**, (कासं)। जोधपुर के मंडोर पुलिस थाना क्षेत्र बालसमंद स्थित महादेव नगर में रहने वाले एक किशोर ने भूल से विषाक्त पदार्थ का सेवन कर लिया। तबीयत बिगडऩे पर उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। बाद में उसकी मौत हो गई।

मंडोर पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार मूलतः निंबला नगर भेड़ ओसियां हाल महादेव नगर बालसमंद रोड निवासी नवलसिंह पुत्र सुजानसिंह ने मर्ग में रिपोर्ट दी।


**इत्तलानामा वास्ते जाहिर करने वजह न जारी होने डिग्री के**
(ओ. 21 रूल 22 जाब्ता दीवानी )
अज अदालत अपर जिला एव सैशन न्यायाधीश क्रम 4 जयपुर महानगर प्रथम
श्रीमती बालेश बैजल बनाम मृतक श्री मोहन देवनदास शर्मा
मुकदमा न 84 सन् 2019
बनाम- मुसम्मी डॉ0 राजेन्द्र कुमार सोनी पुत्र स्व0 श्री स्वरूप चन्द सोनी निवासी, 17ई/789, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर राज0, मूरती सोनी पुत्र स्व0 श्री स्वरूप चन्द सोनी निवास मकान न0 1011, फर्स्ट डी रोड, सरदारपुरा नेहरू पार्क के पास, जोधपुर, राज0, श्रीमती निर्मला शर्मा धर्मपत्नी श्री हरिकान्त शर्मा निवासी, 16/434, बी चौपसनी हाउसिंग बोर्ड, चुंगी चौकी, जोधपुर राज0, श्रीमती कमला शर्मा पत्नी श्री सहदेव शर्मा निवासी, बी-सुभग नगर, शिव मन्दिर के पास, चारली मिल, पाली राज0, श्रीमती मीरा सोनी धर्मपत्नी श्री मफतलाल सोनी, डीड राईटर तहसील स्विाना, बाडमेर, राज0, श्रीमती भगवती शर्मा पत्नी श्री दीपचन्द शर्मा निवासी राय कालोनी बाडमेर राज. चूंकि..... ने डिग्री अदालत हाजा मवर्खे मुकदमें नं. 77. सन् 2006 की इजराय के लिए दरख्वास्त पेश की है इसलिए आपको इत्तला दी जाती है कि आप इस अदालत में वार 16 तारीख 07 माह 2025 को हाजिर होकर अगर कोई उजर वास्ते आपके खिलाफ इजाजत किये जाने डिग्री रखते हो तो पेश करो
आज व तारीख 28 माह 05 सन् 2025 व शब्द मेरे दस्तखत मुहर अदालत के जारी किया गया
आज्ञा से-वरिष्ठ रीडर/शरिस्तेदार
मोहर अदालत
अपर जिला एवम् सैशन न्यायाधीश क्रम-04 जयपुर महानगर प्रथम



**कार्यालयः-अधिशाषी अभियन्ता, जल संसाधन खण्ड, जालोर**
हरजी एवं भाद्राजुन माईकों सिंचाई परियोजना के निर्माण कार्य के लिए धारा-19 के तहत राजस्थान राजपत्र ज्येष्ठ 06, मंगलवार, शाके 1947 मई 27, 2025 का कार्यालय मुख्य अभियन्ता, जल संसाधन विभाग राजस्थान जयपुर के कमांक 133-134/ भू.अ./ ज.स. / 2016 राजकाज नम्बर 15059435 दिनांक 02.05.2025 तहत धारा 19 की घोषणा के कम में प्रकाशन किया गया।
परियोजना भूमि अर्जन पुनवार्सना और पुनर्व्यवस्थापन में उचित प्रतिकर और पारदर्शिता का अधिकार अधिनियम, 2013 की धारा 19 हेतु राजस्थान राजपत्र में प्रकाशित हितकारी / प्रभावित होने वाले भूमिधारको की सूची निदेशक, सुचना एवं जन सम्पर्क निदेशालय राजस्थान जयपुर के निर्देशानुसार क्यू आर कोड में प्रकाशित किया जा रहा है।
सहायक अभियन्ता
जल संसाधन उपखण्ड
जालोर
DIPR/C/8916/2025
अधिशाषी अभियन्ता
जल संसाधन खण्ड
जालोर


## जनसुनवाई 10 को

**पाली**, (नि.सं.)। अटल जन सेवा शिविर एवं उपखण्ड स्तरीय सतर्कता समिति बैठक एवं जनसुनवाई 10 जुलाई को आयोजित होगी।

उपखण्ड अधिकारी विमलेन्द्र राणावत ने बताया कि प्रत्येक माह के द्वितीय गुरुवार को होने वाली उपखण्ड स्तरीय अटल जन सेवा शिविर एवं साथ ही उपखंड स्तरीय सतर्कता समिति की बैठक 10 जुलाई गुरुवार को प्रातः 10 बजे पंचायत समिति पाली में की जाएगी।

# ‘किसान, युवा, महिला एवं मजदूर के उत्थान में कारगर साबित हो रहा अंत्योदय संबल पखवाड़ा’

## मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सांगोद में अंत्योदय संबल पखवाड़ा के अंतर्गत शिविर का अवलोकन किया



कोटा में मुख्यमंत्री और लोकसभा अध्यक्ष ने सुपोषित मां अभियान के तहत किट प्रदान किए।

- ‘पंडित दीनदयाल गरीबी मुक्त गांव योजना के माध्यम से ग्रामीण परिवारों को बीपीएल श्रेणी से बाहर निकाला जाएगा’
- अंत्योदय के संकल्प के साथ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच रहा योजनाओं का लाभ : लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला

**कोटा/जयपुर।** मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़ा के अंतर्गत गांवों में किए जा रहे कार्य विकसित भारत-विकसित राजस्थान का संकल्प साकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इसके अंतर्गत प्रदेशभर के गांवों में दिव्यांगों, महिलाओं, बुजुर्गों और वंचितों का उत्थान सरकारी योजनाओं के माध्यम से सुनिश्चित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि शिविरों के माध्यम से वर्षों से लंबित कार्य एक ही स्थान पर किए जा रहे हैं, जिससे ग्रामीणों की राह आसान हो रही है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा सोमवार को कोटा के सांगोद में पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के अंतर्गत आयोजित शिविर और सुपोषित मां अभियान के शुभारंभ समारोह को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश में चार जातियां- किसान, युवा, महिला एवं मजदूर बताई हैं। उनकी मंशा के अनुरूप राज्य सरकार ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े की पहल की है जिसके अंतर्गत 24 जून से 9 जुलाई तक ग्रामीण क्षेत्रों में शिविरों के माध्यम से व्यापक कार्य कर इन वर्गों को लाभान्वित किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के उत्थान के लिए पंडित दीनदयाल गरीबी मुक्त गांव योजना शुरू की है, जिसके माध्यम से ग्रामीण परिवारों को बीपीएल श्रेणी से बाहर निकाला जाएगा। इसमें पांच हजार गांवों का सर्वे हो चुका है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने कोटा जिले के विकास के लिए 3 हजार 30 करोड़ रुपये का बजटीय प्रावधान किया है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने 26.24 करोड़ रुपए की लागत से परवन नदी पर बने हाईलेवल ब्रिज तथा 45 करोड़ रुपए की लागत से कालीसिंध नदी पर बने उच्च स्तरीय पुल का लोकार्पण किया। साथ ही, समग्र शिक्षा अभियान के अंतर्गत ग्राम कनवास में 41.87 करोड़ रुपए की लागत से निर्मित कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय के नवीन भवन निर्माण कार्य का लोकार्पण भी किया गया। उन्होंने सांगोद में 16.69 करोड़ रुपए की लागत से डलने वाली सीवरेज लाइन और ट्रीटमेंट प्लांट का शिलान्यास भी किया। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने कहा कि अंत्योदय संबल पखवाड़ा केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि उस विचारधारा का सजीव रूप है, जिसमें समाज के सबसे वंचित और जरूरतमंद व्यक्ति के कल्याण का संकल्प निहित है। राज्य सरकार ने इसी सोच के साथ इस पखवाड़े की शुरुआत की है ताकि हर योजना का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाया जा सके। बिरला ने कहा कि हम किसानों को समय पर बिजली, विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा और ग्रामीण क्षेत्रों में 24 घंटे बिजली देने के लिए, गंभीरता से काम कर रहे हैं। हर गांव को सड़क, अस्पताल और स्कूल जैसी बुनियादी सुविधाओं से जोड़ने के लिए भी ठोस कदम उठाए जा रहे हैं। बिरला ने सुपोषित मां अभियान का जिक्र करते हुए कहा कि गर्भवती महिलाओं को नियमित स्वास्थ्य जांच, पोषण आहार और अन्य जरूरी सहायता दी जा रही है। यह अभियान केवल मां और बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य तक सीमित नहीं है, बल्कि एक संस्कारित और स्वस्थ पीढ़ी के निर्माण का प्रयास भी है।

इससे पहले मुख्यमंत्री शर्मा ने कृषि उपज मंडी परिसर में सिंदूर का पौधा लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। उन्होंने अंत्योदय संबल शिविर में विभिन्न विभागों की स्टॉल्स पर आमजन को दी जा रही राहत के बारे में जानकारी ली। मुख्यमंत्री ने शिविर स्थल पर तीन दिव्यांगों को बैटरी चलित साइकिल एवं पांच मेधावी बालिकाओं को स्कूटी भी वितरित की। इस अवसर पर शिक्षा मंत्री मदन दिलावर, ऊर्जा राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) हीरालाल नागर, सहकारिता राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) गौतम कुमार दक, विधायक संदीप शर्मा और कल्पना देवी सहित अन्य जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में आमजन उपस्थित रहे।

**अधेड़ का शव मिला :** पावटा के विराटनगर थाना क्षेत्र के तेवड़ी गांव में घाटी के जंगलों में सोमवार शाम को एक अधेड़ का संदिग्ध अवस्था में शव मिला। मृतक की पहचान प्रहलाद (55) पुत्र मूलचंद निवासी गुढ़ा चुरानी थाना के रूप में हुई।


### कार्यालय नगरपालिका बिजयनगर जिला-ब्यावर राजस्थान

क्रमांक/न.पा.बि./रोषनी/2025/1485 दिनांक :- 25/06/2025

**निविदा सूचना 01 वर्ष 2024-25**

नगरपालिका बिजयनगर द्वारा पंजीकृत संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में E-Procurement प्रकिया से www.eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती हैं। संवेदक द्वारा निविदा प्रपत्र, निविदा शर्तो व अन्य विस्तृत जानकारी इंटरनेट वेब साईट www.sppp.raj.gov.in और www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है।

| | | |
|---|---|---|
| कुल निविदा के कार्य | : | 01 कार्य |
| निविदा की कुल लागत | : | रू 35.49/- लाख |
| कुल धरोहर राशि | : | ........../........../2025 अनुमानित लागत की दो प्रतिशत |
| ऑन लाईन निविदा फार्म प्राप्त करने व जमा करवाने की दिनांक | : | 06/07/2025 प्रातः 11.00 बजे से 15/07/2025 सांय 6.00 बजे तक |
| निविदा शुल्क डी.डी., धरोहर राशि डी. डी एवं प्रोसेसिंग शुल्क डी.डी. भौतिक रूप से जमा कराने की अंतिम दिनांक | : | 16/07/2025 दोपहर 12:00 बजे तक |
| ऑन लाईन निविदा खोलने की दिनांक | : | 17/07/2025 सांय 1:00 बजे |

उक्त निविदा का NIB Code :- DLB2526A3220

नोट :-निविदा दाता द्वारा निविदा शुल्क एवं धरोहर राशि अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका बिजयनगर के नाम से एवं प्रोसेसिंग शुल्क Managing Director, RISL payable at Jaipur के नाम से एवं ड़िमाण्ड ड्राफ्ट (D.D) निविदा जारी होने कि दिनांक के बाद के होने चाहिए।

राज.संवाद/सी/25/5684 अध्यक्ष नगरपालिका बिजयनगर अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका बिजयनगर



### कार्यालय श्री साँवलियाजी मंदिर मण्डल
मण्डफिया, जिला -चित्तौड़गढ़ (राज.)

क्रमांक/लेखा/श्री सामम/2025-26/652 दिनांक:-05.07.2025

**-:ई-निविदा सूचना संख्या-04/2025-26:-**

श्री सांवलियाजी मंदिर मण्डल, मण्डफिया द्वारा निम्नलिखित कार्यो हेतु पंजिकृत व योग्य संवेदको से निर्धारित प्रपत्र में ई-प्रोक्यूरमेंट प्रक्रिया के माध्यम से ऑनलाईन निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र, विस्तृत विवरण व अन्य शर्ते www.eproc.rajasthan.gov.in तथा www.sppp.raj.nic.in पोर्टल पर दिनांक 07/07/2025 को प्रात: 09:00 बजे से उपलब्ध होकर दिनांक 16/07/2025 सायं 06:00 बजे तक ऑनलाईन जमा किये जा सकते है जिनकी तकनीकी निविदाएं दिनांक 17/07/2025 को दोपहर 12:00 बजे ऑनलाईन खोली जावेगी। निविदा संबंधी शुल्क व राशियां प्रपत्र अंकित बैंक खाते में जमा करवानी होगी।

| क्र. | कार्यो का विवरण | अनुमानित राशि (लाखों में) | UBN No |
|---|---|---|---|
| 1. | Maintenance & Repair work of various road of S.S.M.M. Mandfiya | 50.00 | SMM2526WLOB 00004 |
| 2. | Levelling Dressing & Formation Base of various Parking at S.S.M.M. Mandfiya | 155.46 | SMM2526WLOB 00005 |
| 3. | श्री सांवलियाजी मंदिर मण्डल के पार्किंग स्थलों का निर्धारित स्थलों का निर्धारित शुल्क पर संचालन व रख-रखाव कार्य | 100.00 | SMM2526SLOB 00006 |

मुख्य कार्यपालक अधिकारी
श्री सांवलियाजी मंदिर मण्डल


## ट्रक ने सड़क किनारे खड़ी गाड़ी को टक्कर मारी, दो युवकों की मौत

- केंट्रा गाड़ी में सब्जी लेकर जयपुर जा रहे थे दोनों युवक
- केंट्रा गाड़ी का टायर पंक्चर होने पर सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी कर अन्य वाहन का इंतजार कर रहे थे

**नदबई, (निसं)।** आगरा-जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर लुलहारा के समीप रविवार तड़के करीब दो बजे, ट्रक ने असंतुलित होकर सड़क किनारे खड़ी केंट्रा गाड़ी में टक्कर मार दी। हादसे के दौरान टक्कर इतनी जबर्दस्त हुई कि, केंट्रा सवार एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि, एक अन्य युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। हादसे की सूचना पर डहरामोड़ चौकी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घायल युवक को जिला चिकित्सालय में भर्ती कराया, जहां उपचार दौरान घायल युवक की भी मौत हो गई। पुलिस ने दोनों शव का पोस्टमार्टम कराया।

पुलिस सूत्रों की मानें तो यूपी किरावली थाना क्षेत्र के गांव कुर्रा नगला निवासी विष्णु शर्मा पुत्र बनवारीलाल शर्मा, अपने साथी महुअर निवासी राजन लोधा राजपूत पुत्र गुलाब लोधा राजपूत के साथ केंट्रा गाड़ी में सब्जी लेकर जयपुर जा रहा था। इसी दौरान लुलहारा के समीप केंट्रा गाड़ी का टायर पंक्चर हो गया। सड़क के किनारे गाड़ी खड़ी कर, दोनों अन्य वाहन का इंतजार कर रहे थे। इसी दौरान ट्रक ने असंतुलित होकर सड़क किनारे खड़ी केंट्रा गाड़ी में टक्कर मार दी, जिसके चलते विष्णु शर्मा की मौके पर मौत हो गई, जबकि, राजन लोधा राजपूत गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने घायल युवक को भरतपुर चिकित्सालय में भर्ती कराया, जहां, उपचार दौरान घायल राजन लोधा की भी मौत हो गई। बाद में पुलिस ने भरतपुर चिकित्सालय में दोनों शव का पोस्टमार्टम कराया। हादसे के बाद ट्रक चालक व परिचालक फरार हो गए।

### युवक ने आत्महत्या की

**उदयपुर, (निसं)।** सायरा थाना क्षेत्र में युवक ने कुंए में कूदकर आत्महत्या कर ली। जानकारी के अनुसार बलाना थाना खमनोर राजसमन्द निवासी खेमराज (30) पुत्र डालू गमेती ने सायरा थाना क्षेत्र भानपुरा गांव में स्थित कुएं में कूदकर आत्महत्या कर ली। खेमराज की तबीयत खराब होने से गत दिनों वह घर से पिपाणा माताजी मंदिर जाने के लिए निकला था। वापस घर नहीं पहुंचने पर 30 जून को खमनोर पुलिस थाने में पत्नी मांगीबाई ने एमपीआर दर्ज करवाई थी। चार जुलाई को सायरा थाना क्षेत्र भानपुरा गांव में स्थित कुएं में अज्ञात युवक की लाश मिली थी। इसका पता चलने पर थानाधिकारी राजेन्द्रसिंह ने मौके पर पहुंच कर मृतक को बाहर निकाल शिनाख्तगी नहीं होने पर एमबी चिकित्सालय मोर्चरी में रखवाया था, जिसका सात जुलाई को उसकी पत्नी मांगीबाई व परिजनों ने मृतक की खेमराज के रूप में शिनाख्त की थी। सूचना मिलने पर सायरा पुलिस थाने के हेडकांस्टेबल सुखाराम ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

### सड़क हादसे में दो भाइयों की मौत

**टोंक, (निसं)।** मेहंदवास थाना क्षेत्र से गुजर रहे नेशनल हाइवे-52 पर महुआ कट के पास सोमवार को अज्ञात वाहन की टक्कर से महुआ निवासी दो चचेरे भाइयों की घटना स्थल पर मौत हो गई। दोनों भाई खेत से वापस पैदल गांव लौट रहे थे, इसी दौरान रोड क्रॉस करते समय तेज रफ्तार अज्ञात वाहन ने दोनों को टक्कर मार दी, इसके बाद चालक गाड़ी को भगाकर ले गया। मौके पर आये ग्रामीणों ने जाम लगाकर पुलिस को सूचना दी, जहां मौके पर मेहंदवास थाना प्रभारी ओमप्रकाश जाप्ते के साथ पहुंचे और समझाइश कर जाम खुलवाया। इसके बाद पुलिस ने शवों को सआदत अस्पताल में ले जाकर पोस्टमॉर्टम करवा कर परिजनों को सुपुर्द किया।

महुआ निवासी युवक दीपक भील और सोदान भील जो सोमवार सुबह पैदल ही खेत से गांव लौट रहे थे, तभी रास्ते में जयपुर-कोटा नेशनल हाइवे पर महुआ कट के पास अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। इससे दोनों की मौके पर मौत हो गई। ग्रामीणों के अनुसार दीपक की 2 माह पहले ही शादी हुई थी, उधर गांव में शव पहुंचते ही परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल हो गया।

### सड़क हादसे में पिता की मौत, पुत्र घायल

**उदयपुर, (निसं)।** नाई थाना क्षेत्र में हुए सड़क हादसे में पिता की मौत हो गई तथा पुत्र घायल हो गया। जिसे उपचार के लिए चिकित्सालय में भर्ती कराया है।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार रविवार शाम बलीचा से झाड़ोल मार्ग नांदेश्वर रोड़ के समीप कार ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक चालक वालूराम (29) पुत्र थावरचंद खोखरिया निवासी मासिंगपुरा वाघपुरा तथा उसका पुत्र वीरा (7) गंभीर घायल हो गए, जिन्हें उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय में भर्ती करवाया, जहां वालूराम की मौत हो गई। सूचना मिलने पर नाई पुलिस थाने के हेड कांस्टेबल ललित नागदा ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। 6 जुलाई शाम वालूराम बाइक पर अपने पुत्र को लेकर वलिचा से गांव लौट रहा था, जहां बीच रास्ते घटना स्थल पर सामने से आ रही कार ने बाइक को टक्कर मार दी थी।


### कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता, जन स्वा. अभि. विभाग, वृत कोटपूतली-बहरोड

क्रमांक-अ.अ./जन स्वा/कोट-बह/2025-26/858 दिनांक-23.06.2025

**ई-निविदा सूचना संख्या-17/2025-26**

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की और से जन स्वा0 अभिः विभाग मे पर्जीकृत सर्वेदको एवं राज्य सरकार / केन्द्र सरकार के अधिकृत सगंठनो / केन्द्रीय लोक निमार्ण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेलवे इत्यादि मे पजीकृत सर्वेदको जो कि राजस्थान सरकार के सक्षम श्रेणी के संवेदको के समकक्ष हो से निर्धारित प्रपत्र मे ई-प्रोक्यूरमेट प्रकिया के तहत ऑन लाइन निविदाएँ आमत्रितं की जाती है।

निविदा फार्म आनें लाइन वेबसाइट http://www.eproc.rajasthan.gov.in निर्धारित अवधि में प्रातः 900 बजे से सांय 6.00 बजे तक डाउनलोड किये जा सक्ते है। ऑन लाइन निविदाएं इसी वेबसाईट http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर इच्छुक संवेदको द्वारा निम्न विवरणानुसार निर्धारित अवधि में सांय 5.00 बजे तक जमा कराये जा सक्ते है। वेबसाईट पर तकनिकी बिड निर्धारित तिथि को प्रातः 11:00 बजे खोली जावेगी। यदि किसी कारणवश उस दिन अवकाश रहता है तो उसके अगले कार्य दिवस को उसी समय पर तकनीकी बिड खोली जावेगी।

निविदा शुल्क / धरोहर राशि निविदादाता ऑनलाईन चालान द्वारा जो कि अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वा0 अभि विभाग खण्ड, बानसूर के नाम देय होगी। तथा प्रक्रिया शुल्क मेनेजिंग डायरेक्टर आरएसआईएल जयपुर के नाम देय होगी। इस कार्यालय में निम्न विवरण में अंकित दिनांक 20.05.2025 प्रातः 11.00 बजे तक आनलाईन चालान के माध्यम से जमा करवाना आवश्यक है। इच्छुक सवेदको को अपने digital Signature certificate (DSC) के माध्यम से वेबसाइट http://www.eproc.rajasthan.gov.in पर फर्म को रजिस्टर्ड करवाना आवश्यक है।

| | |
|---|---|
| निविदा की कुल लागत लाखो में | 172.50 लाख (01 कार्य) |
| कुल धरोहर राशि लाखो मे | 3.45 लाख (01 कार्य) |
| निविदा शुल्क की कुल राशि | 0:05 लाख |
| निविदा डाउनलोड करने की अतिम तिथि | 23.06.25 से 14.07.25 सांय 6:00 बजे तक |
| निविदा अपलोड करने की अतिम तिथि | 23.06.25 से 14.07.25 सांय 600 बजे तक |
| निविदा तकनीकी बिड खोलने की तिथि व समय | 15.07.2025 को प्रातः 11:00 बजे |
| 17/2025-26 PHE2526WSOB04019 UBN No. | NIB NO PHE2526A1944 |

(रामनिवास यादव)
अधीक्षण अभियन्ता
जन स्वा अभि. विभाग वृत कोटपूतली

DIPR/C/8995/2025



### RAJASTHAN SAMWAD
Department of Information and Public Relations, Government Secretariat, Jaipur-302005
(Telephone No. 0141- 2227325, E-mail id :- dipr.rajasthan@gmail.com, rajasthansamwad2002@gmail.com)

**NOTICE INVITING BIDS**
**NIB No. 51 Date : 07/07/2025**

Bids for **Providing Courier Services for Delivering Printed Materials etc. at Various Places in Rajasthan & Outside** are invited from interested bidders up to 05:00 PM Dated 18/07/2025. The approximate value of the procurement is **Rs. 40 Lakh.** Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(http://sppp.raj.nic.in)** of the state; and **https://dipr.rajasthan.gov.in.**

UBN : IPR2526SLRC00010

Raj.Samwad/C/25/5695 Managing Director



1.2 Abridged NIB 04/2025-26
### SE CUM PROJECT MANAGER, WATERSHED CELL CUM DATA CENTRE, ZILA PARISHAD SAWAI MADHOPUR

File no./765 **NOTICE INVITING BID** Date:-25.06.2025
**NIB No 13,14/YEAR 2025-26**

Bids for (02 packages) construction of various Kachcha and Pukka works under PMKSY 2.0 in Sawai Madhopur district of estimated value INR 290.28 LACs (263.20+27.08) are invited from interested bidders up to 6:00 PM DATE 09.07.2025 Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (https://eproc.rajasthan.gov.in or https://sppp.rajasthan.gov.in/) of the state, and departmental website WWW.WATERSHED.RAJASTHAN.GOV.IN.

NIB Code-WSC2526A0378
UBN NO-WSC2526WSOB00628
UBN NO- WSC2526WSOB00629

SE CUM PROJECT MANAGER WATERSHED SELL CUM DATA CENTRE ZILA PARISHAD SAWAI MADHOPUR

DIPR/C/9215/2025



### ERCP Eastern Rajasthan Canal Project Corporation Limited
Sinchai Bhawan, JLN Marg, Jaipur 302017 Tel: 0141-2709667 Email: ceercpc@gmail.com

No. :- 1813 Date :- 02/07/2025

**NIB No. - ERCPCL/17/2025-26**

On behalf of the Governor of Rajasthan, bid for "Rate contract Services of 07 Autocad Operator for ERCPCL offices at ERCPCL PMU Jaipur & ERCPCL SPIU Tonk, Bundi, Baran-I, Baran-II, Kota-I, Kota-II for the Year 2025-26" are invited from interested bidders up to 01.00 PM 14.07.2025. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal **(https://sppp.rajasthan.gov.in/sppp** of the state. The approximate value of the procurement is Rs 22.00 Lacs.

NIB Code : ERP2526A0021, UBN No. : ERP2526SLRC00023

Raj.Samwad/C/25/5634 MD cum Chief Engineer



### LIVESTOCK RESEARCH STATION KODAMDESAR
RAJASTHAN UNIVERSITY OF VETERINARY & ANIMAL SCIENCES, BIKANER

No. :- F ( )LRS/Kodemdesar/2025-26/36 Dated :- 04/07/2025

**खुली निविदा सूचना (01/2025-26)**

पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर में स्थित गायों का केवल शाम के समय का दूध विक्रय हेतु दैनिक राशि जमा कराकर अवधि 01.08.2025 से 31.07.2026 तक के लिए मुहरबन्द निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र कार्यालय पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर बीकानेर से 1000 रूपये जमा कराकर खरीदा जा सकता है। निविदा फार्म दिनांक 17.07.2025 को दोपहर 1:00 बजे तक रूपये 50,000 धरोहर राशि बैंकर चैक/डी.डी के साथ जमा कराया जा सकता है। प्राप्त निविदाएं दिनांक 17.07.2025 को दोपहर 3:00 बजे उपस्थित निविदादाताओं के समक्ष खोली जावेगी। शेष नियम एवं शर्ते कार्यालय समय में प्राप्त की जा सकती है। **UBN : VAU2526GLOB00049, NIB : VAU2526A0049**

राज.संवाद/सी/25/5645 प्रभारी अधिकारी



### परीक्षा नियंत्रक कार्यालय
### स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर

क्रमांक :- स्केराकृविवि/परीक्षा/ग्रुप.4/2025/5185-87 दिनांक :- 03/07/2025

**खुली निविदा सूचना 01/2025**

स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, बीकानेर के परीक्षा नियंत्रक कार्यालय द्वारा कम्प्यूटर कार्य हेतू उच्च कुशल श्रमिक की आवश्यकता हेतू मोहरबन्द निविदाऐं आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि दिनांक 15.07.2025 को 2.00 बजे तक हैं। निविदा का पूर्ण विवरण एवं शर्तें विश्वविद्यालय की वेबसाईट **www.raubikaner.org** व **www.sppp.rajasthan.gov.in** पर उपलब्ध है।

**NIB Code : SKA2526A0024**
**UBN No. : SKA2526SSRC00041**

राज.संवाद/सी/25/5642 परीक्षा नियंत्रक


## करौली में मूसलाधार बारिश, पांचना बांध के गेट खोलने की तैयारी

- ‘निर्धारित गेज 258.62 के स्थान पर 257.90 मीटर तक पानी पहुंचने के बाद पांचना बांध से पानी की निकासी शुरू कर दी जाएगी’
- बरखेड़ा नदी में नहाने गए एक युवक की डूबने से मौत हो गई, एसडीआरएफ एवं सिविल डिफेंस की टीम ने शव को पानी से बाहर निकाला

**करौली, (निसं.)।** जिला मुख्यालय पर बीती रात आई मूसलाधार बारिश से शहर पानी से तरबतर हो गया। कई जगह पानी भराव के कारण लोगों का आवागमन ठप हो गया तो वहीं पांचना बांध के गेट खोलने की पूरी तैयारी कर ली गई है।

करौली जिला मुख्यालय पर बीते दो दिन से तेज गर्मी और उमस से लोगों का बुरा हाल था, लेकिन रविवार की रात बारह बजे के बाद एक साथ आई मूसलाधार बारिश से शहर पानी से तरबतर हो गया और प्रात: तक पानी की निकासी नहीं हो पाई। वजीरपुर गेट से कलेक्ट्रेट सर्किल को जाने वाला मार्ग, पावर हाउस रोड एवं केशवपुरा पुलिया से होली खिड़किया जाने वाला सड़क मार्ग पूरी तरह से अवरुद्ध हो गया इस दौरान प्रात: के समय स्कूल जाने वाले विद्यार्थियों, मदन मोहन जी मंदिर जाने वाले श्रद्धालुओं सहित प्रात: के समय दूध की सप्लाई करने वाले दूधिया लोगों को खासी परेशानी उठानी पड़ी और पानी में से होकर निकलना पड़ा। इस दौरान कई मोटरसाइकिलें पानी में बंद हो जाने के कारण लोग परेशान रहे। करौली शहर के सायनाथ खिड़कियां बाहर स्थित वीर हनुमान मंदिर पर अखंड रामायण का पाठ चल रहा है। एक साथ आई बारिश से मेडकी का पानी मंदिर परिसर में घुस गया और मंदिर में अंदर तक पानी पहुंचने के कारण रामायण का पाठ कर रहे भक्तों को खड़े रहकर रामायण का पाठ जारी रखना पड़ा।

करौली शहर की भद्रावती और बरखेड़ा नदी में जबरदस्त पानी की आवक होने के कारण पांचना बांध में भी पानी की आवक बढ़ गई और लगातार बढ़ती आवक को देखते हुए जल संसाधन विभाग के अधिकारी भी सतर्क और मुस्तैद नजर आए। बांध की भराव क्षमता को देखते हुए अधिकारियों ने पंचना बांध से गेट खोलकर पानी की निकासी की तैयारी शुरू कर दी है।

विभाग के अधिशासी अभियंता सुशील गुप्ता, एईएन वीर सिंह जाटव, जेईएन भवानी सिंह ने बताया कि लगातार पानी की आवक बनी हुई है। निर्धारित गेज 258.62 के स्थान पर 257.90 मीटर तक पानी पहुंचने के बाद पांचना बांध से पानी की निकासी शुरू कर दी जाएगी। इससे पूर्व गंभीर नदी क्षेत्र के लोगों को भी सचेत और अलर्ट कर दिया गया है कि लोग स्वयं एवं अपने पशुओं को नदी क्षेत्र में नहीं आने दें।

नदियों में बढ़ रही पानी की आवक को देखते हुए बरखेड़ा नदी में नहाने गए एक युवक की डूबने से मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलने के बाद तहसीलदार, पटवारी और एसडीआरएफ एवं सिविल डिफेंस की टीम मौके पर पहुंची और चार घंटे रेस्क्यू के बाद मृतक के शव को पानी से बाहर निकाला। मृतक की पहचान रामबाबू (45) पुत्र रामजी लाल माली निवासी पांचना कॉलोनी करौली के रूप में हुई है।

### एटीएम कार्ड बदल राशि निकाली

**नदबई, (निसं)।** नदबई में दिनदहाड़े अज्ञात बदमाशों ने एक महिला को चकमा देते हुए एटीएम कार्ड बदला, बाद में महिला के बैंक खाते से करीब 62 हजार की नगदी पार कर फरार हो गए। पीड़ित महिला की सूचना पर पुलिस ने जांच करते हुए अज्ञात बदमाशों का सुराग लगाने का प्रयास किया। लेकिन, सफलता नहीं मिल सकी। विभिन्न सूत्रों की मानें तो गांव न्यौठा निवासी शीला देवी, अपने एटीएम कॉर्ड से राशि निकालने के लिए रेलवे फाटक समीप बडौदा बैंक के एटीएम पर गई। इसी दौरान दो अज्ञात बदमाशों ने झांसा देते हुए पहले, एटीएम कार्ड बदला। बाद में पीड़िता के बैंक खाते से 62 हजार की नगदी निकालते हुए मौके से फरार हो गए। मोबाइल पर राशि निकलने का मैसेज आने पर पीड़ित महिला को घटना के बारे में पता चला।


### कार्यालय अधिशाषी अभियंता, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, खण्ड-भीनमाल
Tel : 02969-220120, Email : cebhi.jal.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांक :- भीनमाल/निविदा/त.स./2025-26/929-939 दिनांक : 25.6.2025

**बिड आमंत्रण सूचना (NIB) संख्या 04-08/2025-26**

राजस्थान के राज्यपाल की ओर से निम्नलिखित कार्यों हेतु लोक निर्माण और वित्तीय नियम के पार्ट-4 नियम 334(ए) (iii) के तहत रु. 150.00 लाख तक की निविदाओं हेतु केवल जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत एवं इससे अधिक लागत की निविदाओं हेतु जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग में पंजीकृत निविदादाताओं हेतु नियमानुसार छूट के साथ एवं केन्द्र/राज्य सरकार के अधिकृत विभागों/संगठनों, केंद्रीय लोक निर्माण विभाग, रेल, डाक, जार संचार विभागों में उपयुक्त समकक्ष श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से पूर्ण धरोहर राशि के साथ ई-टेंडरिंग प्रक्रिया द्वारा निम्न ऑनलाईन बिड आमंत्रित की जाती है :-

| बिड संख्या | NIB No. PHE2526A1980 | अनुमानित लागत (लाखों में) | धरोहर राशि 2% | बिड शुल्क (रुपये) | ई-प्रक्रिया शुल्क | कार्य पूर्ण करने की अवधि |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 04/2025-26 | UBIN No....... PHE2526WSOBO4078 | 27.76 | 55520/- | 1000/- | 500/- | 02 Month |
| 05/2025-26 | PHE2526WSOBO4079 | 13.08 | 26160/- | 1000/- | 500/- | 02 Month |
| 06/2025-26 | PHE2526WSOBO4081 | 27.39 | 54780/- | 1000/- | 500/- | 02 Month |
| 07/2025-26 | PHE2526WSOBO4082 | 13.91 | 27820/- | 1000/- | 500/- | 02 Month |
| 08/2025-26 | PHE2526WSOBO4083 | 11.85 | 23700/- | 1000/- | 500/- | 02 Month |

| | |
|---|---|
| ऑनलाईन बिड उपलब्ध होने की तिथि | 27.06.025 |
| ऑनलाईन बिड डाउनलोड/अपलोड करने की अंतिम तिथि | 10.07.2025 को 2.00 पी.एम. |
| ऑनलाईन बिड खोलने की तिथि | 11.07.2025 को 6.00 पी.एम. |

बिड से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट www.dipronline.org, sppp.raj.nic.in व www.eproc.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

अधिशाषी अभियंता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग,
खंड भीनमाल

DIPR/C/8994/2025


### कांग्रेस के बागी नेता देवेन्द्र मीणा के यहां आयकर का छापा

- उदयपुर स्थित आवास एवं मुंबई में स्थित एक व्यवसायिक संस्थान पर छापा मारा

**उदयपुर, (कासं)।** आयकर विभाग की टीम ने सोमवार को उदयपुर के कांग्रेस नेता देवेन्द्र मीणा के उदयपुर स्थित आवास एवं मुंबई में स्थित एक व्यवसायिक संस्थान पर छापा मारा है।

आयकर विभाग की टीम ने सोमवार को कांग्रेस नेता देवेन्द्र कुमार मीणा के उदयपुर के सेक्टर-13 स्थित आवास पर कार्रवाई के साथ ही उनके मुबई स्थित एक प्रतिष्ठान पर भी कार्रवाई की है। हालांकि विभाग ने अभी तक खुलासा नहीं किया है कि कार्रवाई में की कुछ मिला है। विभाग की टीम कहां से आई है और किस अधिकारी के निर्देशन में कार्रवाई चल रही है अभी पता नहीं चला है। टीम के साथ स्थानीय पुलिस कुछ जवान भी तैनात है। विभाग की कार्रवाई जारी है। उल्लेखनीय है कि कांग्रेस नेता देवेन्द्र मीणा उस समय चर्चा में आये थे जब उन्होंने 2013 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस प्रत्याशी ग्रामीण सीट पर कांग्रेस की अधिकृत उम्मीदवार सज्जन कटारा के विरुद्ध ताल ठोकते हुए बागी के रूप में चुनाव लड़ा था और कांग्रेस को पराजय का मुंह देखना पड़ा था।

### रेगिस्तान में सेना का शक्ति प्रदर्शन

**जैसलमेर, (नि.सं.)।** राजस्थान से लगती भारत-पाकिस्तान सीमा पर भारतीय सेना अपना दमखम दिखाकर तकनीक के साथ अभ्यास कर रही है। जैसलमेर से लगती पाकिस्तानी सीमा के अथाह रेगिस्तान में चल रहे भारतीय सेना के अभ्यास में जवान एडवांस्ड बैटल ड्रिल्स, सटीक निशाने और बेमिसाल गतिशीलता के साथ कौशल का प्रदर्शन कर रहे हैं। इस अभ्यास में सेना ड्रोन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और सैटेलाइट टेक्नोलॉजी जैसी मॉडर्न तकनीकों का इस्तेमाल कर रही है। सीमाओं पर हर गतिविधि पर बारीकी से नजर रखी जा रही है और दुश्मन की हर साजिश को पल भर में नाकाम किया जा रहा है।


### कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता जन स्वा. अभि. विभाग, वृत्त धौलपुर
E-mail ID: se.dho.phed@rajasthan.gov.in

क्रमांकः- 935-40 दिनांकः- 27-06-2025

**ई-निविदा सूचना 01-02/2025-26**

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से पी.डब्लू.एफ.एण्ड.ए.आर. पार्टना अपेण्डिक्स 16 दिनांक 1.7.99 से लागू एवं समय समय पर वित्त विभाग द्वारा जारी संशोधित परिपत्रो (आज तक) के अनुरूप विभाग में उपर्युक्त श्रेणी में पंजीकृत एवं जो निविदा प्रपत्रो में वांछित योग्यता रखते हों से निम्न कार्य हेतु ई-टेण्डरिंग के द्वारा निविदाये आमंत्रित की जाती है। यह निविदा सूचना www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी जा सकती है तथा निविदा प्रपत्र https://eproc.rajasthan.gov.in से डाउनलोड व अपलोड किये जा सकते है।

| NIT No. | Name of Work | Estt. Cost (Rs.in lacs) | Tender Fees in Rs. | EMD in Rs. | | Last date and time in Bid downloa-ding & Submission | Bid opening date & time | Completion period A2014 | NIB No. PHE2526 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | | 2% | ½% | | | | |
| 01/2025-26 | Annual Rate Contract for providing House-hold Service Connections (HSCs) including one Year Defect Liability Period under the Jurisdiction of Division Bari | 120.00 | 2000/- | 240000 | 60000 | upto 21.7.25 60.00 PM | 22.7.25 11.00 AM | 12 months | UBN is: PHE2526 WSRC 04127 |
| 02/2025-26 | Annual Rate Contract for providing Household Service Connections (HSCs) including one Year Defect Liability Period under the Jurisdiction of Division Dholpur | 100.00 | 2000/- | 200000 | 50000 | upto 21.7.25 60.00 PM | 22.7.25 11.00 AM | 12 months | UBN is: PHE2526 WSRC 04128 |

NOTE :-
1. Tenders shall be procured and submitted only in electronic format only website http//eproc.rajasthan.gov.in
2. Bidder who intended to participate in bidding will have to procure digital certificate as per IT Act to sign their electronic bids others which are not digitally signed will not be accepted Bidder shall submit their offer in electronic format on above mentioned website after digitally signing the same.
3. If holiday is declared on the date(s) of submission & opening of tender the scheduled activity will take place on the next working day.

(राजकिरण यादव)
अधीक्षण अभियन्ता
जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग वृत्त धौलपुर

DIPR/C/9108/2025

# अवैध हथियार सप्लायर गन हाउस संचालक गिरफ्तार

## एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स और प्रतापगढ़ पुलिस का बड़ा खुलासा

**जयपुर ।** राजस्थान पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स और प्रतापगढ़ जिले की छोटी सादड़ी थाना पुलिस ने अवैध हथियार तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में बड़ी सफलता हासिल की है। संयुक्त कार्रवाई में कुख्यात अपराधी सलमान को कारतूस और हथियार उपलब्ध कराने वाले गन हाउस संचालक रमाशंकर को उत्तर प्रदेश के एटा से गिरफ्तार किया गया है।

अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स दिनेश एमएन के निर्देशन और उपमहानिरीक्षक पुलिस योगेश यादव के सुपरविजन में महानिदेशक पुलिस द्वारा अवैध हथियार तस्करी के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के तहत एजीटीएफ और प्रतापगढ़ जिले की छोटी सादड़ी थाना पुलिस ने संयुक्त रूप से यह कार्रवाई की है।

एडीजी एमएन ने बताया कि यह ऑपरेशन 28 जून 2025 को शुरू हुआ, जब छोटी सादड़ी थानाधिकारी प्रवीण टांक द्वारा राकेश राठौर पुत्र कचरू लाल निवासी मालपुरा बाजार थाना गंगधार जिला झालावाड़ नाम के व्यक्ति को एक ऑटोमेटिक देशी पिस्टल, दो खाली मैगजीन के साथ गिरफ्तार किया गया था। राकेश अवैध हथियार सप्लाई चेन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था और उसकी गिरफ्तारी इस कार्रवाई की अहम कड़ी साबित हुई।

पुलिस की एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स और प्रतापगढ़ जिले की छोटी सादड़ी थाना पुलिस ने कार्रवाई कर आरोपी को गिरफ्तारकिय।

- यूपी के एटा से पकड़ा गया कुख्यात रमाशंकर, अपराध जगत को हथियार देने का था मास्टरमाइंड

राकेश से मिली सूचना के आधार पर एजीटीएफ और छोटी सादड़ी थाना पुलिस ने अपराध जगत के बड़े नाम सलमान पुत्र शेरखान निवासी नागदा को गिरफ्तार कर उसकी निशानदेही पर 14 देशी और विदेशी हथियार और 1860 जिंदा कारतूस बरामद किए। सलमान से एजीटीएफ और थाना पुलिस की टीम इस नेटवर्क से जुड़े अन्य लोगों के बारे में लगातार पूछताछ कर रही थी। इतनी भारी मात्रा में हथियार और कारतूस मिलने पर इन हथियारों की सप्लाई करने वाले अन्य अभियुक्तों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस टीम का गठन किया गया। एडीजी एमएन के निर्देशन और प्रतापगढ़ एसपी विनीत कुमार बंसल के समन्वय में एजीटीएफ और छोटी सादड़ी थाना पुलिस की टीम द्वारा 7 जुलाई 2025 को राकेश व सलमान को कारतूस व हथियार सप्लाई करने वाले गन हाउस संचालक अभियुक्त रमाशंकर पुत्र दरबारीलाल लोधी राजपूत (59) निवासी रानी अवन्तिबाई नगर शिकोहाबाद रोड एटा (उत्तरप्रदेश) को एटा से हिरासत में लेकर गिरफ्तार किया गया। जांच में सामने आया है कि रमाशंकर काफी समय से अपनी लाइसेंसी दुकान की आड़ में मोटा मुनाफा कमाकर अपराधियों को कारतूस और हथियार उपलब्ध करा रहा था।

पुलिस आरोपी से गहनता से पूछताछ कर आगे की रणनीति तैयार कर रही है। इस कार्रवाई में एजीटीएफ के कांस्टेबल ड्राइवर सुरेश की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इस अभियान में शामिल पुलिस टीमों के सभी सदस्य, जिन्होंने मिलकर इस बड़ी कार्रवाई को अंजाम दिया, वे हैं: एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स जयपुर से पुलिस निरीक्षक सुभाष सिंह, एएसआई शंकर दयाल शर्मा, हेड कांस्टेबल कमल सिंह, सुरेश कुमार, कांस्टेबल नरेश और कांस्टेबल चालक सुरेश तथा थाना छोटी सादड़ी से एसएचओ प्रवीण टांक, एसआई निर्भय सिंह, एएसआई शिवराम, हैड कांस्टेबल मगनलाल और कांस्टेबल रामराज।

# भारतीय जीवन बीमा निगम ने नई योजनाएं शुरू की

**जयपुर।** भारतीय जीवन बीमा निगम के सीईओ और एमडी (प्रभारी) सतपाल भानु ने को नई योजनाएं शुरू कीं एलआईसी की नव जीवनऔर एलआईसी की नव जीवन सिंगल प्रीमियम। शुरू की गई दो नई योजनाएं बचत और सुरक्षा का संयोजन है और इन्हें विशेष रूप से हमारे जीवन चक्र भी विभिन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त धनरानि जुटाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

एलआईसी की नव जीवन थी (योजना 912) का उद्देश्य व्यक्तियों, विशेषकर युवा पीती की सभी जरूरतों को पूरा करना है, जो अगने सपनों, लक्ष्यों, जिम्मेदारियों को पूरा करना चाहते हैं और साथ ही सुरक्षा भी प्रदान करना है। एलआईसी की नव जीवन थी (योजना 911) सिंगल प्रीमियम पॉलिसी का उद्देश्य जीवन बीमा प्रदान करने के साथ-साथ कोप (कॉर्पस) का निर्माण करना है। वर्तमान परिवेश में जब व्याज दरें बहुत अस्थिर हैं, ये दोनों प्लान पॉलिगी अवधि के दौरान गारंटीड एडिशन प्रदान करते. हैं। यह एक सीमित प्रीमियम एंडोमेंट योजना है जो टेबुलर प्रीमियम के प्रतिशत के रूप में गारंटीड एडिशन प्रदान करता है। प्रीमियम का भुगतान 6, 8, 10 और 12 वर्षों के हिसाब से किया जा सकता है। प्रवेश के समय न्यूनतम आयु 30 दिन (पूरी) है। प्रवेश के समय अधिकतम आयु 60 वर्ष (निकटतम जन्मदिन) है, जो कि पीपीटी 6.8 और 10 वर्ष के लिए है, तथा पीपीटी 12 वर्ष के लिए 59 वर्ष (निकटतम जन्मदिन) है। चुने गए पीपीटी के अनुसार न्यूनतम पॉलिसी अवधि 10 से 16 वर्ष है, अधिकतम पॉलिसी अवधि 20 वर्ष है, प्रीमियम भुगतान अवधि 6,8,10 और 12 वर्ष है, न्यूनतम मूल बीमा राशि 5,00,000 रुपये है।

राजस्थान यूनिवर्सिटी में छात्रसंघ चुनाव बहाल करने को लेकर एनएसयूआई ने रैली निकाली और कुलगुरु को ज्ञापन दिया।

## कांग्रेसी पार्षदों ने ज्ञापन सौंपा

**कोटा, (निसं)।** कोटा में कांग्रेसी वार्डों में विकास में भेदभाव का आरोप लगाते हुए कांग्रेस के पार्षदों ने आंदोलन शुरू कर दिया है। कोटा दक्षिण निगम के उपमहापौर पवन मीणा की अगुवाई में पार्षद करीब डेढ़ किमी तक दंडवत करते हुए नगर निगम से एसी के गणेश मंदिर तक पहुंचे।

# पतंजलि ने 'दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग' लॉन्च किया

**राष्ट्रीय/हरिद्वार।** पतंजलि ने आज एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करते हुए दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग नामक उत्पाद लांच किया। यह उत्पाद आयुर्वेद ग्रंथों में उल्लेखित गंडूष विधि पर आधारित है। आयुर्वेद में इसे 'दिनचर्या' का अभिन्न हिस्सा माना गया है।

दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग का भव्य अनावरण परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज और परम् श्रद्धेय आचार्य बालकृष्ण जी महाराज एवं इंडियन डेंटल एसोसिएशन,उत्तराखंड शाखा के अध्यक्ष डॉ. राजीव बंसल,सचिव डॉ. विश्वजीत वालिया,कोषाध्यक्ष डॉ. वैभव पाहवा के कर-कमलों द्वारा किया गया।

इस अवसर पर योगऋषि स्वामी रामदेव जी ने कहा पतंजलि का यह प्रयास योग और आयुर्वेद के क्षेत्र में एक नया कीर्तिमान है। पतंजलि केवल उपचार नहीं,अपितु संस्कृति,परंपरा और विज्ञान का सामंजस्य विश्व के सामने प्रस्तुत कर रहा है। उन्होंने कहा कि आजकल लोग यह भूल गए हैं कि अपने शरीर को कैसे करना है और उसके साथकैसे करना है। पतंजलि योग और आयुर्वेद के माध्यम से इसको जनमानस को सिखाने का कार्य कर रहा है।

पतंजलि ने एक महत्वपूर्ण उपलब्धि प्राप्त करते हुए दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग नामक उत्पाद लांच किया।

- 'दन्त कांति गंडूष ऑयल पुलिंग केवल एक दैनिक क्रिया नहीं,यह एक चिकित्सा विज्ञान है,जो आज के समय की आवश्यकता है'

इस अवसर पर आचार्य बालकृष्ण ने कहा की यह उत्पाद हमारे पतंजलि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों की तीन वर्षों के अथक पुरुषार्थ और समर्पण का परिणाम है

इस अवसर पर इंडियन डेंटल एसोसिएशन,उत्तराखंड शाखा के सचिव डॉ. विश्वजीत वालिया ने कहा कि पूज्य स्वामी जी व श्रद्धेय आचार्य जी ने योग एवं आयुर्वेद के माध्यम से जनमानस को निरोगी बनाने का अभुतपूर्व कार्य किया है।

इस भव्य अनावरण समारोह में इंडियन डेंटल एसोसिएशन,उत्तराखंड शाखा के अध्यक्ष डॉ. राजीव बंसल, कोषाध्यक्ष डॉ. वैभव पाहवा, पतंजलि हॉस्पिटल के दंत विभाग प्रमुख एवं इंडियन डेंटल एसोसिएशन,हरिद्वार शाखा के सचिव डॉ. कुलदीप सिंह,पतंजलि अनुसन्धान संस्थान के उपाध्यक्ष एवं प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. अनुराग वार्ष्णेय,इंडियन डेंटल एसोसिएशन,हरिद्वार शाखा के कोषाध्यक्ष डॉ. गुरप्रीत ऑबराय तथा उत्तराखंड के कई प्रख्यात दन्त चिकित्सक उपस्थित रहे।

# शहर को गन्दा करने वाले दोषी व्यक्तियों पर हो रही कारवाई

## सीएनडी वेस्ट फैलाने वाले दोषी व्यक्तियों पर नगर निगम ग्रेटर की टीमों द्वारा की जा रही है कार्रवाई

**जयपुर ।** जयपुर शहर को स्वच्छ व सुंदर बनाने के लिए नगर निगम ग्रेटर की टीमें सतत् प्रयासरत हैं तथा शहर को गंदा करने वाले दोषी व्यक्तियों पर लगातार कारवाई कर रही हैं।

आयुक्त डॉ. गौरव सैनी ने बताया कि 1 अप्रैल 2025 से अब तक तक खुले में कचरा फेंकने, सीएनडी वेस्ट डालने, सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करने वालों, कचरा जलाने वालों सहित स्वच्छता के विभिन्न मापदण्डों का उल्लंघन करने वाले दोषी व्यक्तियों पर नगर निगम ग्रेटर की टीमों द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। जिसके तहत स्वच्छता के विभिन्न मापदण्डों का उल्लंघन करने पर 1 अप्रैल 2025 से अब तक लगभग कुल 40 लाख 34 हजार रूपये वसूल किये जा चुके है।

उन्होंने बताया कि शहर की स्वच्छता हमारे लिए प्राथमिकता है, यदि कोई भी व्यक्ति शहर को गन्दा करता है, खुले में कचरा फैंकता है, सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करता है स्वच्छता के मापदण्डों का उल्लघंन करता है तो दोषी व्यक्ति से कैरिंग चार्ज वसूल किया जायेगा। नगर निगम ग्रेटर की टीमें लगातार सफाई कार्य में जुटी है शहर को स्वच्छ रखना हर नागरिक की जिम्मेदारी है।

**नगर निगम ग्रेटर की सख्त कार्रवाई:-**

स्वच्छ सर्वेक्षण के विभिन्न मापदण्डों का उल्लंघन करने वाले जैसे खुले में कचरा डालने, सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने दोषी व्यक्तियों से 28 लाख 33 हजार से अधिक जुर्माना वसूल किया सीएनडी वेस्ट पर 8 लाख 5 हजार 600 रूपये, सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करने वाले दोषियों से 3 लाख 67 हजार 850 रूपये जुर्माना राशि वसूल की गई।

- 01 अप्रैल 2025 से अब तक 40 लाख रूपये से अधिक जुर्माना किया वसूल
- झोटवाड़ा जोन ने जुलाई माह के 7 दिनों में वसूले 75 हजार रूपये जुर्माना
- खुले में कचरा डालने, सार्वजनिक स्थानों पर गंदगी फैलाने दोषी व्यक्तियों से 28 लाख 33 हजार से अधिक जुर्माना वसूल किया

झोटवाड़ा जोन द्वारा अब तक सबसे अधिक कैरिंग चार्ज वसूल किया गया जिसके तहत जुलाई माह के मात्र 7 दिनों में 75 हजार रूपये के चालान काटे साथ ही सीएनडी वेस्ट डालकर रोड़ पर अतिक्रमण करने वाले दोषी व्यक्ति से 1 हजार रूपये प्रतिदिन के हिसाब से 55 हजार रूपये एक ही दिन में वसूल किये गये।

1 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक 1 करोड़ 99 लाख रूपये का कैरिंग चार्ज कैरिंग चार्ज/जुर्माना दोषी व्यक्तियों से वसूल किया गया।

सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग करने वालों के विरूद्ध अब तक 32 लाख रूपये जुर्माना वसूल किया जा चुका है साथ ही लगभग 2123 किलो ग्राम सिंगल यूज प्लास्टिक जब्त की गई है। नगर निगम ग्रेटर द्वारा आमजन को सिंगल यूज प्लास्टिक का उपयोग ना करने के लिये समझाइश की जा रही है साथ ही महेश नगर सब्जी मण्डी, जनता स्टोर, बापू नगर, थड़ी मार्केट मानसरोवर, मुरलीपुरा सब्जी मण्डी, जगतपुरा सब्जी मण्डी, सांगानेर सब्जी मण्डी, अम्बाबाड़ी सब्जी मण्डी सहित 8 स्थानों पर क्लॉथ वेडिंग मशीन स्थापित कर आमजन को कपड़े के थैले उपलब्ध करवाये जा रहे है। इसके साथ ही जोन स्तर एवं मुख्यालय पर स्थापित मुख्यमंत्री सद्भावना केन्द्रों के माध्यम से जरूरतमंदों तक कपड़े, जूते, किताबें, स्टेशनरी अन्य उपयोगी सामग्री पहुंचाई जा रही है। अब तक इन केन्द्रों पर लगभग 10 हजार से अधिक नागरिकों द्वारा अनुपयोगी सामान उपलब्ध करवाया गया। जो किसी अन्य जरूरतमंद के काम आ सकता है।

## बैठक सम्पन्न

**कोटा, (निसं)।** कोटा नागरिक सहकारी बैंक लि.कोटा की संचालक मण्डल की बैठक सोमवार को प्रधान कार्यालय रावतभाटा रोड़ पर आयोजित की गई। अध्यक्ष राजेश कृष्ण बिरला की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुई। प्रबंध संचालक बीना बैरवा ने बताया कि बैठक में सीआरआर व एस.एल.आर. की अनुपालना,अवधि पार ऋण की समीक्षा की।

# जयपुर विकास प्राधिकरण : 'वर्किंग ग्रुप' का गठन

अपार्टमेंट ओनरशिप एक्ट 2015 एवं नियम 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक ''वर्किंग ग्रुप'' का गठन किया।

**जयपुर।** जयपुर विकास प्राधिकरण ने अपार्टमेंट ओनरशिप एक्ट 2015 एवं नियम 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक ''वर्किंग ग्रुप'' का गठन किया है। इस कार्य समूह का उद्देश्य अपीलों के निस्तारण में तेजी लाना और संबंधित मुद्दों का समाधान करना है।

जयपुर विकास आयुक्त आनन्दी ने बताया कि जेडीए द्वारा अपार्टमेंट ओनरशिप एक्ट 2015 एवं नियम 2020 के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए एक ''वर्किंग ग्रुप'' का गठन किया गया है। उक्त वर्किंग में विभिन्न संवर्ग के अधिकारियों को इस प्रक्रिया की निगरानी के लिए शामिल किया गया है।

कार्य समूह में निम्नलिखित सदस्यों को सदस्य बनाया गया गया है:अतिरिक्त आयुक्त (पूर्व).उपायुक्त, जोन-12, उप नगर नियोजक / सहायक नगर नियोजक, जोन-12, सहायक अधिवक्ता, जोन-12 , उप नगर नियोजक / सहायक नगर नियोजक, जोन-7।

यह वर्किंग ग्रुप अपार्टमेंट ओनरशिप एक्ट के नियमों का अध्ययन करेगा और एक्ट में निर्धारित प्राधिकरण के दायित्वों, शक्तियों और कार्यों के संबंध में प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करेगा। इसके साथ ही, यह समूह समस्या निराकरण और कार्मिकों के आमुखीकरण की प्रक्रिया को भी सुनिश्चित करेगा।

## शादी करने का झांसा देकर युवती से देह शोषण

**जयपुर।** करधनी थाना इलाके में बॉयफ्रेंड ने शादी करने का झांसा देकर युवती से देह शोषण करने का मामला सामने आया है। जानकारी में सामने आया कि आरोपित अश्लील वीडियो बनाकर अब पीडित को ब्लैकमेल कर बदनाम करने की धमकी दी। इस संबंध में पीड़ित युवती थाने पहुंची और मामला दर्ज करवाया।

पुलिस ने बताया कि करधनी की रहने वाली युवती ने मामला दर्ज करवाया है कि कुछ समय पहले उसकी मुलाकात आरोपित युवक से हुई थी। बातचीत के दौरान आरोपित ने उससे दोस्ती कर मिलना-जुलना शुरू कर दिया। अपनी बातों के जाल में फंसा कर शादी करने का ऑफर रखा। आरोप है कि मिलने बुलाकर अकेले में आरोपी ने उसके साथ जबरदस्ती की।

विरोध करने पर शादी करने का वादा किया। शादी करने का झांसा देकर लगातार देहशोषण करने लगा। इस दौरान बनाए अश्लील वीडियो से ब्लैकमेल कर बदनाम करने की धमकी दी। शादी करने का दबाव बनाने पर आरोपी बॉयफ्रेंड ने मना कर दिया। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच में जुटी है।

# स्वायत्त शासन विभाग समिति का शपथ ग्रहण समारोह सम्पन्न

**जयपुर।** स्वायत्त शासन विभाग, जयपुर की विभागीय समन्वय समिति का शपथ ग्रहण समारोह सोमवार को विभाग परिसर में गरिमापूर्ण माहौल में सम्पन्न हुआ, जहां संगठनात्मक एकता, विश्वास और प्रतिबद्धता की नई बुनियाद रखी गई।

समारोह में नवनिर्वाचित अध्यक्ष शशि भूषण शर्मा, महामंत्री विकास चौधरी सहित कुल 14 पदाधिकारियों, 11 सदस्यों एवं 9 सलाहकारों ने संविधान के प्रति आस्था एवं विभागीय दायित्वों के ईमानदारीपूर्वक निर्वहन की शपथ ली।

इस अवसर पर अध्यक्ष शर्मा ने विभागीय समन्वय को सुदृढ़ करने और कर्मचारियों के हितों की सतत रक्षा का संकल्प दोहराया। उन्होंने कहा कि समिति समर्पण, संवाद और सहयोग की भावना के साथ कार्य करेगी, जिससे विभाग में कार्यसंस्कृति और बेहतर होगी। विशिष्ट सचिव एवं निदेशक इन्द्रजीत सिंह ने नवचयनित कार्यकारिणी को शुभकामनाएं दीं ।

समन्वय तथा पारदर्शिता के साथ कार्य करने की प्रेरणा दी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि समिति कर्मचारियों और विभाग के बीच सेतु बनकर रचनात्मक भूमिका निभाएगी। समारोह में विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों, पूर्व पदाधिकारियों और बड़ी संख्या में कर्मचारियों की उपस्थिति रही। आयोजन में उत्साह, संगठनात्मक ऊर्जा और भविष्य के प्रति विश्वास स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ।

# 'आवेदन से सत्यापन तक सभी प्रक्रियाओं का सरलीकरण कर तकनीकी रूप से यूजर फ्रेंडली बनाया जाए'

**जयपुर।** सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग की अतिरिक्त मुख्य सचिव अपर्णा अरोड़ा ने कहा कि पेंशन, छात्रवृति सहित विभिन्न योजनाओं के आवेदन से लेकर सत्यापन की सभी प्रक्रियाओं का सरलीकरण कर उन्हें तकनीकी रूप से यूजर फ्रेंडली बनाया जाए ताकि सरकारी योजनाओं का लाभ आमजन को तुरंत मिल सके।

- अतिरिक्त मुख्य सचिव ने ली समीक्षा बैठक, अधिकारियों को दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

अरोड़ा सोमवार को विभाग के मुख्यालय अम्बेडकर भवन में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, बाल अधिकारिता विभाग के प्रभारी अधिकारियों के साथ विभागीय योजनाओं की समीक्षा की।

अरोड़ा सोमवार को विभाग के मुख्यालय अम्बेडकर भवन में सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग, बाल अधिकारिता विभाग, विशेष योग्यजन विभाग एवं अनुजा निगम के प्रभारी अधिकारियों के साथ विभागीय योजनाओं की समीक्षा कर रही थीं।उन्होंने अधिकारियों को तकनीकी सपोर्ट के साथ लोगों की मदद करने के निर्देश दिए।उन्होंने विभिन्न योजनाओं का सिंगल इंटीग्रेटेड पोर्टल बनाते हुए सिटीजन ऐप विकसित करने के भी निर्देश दिए। अतिरिक्त मुख्य सचिव ने 3 घंटे की मैराथन बैठक लेते हुए सभी योजनाओं का पीपीटी प्रस्तुतीकरण देखा और जरूरी निर्देश दिए। उन्होंने कम आवेदन वाली योजनाओं के प्रचार-प्रसार और जागरूकता संबंधी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारीगण योजनाओं की स्वयं के स्तर पर भी मॉनिटरिंग करें। जिस स्तर पर भी प्रक्रिया को सरल किया जा सकता है उसे क्रियान्वित करवाने का प्रयास करें। अरोड़ा ने कहा कि विभाग द्वारा ऐसा मैकेनिज्म विकसित किया जाए जिससे विभिन्न योजनाओं का आवेदन, सत्यापन सहित अन्य जांचें पंचायत स्तर पर ही हो सकें। उन्होंने कहा कि ब्लॉक और जिला स्तर पर होने से प्रकरणों में देरी होने की आशंका होती है। इस दौरान पालनहार, मुख्यमंत्री अनुप्रति योजना, बाबा साहब अंबेडकर आदर्श ग्राम योजना, स्वयं सिद्धा आश्रम, महाविद्यालय आवासीय छात्रावास, मुख्यमंत्री कन्यादान, वृद्ध कल्याण, मुख्यमंत्री आयुष्मान बाल संबल सहित पेंशन, छात्रवृति संबंधी विभिन्न योजनाओं की प्रगति रिपोर्ट जानी।निदेशक आशीष मोदी ने कहा कि लाभार्थियों को कम से कम परेशानी के साथ योजनाओं का लाभ देना ही अधिकारियों का एकमात्र लक्ष्य होना चाहिए। इस दौरान अतिरिक्त निदेशक केसरलाल मीना, हरिसिंह मीना, सुमन पवार, वित्तीय सलाहकार अंजू सिंह, वीरेन्द्र सिंह, उप निदेशक दीपाली भगोतिया, अतिरिक्त निदेशक सुण्डाराम मीना, रीना शर्मा, अशोक कुमार, अरविन्द कुमार, चंद्रशेखर चौधरी सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहे।

## संतों और मुनियों की वाणी समान रूप से प्रासंगिक

**जयपुर।** पाली जिले की सुमेरपुर विधानसभा क्षेत्र के दुजाना में आचार्य भगवंत चिदानंद सूरीश्वर जी म.स. का दिव्य चातुर्मासिक प्रवेश सोमवार सुबह सादगीपूर्वक हुआ। प्रवेश उत्सव में आचार्य भगवंत चिदानंद सूरीश्वर जी म.स. का जैन संघ दुजाना की ओर से सत्कार किया गया। इस दौरान परम पूज्य चिंतानंद जी सूरीश्वर, परम पूज्य लक्ष्मी विजय जी, परम पूज्य विद्या सागर जी का भी सत्कार किया गया। संघ के अध्यक्ष अरविंद राणावत ने स्वागत वक्तव्य दिया। इस दौरान राजस्थान के देवस्थान मंत्री जोराराम कुमावत ने शिरकत कर महाराजसे आशीर्वाद लिया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मंत्री कुमावत ने कहा कि भारत देश साधु-संतों का देश है। यह देश अपने संतों और ऋषियों के अमर विचारों व दर्शन के कारण दुनिया की सबसे प्राचीन जीवंत सभ्यता है। भारतीय तीर्थंकरों, संतों और मुनियों की वाणी, उनकी शिक्षाएं विभिन्न युगों में समान रूप से प्रासंगिक हैं। उन्होंने कहा कि जैन संत की तप, तपस्या और कड़ी साधना करते हैं। मैं सौभाग्यशाली हूं कि मुझे जैन संतों का हमेशा आशीर्वाद मिलता है। उनके आशीर्वाद से ही मुझे जीवन जीने का ज्ञान मिलता है।

# जयपुर जंक्शन के बाहर से निगम प्रशासन ने हटाए अस्थाई अतिक्रमण

**जयपुर।** जयपुर जंक्शन के बाहर व्याप्त गंदगी और अस्थाई अतिक्रमण पर हेरिटेज निगम ने सोमवार को बड़ी कार्रवाई की है। हेरिटेज निगम की सिविल लाइन जोन और सतर्कता शाखा ने संयुक्त अभियान चलाते हुए दुकानों के बाहर सड़क और फुटपाथ पर हो रहे अस्थाई अतिक्रमण को हटा दिया, इसके अलावा जिन दुकानों के बाहर गंदगी पाई गई और डस्टबिन नहीं थे, उनका 49500 रुपए का जुर्माना कर दिया, साथ ही पांच ट्रक सामान भी जब्त किया गया।

- शनिवार देर रात निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल ने किया था निरीक्षण, सख्त कार्रवाई के दिए थे निर्देश

इस संबंध में सिविल लाइन जोन उपायुक्त सुनील कुमार बैरवा ने बताया कि जयपुर जंक्शन के बाहर काफी समय से गंदगी होने और अस्थाई अतिक्रमण की शिकायत मिल रही थी। इस पर हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल के निर्देश पर सोमवार को सतर्कता शाखा के साथ मिलकर अतिक्रमण को हटा दिया।

जयपुर जंक्शन के बाहर व्याप्त गंदगी और अस्थाई अतिक्रमण पर हेरिटेज निगम ने सोमवार को बड़ी कार्रवाई की।

इस दौरान कई दुकानों के बाहर कच्चे पक्के अस्थाई निर्माण को भी जेसीबी की सहायता से हटा दिया है। वहीं, दुकानों के बाहर डस्टबिन नहीं मिलने और कचरा सड़क पर फेंकने पर भी कार्रवाई करते हुए 49500 रुपए केरिंग चार्ज वसूल किया गया है। जयपुर जंक्शन के बाहर जाम की स्थिति नहीं बनें, इसके लिए लगातार मॉनिटरिंग की जाएगी। इसके अलावा व्यापारियों को सख्त हिदायत दी है कि दुकानों के बाहर दो डस्टबिन नहीं रखने पर सीज की भी कार्रवाई की जाएगी।

गौरतलब है कि हेरिटेज निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल सफाई व्यवस्था को लेकर लगातार शहर के दौरे पर है। निगम आयुक्त डॉ निधि पटेल ने एक दिन पहले शनिवार को देर रात में जयपुर जंक्शन के बाहर सफाई व्यवस्था को जांचा था। जिसमें गंदगी मिलने पर स्वास्थ्य निरीक्षक को लताड़ लगाई थी और सख्त एक्शन लेने के निर्देश भी दिए थे।

## सार-समाचार

### कालन्द्री में शिविर आयोजित

**रेवदर**, (निसं)। सिरोही जिले में रेवदर के निकट कालन्द्री में सोमवार को सरतरा ग्राम पंचायत मुख्यालय पर पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाडा के तहत शिविर का आयोजन हुआ। शिविर में जिला प्रमुख अर्जन पुरोहित प्रधान हंसमुख मेघवाल पंचायत प्रशासक पेपी देवी शिविर प्रभारी बीडीओ मंछाराम उपतहसीलदार कालन्द्री जिला परिषद सदस्य मधु देवी आदी की मौजूदगी मे शिविर का आयोजन किया गया। इस दौरान अतिथयों का स्वागत सत्कार किया। साथ ही विभिन्न विकास राजस्व पीएचडी चिकित्सा स्वास्थ्य आयुर्वेदिक पंचायतीराज वन बिजली कृषि पशुपालन सहकारिता विभाग समेत विभिन्न विभाग के अधिकारी कार्मिक मौजूद रहे। विभिन्न विभागो से सम्बन्धित कार्यो की समीक्षा कर जनहित के कार्य को त्वरित निस्तारित करने के निर्देश दिए। जिला प्रमुख ने पीएचडी को वलदरा मामावली सिलोईया मे जेजेएम स्कीम से बने पानी टंकी और घर घर पानी देने मे आ रही अनियमितता को तत्काल दुरूस्त करने और सरतरा मे रोड लाईट वोल्टेज समस्या के समाधान करने के बिजली विभाग को निर्देश दिए। प्रधान ने सरतरा में पेयजल हेतू 30 लाख स्वीकृती की जानकारी दी। इस दौरान लोगो ने नाली मरम्मत करने आरओ नियम चालू रखने की मांग रखी। सरपंच प्रतिनिधि गीरीश देवासी ने भी विचार व्यक्त किए। कार्य म का मंच संचालन सुरेश पुरोहित जुगनू ने करते हुए वलदरा मे सामान्य शिक्षा विभाग का प्राथमिक विधालय खुलवाने तथा फाचरिया वलदरा करीब दो तीन किलोमीटर डामर सडक बनाने की मांग रखते हुए कहा कि वलदरा गांव मे शिक्षा व्यवस्था समुचित नही होने से गांव से करीब 20-25० बच्चे अन्य पढ़ने जा रहे है। साथ ही फाचरिया वलदरा सडक बनने से दो दर्जन गांव के लोगो को सीधा फायदा होगा। इस दौरान वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर वीडीओ पीराराम वेलाराम पुरोहित ओटाराम चौधरी आरआई ब्रदी पटेल महेन्द्र सिंह महीपालसिह शैलसिह शंकर पुरोहित डॉ अंकिता नराणीया जेईएन बिजली पंकज पीएचडी जेईएन प्रियंका भैरूदान गोकूल देवासी मगन मेघवाल वागाराम मेघवाल बाबुलाल मेघवाल फुसाराम मेघवाल सहित कई जने मौजूद रहे।

### बच्चों ने ली नशा मुक्ति की शपथ

**बालोतरा**, (निसं)। ग्राम पंचायत सिमरखिया के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय में जुलाई माह के पहले सोमवार को बच्चों को नशा मुक्ति और तंबाकू के उपयोग से दूर रहने की शपथ दिलाई गई। विद्यालय की इस पहल का उद्देश्य युवा पीढी को नशे के दुष्परिणामों के प्रति जागरूक करना और उन्हें स्वस्थ जीवन शैली अपनाने के लिए प्रेरित करना है। कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के शिक्षकों और ग्राम पंचायत के प्रतिनिधियों ने बच्चों को संबोधित किया। उन्होंने विस्तार से बताया कि कैसे नशा व्यक्ति के स्वास्थ्य, परिवार और समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। बच्चों को यह भी समझाया गया कि तंबाकू और इसके उत्पाद कितने हानिकारक होते हैं और इनका सेवन कई गंभीर बीमारियों का कारण बन सकता है। सभी बच्चों ने एक साथ मिलकर नशा न करने और अपने आसपास दूसरों को भी इसके प्रति जागरूक करने की शपथ ली। इस अवसर पर मौजूद प्राचार्य ने कहा कि हमारा लक्ष्य है कि हमारे गांव के बच्चे नशे से दूर रहें और एक उज्जवल भविष्य का निर्माण करें। ऐसे जागरूकता कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते रहेंगे। विद्यालय प्रशासन ने कहा कि बच्चों को बचपन से ही सही दिशा देना अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कार्य म बच्चों में जिम्मेदारी की भावना पैदा करने और उन्हें एक स्वस्थ समाज के निर्माण में योगदान देने के लिए प्रोत्साहित करेगा। इस दौरान विद्यालय में विद्यार्थियों के साथ शिक्षक एवं परिजन भी उपस्थित रहे।

### दुदावा कॉलोनी बदहाल, लोग परेशान

**भीनमाल**, (निसं)। भीनमाल शहर के वार्ड संख्या 13 स्थित दुदावा कॉलोनी के रहवासी बुनियादी सुविधाओं के अभाव में नारकीय जीवन जीने को मजबूर हैं। क्षेत्रवासियों ने उपखंड अधिकारी (एसडीएम) कार्यालय पहुंचकर एक ज्ञापन सौंपा और कॉलोनी की गंभीर समस्याओं से अवगत कराते हुए शीघ्र समाधान की मांग की। ज्ञापन में कॉलोनी में व्याप्त प्रमुख समस्याओं को विस्तार से बताया गया है। कॉलोनी में कई वर्षों से नालियों और सडकों का निर्माण नहीं हुआ है, जिससे बरसात के दिनों में गंदा पानी घरों में भर जाता है। रास्तों पर कीचड व गंदगी के चलते वाहन चलाना और पैदल चलना मुश्किल हो गया है। इसके अलावा कॉलोनी में पीने के पानी की भी भारी किल्लत है। कई जगहों पर अब तक न तो पाइपलाइन बिछाई गई है और न ही नियमित जलापूर्ति हो रही है, जिससे लोगों को दूर-दराज से पानी लाना पड़ रहा है। निवासियों ने बताया कि नगरपालिका द्वारा नियमित सफाई नहीं करवाई जाती, जिससे गंदगी के ढेर लगे रहते हैं और बीमारियों का खतरा बना रहता है। वहीं, कॉलोनी में स्ट्रीट लाइटें भी खराब पडी हैं, जिससे रात के समय महिलाओं और बच्चों को असुरक्षा का सामना करना पडता है। क्षेत्रवासियों ने चेताया कि यदि जल्द ही इन समस्याओं का समाधान नहीं किया गया, तो वे उग्र आंदोलन करने को विवश होंगे। कॉलोनीवासियों ने प्रशासन से जल्द कार्यवाही कर मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाने की मांग की है।

### संतों के सानिध्य में होगा कला गुरू सम्मान

**बालोतरा**, (निसं)। संस्कार भारती की ओर से श्री गुरू पुर्णिमा के पावन पर्व पर आयोज्य कला गुरू सम्मान समारोह 2025 का आयोजन मंगलवार को सायं 4 बजे लघु उद्योग मण्डल भवन में आयोजित होगा। प्राप्त जानकारी के अनुसार संस्कार भारती के जिलाध्यक्ष डूंगर माली ने बताया कि समारोह में सानिध्य परशुरामगिरी महाराज मठ कनाना का होगा। मुख्य आतिथ्य नन्दलाल बाबाजी, वरिष्ठ प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, अध्यक्षता डां. जितेंद्र परमार जालोरी, प्रांतीय अध्यक्ष, संस्कार भारती,जोधपुर, विशिष्ठ अतिथि शान्तीलाल बालड, निवर्तमान प्रदेश अध्यक्ष,लघु उद्योग भारती, राजस्थान व पूनमचंद सुथार, प्रांतीय महामंत्री, संस्कार भारती, जोधपुर, सुरेश चितारा, प्रांतीय मंत्री, संस्कार भारती, जोधपुर, उत्तमसिंह राजपुरोहित, प्रांतीय कोषाध्यक्ष, संस्कार भारती,जोधपुर के मार्गदर्शन में आयोजित होगा। संस्कार भारती जिला महामंत्री अमित दवे ने बताया कि इस सम्मान समारोह में साहित्य विधा में पृथ्वीराज दवे, मंगलाराम पंवार, मंचीय विधा में रामेश्वर माली व इन्द्रगिरी गोस्वामी, सिवाना, लोककला विधा में राजेंद्रसिंह राजपुरोहित, सिलोर व राणाराम ढोली, बोरावास, स्थापत्य कला एवं प्राचीन धरोहर विधा में बाबुलाल सुथार व जगदीश प्रजापत, पचपदरा को सम्मानित किया जाएगा। सफल आयोजन के लिए संस्थान के समस्त प्रेरणापुंज पदाधिकारी, विधा प्रमुख और संस्कार मित्र तैयारियों के साथ जुटे हुए हैं।

### कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम किया

**भीनमाल**, (निसं)। ग्राम पंचायत फागोतरा में दीनदयाल अंत्योदय संबल शिविर में कन्या जन्मोत्सव कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाएं और बच्चियां शामिल हुई। कार्यक्रम का आयोजन महिला अधिकारिता विभाग जालोर के सहायक निदेशक योगेंद्र देथा के आदेशानुसार किया गया।जिसमें विकास अधिकारी के निर्देशन में बेटी जन्मोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। पर्यवेक्षक सोहनी विश्नोई ने कार्यक्रम में लोगों को बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओं की शपथ दिलाई। ड्रॉप आउट बालिकाओं को शिक्षा की मुख्य धारा से जुड़ने एवं स्टेट ओपन के आवेदन करवाने साथ ही लाड़ली प्रोत्साहन योजना के बारे जानकारी देते हुए विकास अधिकारी राजेन्द्र पाल के हाथों केक कटवाकर जन्मदिन की बधाई दी। इस अवसर पर सरपच पालु देवी, ग्राम सेवक भगवती देवी,नीलू देवी सहित बालिकाएं व महिलाएं उपस्थित रही।

### डॉ. सोनी आज करेंगे रात्रि चौपाल

**बालोतरा**, (निसं)। बालोतरा जिले में पाटोदी पंचायत समिति की ग्राम पंचायत साजियाली पदमसिंह में मंगलवार को अतिरिक्त जिला कलैक्टर डॉ. गुंजन सोनी रात्रि चौपाल करेंगे। प्राप्त जानकारी के अनुसार निजी सहायक प्रियंका शर्मा ने बताया कि मंगलवार को शाम 7 बजे अतिरिक्त जिला कलैक्टर डॉ. गुंजन सोनी की अध्यक्षता में पाटोदी पंचायत समिति की ग्राम पंचायत साजियाली पदमसिंह में रात्रि चौपाल होगी। उन्होंने सभी जिला एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को रात्रि चौपाल में निर्धारित समय पर उपस्थित होने के निर्देश दिए।

### नामांकित करवाने को एप लांच

**बालोतरा**, ( निसं)। निदेशालय, नागरिक सुरक्षा राजस्थान, जयपुर द्वारा नागरिक सुरक्षा स्वयंसेवक के रूप में नामांकन हेतु ऑनलाइन आवेदन करने के लिये महानिदेशक, अग्निशमन सेवा, नागरिक सुरक्षा एवं गृह रक्षा भारत सरकार द्वार जारी किया गया है। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ने बताया कि बालोतरा जिले के समस्त भूतपूर्व सैनिक ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर आवेदन कर सकते है।

# श्रावणमासीय कथा व चातुर्मास से भक्तिमय होगा जालोर : गर्ग

**जालोर**, (कासं)। श्रावणमासीय कथा एवं समरसता चातुर्मास महोत्सव कथा वाचक युवाचार्य स्वामी अभयदास महाराज के चातुर्मास कार्यक्रम की तैयारियों को लेकर राजस्थान विधानसभा मुख्य सचेतक व समिति अध्यक्ष जोगेश्वर गर्ग सहित सेवा समिति के पदाधिकारियों ने समिति कार्यालय, गुरुकुल मल्लेश्वर मठ जालोर क्लब के पीछे में पत्रकार वार्ता की।

**जालोर में श्रावणमासीय कथा एवं समरसता चातुर्मास महोत्सव को लेकर मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग प्रेस से रुबरु हुए।** फोटो-राष्ट्रदूत

राजस्थान विधानसभा मुख्य सचेतक व समिति अध्यक्ष जोगेश्वर गर्ग ने कार्यक्रम को लेकर पत्रकार वार्ता के दौरान बताया कि 11 जुलाई को युवाचार्य स्वामी अभयदास महाराज का शाम 5 बजे नगर प्रवेश होगा।नगर प्रवेश महिला महाविद्यालय आहोर रोड जालोर से रवाना होकर भक्तों के साथ पैदल कथा स्थल भगतसिंह क्रीडा मैदान पर पहुचेंगे। जहां पर ध्वज पूजन होगा। 12जुलाई को सुबह 8 बजे भक्त प्रहलाद चौक बड़ी पोल के बाहर से भव्य कलश यात्रा निकलेगी। जिसमे करीब 5 हजार माताएं-बहिनें कलश धारण करके एक जैसी वस्त्र में भाग लेंगी। कार्यक्रम में शहर के हजारों भक्त भाग लेंगे।कलश यात्रा भक्त प्रह्लाद चौक से प्रारम्भ होकर घांचीयो की पिलानी, सुभाष मार्किट,सदर बाजार, गांधी चौक, सरदार पटेलमार्ग,भारत माता चोक, हरिदेव सर्कल,अस्पताल चौराया, जालोर क्लब के आगे से कथा स्थल पहुंचेगी। जहां कथा व्यास युवाचार्य स्वामी अभयदास महाराज के मुखारबिंद से श्रीमदभागवत कथा का शुभारंभ किया जाएगा जो 12 जुलाई से 18 जुलाई तक होगा।

इसके बाद नानी बाई का मायरा, मीरा चरित्र कथा, बाबा रामदेव लीलामृत कथा रहेगी। अंत में 8 अगस्त को आशी एवं सम्मान समारोह आयोजित किया जाएगा। श्रावण के प्रत्येक सोमवार को देवाधिदेव महादेव की विशेष पूजा अभिषेक एवं अनुष्ठान होगा। कार्यक्रम के दौरान जालोर नगर सहित आस पास के गांवों के हजारों भक्त भाग लेंगे। गर्ग ने कहा कि यह अदभूत व ऐतिहासिक आयोजन होगा। श्रावणमासीय कथा एवं समरसता चातुर्मास महोत्सव से जालोर भक्तिमय होगा। साथ ही मुख्य सचेतक व समिति अध्यक्ष जोगेश्वर गर्ग द्वारा सभी पत्रकार बंधुओं को आमंत्रण पत्रिका देकर आमंत्रित किया।

पत्रकार वार्ता के दौरान समिति उपाध्यक्ष भवानीसिंह धांधिया, सचिव कानाराम मेघवाल, मीडिया प्रभारी सुरेश सोलंकी, रवि सोलंकी, गणपतसिंह बगेडिया, महेश भट्ट, दिनेश महावर, सुरेश सुंदेशा, अचलसिंह परिहार, रतन सुथार,नाथू सोलंकी, राजकुमार चौहान, गोकुलराम मेघवाल, दिलीप सोलंकी,रामेश्वर लाल प्रजापत सहित सदस्य उपस्थित थे।

श्रावणमास कथा व चातुर्मास कार्यक्रम को लेकर सोमवार को जालोर के समिति कार्यालय गुरुकुल में मातृशक्ति की बैठक हुई।

बैठक की अध्यक्षता मुख्य सचेतक विधानसभा राजस्थान व समिति अध्यक्ष जोगेश्वर गर्ग ने की। समिति की बैठक गुरुकुल कार्यालय में आयोजित हुई जिसमें शहर की मातृशक्ति ने भाग लिया मातृशक्ति को अलग-अलग मोहल्ला वाइज पत्रिका वितरण व कार्यक्रम को लेकर प्रचार प्रचार के लिए टोलिया बनाई। महिलाओं ने कहा कि हम पूरे शहर में हर घर तक पहुंचाने का पूरा प्रयास करेंगे। भाजपा जिलाध्यक्ष जसराज राजपुरोहित, सचिव कानाराम मेघवाल, कोषाध्यक्ष नंदकिशोर जेतालिया, मीडिया प्रभारी सुरेश सोलंकी, महेश भट्ट, विजय राज चौहान, दिनेश आदि मौजूद थे।

# हमें अपनी शक्ति धर्म कार्य में लगानी है : सुमति मुनि

**जोधपुर**, (कासं)। चोरड़िया भवन में चार्तुमास विराजित तत्व चिंतक सुमति मुनि ने सोमवार को अपनी देशना फरमाते हुए कहा कि श्रावक का लक्ष्य साधु बनना है। साईकल को स्टेण्ड पर खड़ी पर रखकर गति करने पर चलती नहीं है। हमें अपनी शक्ति धर्म कार्य में लगाना है। हम व सामायिक का संकल्प आत्मा की साक्षी, परमात्मा एवं गुरु की साक्षी से स्वीकार करने से हमारी आराधना सुदृढ़ होगी। भंते का अर्थ है- आत्मा, परमात्मा एवं महात्मा की साक्षी से प्रत्याख्यान करने पर अब चिंता की जरूरत नहीं है। भंते की भीतर से आवाज आने पर हमें आत्मा, परमात्मा एव महात्मा की याद करने से साधना मार्ग में प्रगति होती है।

मुनि ने कहा कि हमारी नासमझी के कारण कोई बाहरी वस्तु नहीं मिले तो कर्मों पर, माता-पिता, परिवार जन को दोष नहीं दें। हमारी आत्मा इससे पहले भी थी, वर्तमान में है व भविष्य में रहेगी। हमेशा शरीर की मिट्टी होती है। जो उत्पन्न होता है उसको समाप्त होना ही है। जन्म-मरण के मध्य आत्मा है। आत्मा ही सामायिक है। हमें जन्म-मरण की चिंता त्याग कर, अंतिम समय तक आनन्द - खुशी के भाव रहना है। सामायिक में हम वर्तमान भाव में रहते हुए प्रेम, मैत्री एवं धन्यवादभाव रखने से चिंता मुक्त हो जाते हैं। भंते,आपकी साक्षी से सामायिक स्वीकार करता हूं। समभाव में रहने का प्रयास करूंगा, कदाचित कोई कलुषता आ जाये तो आपकी शरण स्वीकार करता हूं।

इससे पूर्व महासती नगीना ने कहा परिवार वाले ही दीक्षा लेते हैं। अर्जुन के सामने परिवार था लेकिन श्रीकृष्ण ने कहा गीता की जरूरत है। हमे पहले वैराग्य तो आया लेकिन गुरु नहीं मिला। करेमि मंते में छ. आवश्यक आ जाते है। प्रत्याख्यान करने से आकाश तत्व शुद्ध होता है जिससे हम हर प्राणी को जगह देते हैं। कार्योत्सर्ग करने से वायु तत्व शुद्ध होता है इससे वात-पित्त-कफ का नाश होता है। प्रतिक्रमण करने से अग्नी तत्व शुद्ध होता है। अपनी गलतिया जानकर हमारी कषाय अग्नि बुझ जाती है, चेहरे पर ओज व तेज प्रकट होता है। वंदना करने से जलतत्व प्रकट होकर शुद्ध होता है। स्तुतिकरने से पृथ्वी तत्व शुद्ध होता है अब मैं परमात्मा की शरण में हूँ के ही हमारे मंगल एवं आधार है।

महासतीजी ने कहा कि प्याले में बासी चाय को जब तक खाली नहीं करेगे तब तक ताजीचाय का स्वाद नहीं आयेगा । हमारे विकार को निकाल करके हमें आत्मा में लीन रहना है।

# एकलव्य फाउंडेशन की बैठक आयोजित

**जालोर में एकलव्य फाउंडेशन की बैठक में 12 व 13 जुलाई को होने वाली राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता की तैयारी पर चर्चा की।** फोटो-राष्ट्रदूत

**जालोर**, (कासं)। स्थानीय निजी होटल विजय पैराडाइज में सोमवार को एकलव्य फाउण्डेशन की बैठक आयोजित की गई।

इस बैठक में एकलव्य फाउण्डेशन के तत्वावधान में आयोजित होने वाली 12 जुलाई और 13 जुलाई को राज्य स्तरीय शतरंज प्रतियोगिता की तैयारी को लेकर विस्तृत चर्चा की गई । एकलव्य फाउण्डेशन के सचिव भारत जीनगर ने बताया कि जालोर में इस प्रकार की प्रतियोगिता का प्रथम बार आयोजन हो रहा है। इस प्रतियोगिता में राजस्थान के सभी जिलों के लगभग 150 खिलाडी भाग ले रहे हैं । इस प्रतियोगिता में विभिन्न वर्ग के अंडर-9, अंडर -13, अंडर - 17, 60 और ओपन वर्ग में विभाजित करके अलग-अलग वर्ग के विजेताओं को सिल्वर मेडल ट्रॉफी तथा अन्य पुरस्कारों के साथ एक लाख, इक्कीस हजार रुपए के नगद पुरस्कार वितरित किए जाएंगे । बाहर से आने वाले सभी खिलाडियों के रहने की और भोजन की व्यवस्था एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा की गई है। इस बैठक में एक फाउण्डेशन के पदाधिकारी सम्मिलित हुए जिसमें अध्यक्ष पी. बी. सेन, सचिव भरत जीनगर, से सचिव शिव सिंह राजपुरोहित, कोषाध्यक्ष महेंद्र कुमार, सह-कोषाध्यक्ष संपत आर्य, सलाहकार डॉ पवन ओझा, टूर्नामेंट डायरेक्टर चारुल शर्मा, फिडे ऑर्बिटर मनीष ठाकुर, डिप्टी चीफ ऑर्बिटर भंवरलाल सुथार, न्याज मोहम्मद, दीपक त्रिवेदी, किशन आडवाणी आदि उपस्थित रहे।

## अमानक स्तर का घी विक्रय करने पर 2 लाख 5 हजार का जुर्माना

**जैसलमेर**, (नि.सं.)। उपभोक्ताओं को शुद्ध खाद्य सामग्री उपलब्ध कराने के उद्देश्य से विशेष अभियान के अंतर्गत न्याय निर्णय अधिकारी अतिरिक्त जिला कलैक्टर परसाराम द्वारा मैसर्स चौधरी किराना स्टोर, चांधन, अन्य के विरूद्ध प्रस्तुत इस्तगासे में नमन ब्राण्ड के घी के अमानक स्तर एवं सब स्टेण्डर्ड पाये जाने पर संयुक्त रूप से 2 लाख 5 हजार रूपये की शास्ती (जुर्माना) लगाई गई।

स्वास्थ्य विभाग की ओर से खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने कार्यवाही करते हुए मैसर्स चौधरी किराना स्टोर, मेन रोड चांधन पर जांच की जांच के दौरान इन प्रतिष्ठान पर बिक्री के लिए रखे गए नमन ब्रांड के घी के नमूने संकलित कर खाद्य विश्लेषक खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्रयोगशाला जोधपुर जांच हेतु भिजवाए गए थे। प्राप्त विश्लेषण रिपोर्ट में यह घी सब-स्टैंडर्ड (अमानक) श्रेणी का पाया गया, जो कि खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम, 2006 तथा उससे संबंधित विनियमों के स्पष्ट उल्लंघन की श्रेणी में आता है। उक्त रिपोर्ट एवं साक्ष्यों के आधार पर खाद्य सुरक्षा विभाग द्वारा चौधरी किराना स्टोर एवं अन्य के विरूद्ध न्यायालय अतिरिक्त जिला कलेक्टर जैसलमेर में नियमानुसार प्रक्रिया अपनाते हुए इस्तगासा प्रस्तुत किया। जिस पर न्याय निर्णय अधिकारी परसाराम ने संलिप्त प्रतिष्ठानों के विरुद्ध खाद्य सुरक्षा एवं मानक अधिनियम एवं धारा 51 के तहत् नियमानुसार प्रक्रिया अपनाते हुए गैरसायल पर संयुक्त रूप से 2 लाख 5 हजार रुपये का जुर्माना लगाया है।

# 20 ग्राम पंचायतों में अंत्योदय संबल पखवाड़े के शिविर आयोजित

**जालोर**, (कासं)। राज्य सरकार के निर्देशानुसार जिले में 24 जून से 9 जुलाई तक चलाए जा रहे पं.दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के दौरान सोमवार को 20 ग्राम पंचायतों में शिविरों का आयोजन किया जाकर ग्रामीणों को जनकल्याणकारी योजनाओं से लाभांन्वित किया गया।

पखवाड़े के दौरान सोमवार को जालोर उपखण्ड की तीखी, माण्डवला व बिशनगढ़, आहोर उपखण्ड की आईपुरा, वेडिया व देच्छू, बागोड़ा उपखण्ड की वाडाभाडवी व वाडानया, भीनमाल उपखण्ड की फागोतरा व जेरण, जसवंतपुरा उपखण्ड की सावीधर व बूगांव, रानीवाड़ा उपखण्ड की रानीवाड़ा कलां व मेडा, चितलवाना उपखण्ड की केसूरी व सुराचंद तथा सांचौर उपखण्ड की पांचला, मेडा जागीर, विरोल व प्रतापपुरा ग्राम पंचायत में शिविरों का आयोजन किया गया। शिविरों के दौरान लंबित पत्थरगढ़ी और सीमाज्ञान प्रकरण का निस्तारण, स्वामित्व पट्टों का वितरण, मृदा नमूनों का संग्रहण एवं मृदा स्वास्थ्य कार्ड वितरण, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा (एनएफएसए) के अंतर्गत लंबित प्रकरणों का निस्तारण एवं नवीन पात्र परिवारों एवं सदस्यों की आधार सीडिंग के कार्य किए गए। वही रास्तों व जल संरचनाओं से अतिक्रमण हटाने और कृषि विभाग द्वारा बीज वितरण, बिजली विभाग द्वारा झूलते तारों को खिंचवाने व विद्युत पोल समस्याओं का निस्तारण और वन विभाग द्वारा हरियालो राजस्थान के अन्तर्गत पौधा वितरण किया गया। शिविरों में राजस्व, ग्रामीण विकास, पंचायती राज, ऊर्जा, जलदाय, कृषि, वन, खाद्य, स्वास्थ्य, पशुपालन, शिक्षा, सामाजिक न्याय व अन्य विभागों की जनोपयोगी सेवाओं से ग्रामीणों को लाभांवित किया गया।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय अंत्योदय संबल पखवाड़े के अंतर्गत 8 जुलाई, मंगलवार को जालोर उपखण्ड की डांगरा, आंवलोज व नरसाणा, आहोर उपखण्ड की देवकी, देबावास व नोसरा, बागोड़ा उपखण्ड की कूका व सेवड़ी, जसवंतपुरा उपखण्ड की गजापुरा व सोमता, रानीवाड़ा उपखण्ड की सेवाड़ा व मोखातरा, चितलवाना उपखण्ड की हाडेचा, साउ एवं डउकियों की ढाणी व खिरोड़ी तथा सांचौर उपखण्ड की गुन्दाउ, दांतिया, भड़वल व किलवा ग्राम पंचायत में शिविरों का आयोजन किया जाएगा।

## 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत पौधारोपण

**बालोतरा**, (निसं)। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला बालोतरा भुवनेश्वर सिंह चौहान ने पंडित दीनदयाल अंतोदय संबल पखवाडे के अंतर्गत पंचायत समिति बायतु की ग्राम पंचायत लीलाला में चल रहे शिविर का निरीक्षण किया।

बालोतरा के जिला कलेक्टर द्वारा दिए गए लक्ष्य को शत प्रतिशत पूर्ण करने हेतु समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पाबंद किया तथा ग्राम पंचायत क्षेत्र से एवं अडोस पडोस से शिविर में पहुंचे पशुपालकों एवं महिला पशुपालकों के साथ कृषक गोष्ठी की गई एवं मंगला पशु बीमा योजना के बारे में जानकारी देकर प्रोत्साहित किया गया।

तहसीलदार बायतु सुरेश कुमार ने बताया कि शिविर में रास्ता खोलो अभियान के अंतर्गत जिला कलेक्टर महोदय ने जो लक्ष्य दिया था उसको हासिल कर दिया गया है। कदमी रास्तों को खुलवाकर विद्यालय में पहुंचने वाले बालक बालिकाओं को किसी प्रकार की तकलीफ नहीं हो यह सुनिश्चित किया गया। अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी भुवनेश्वर सिंह चौहान ने तहसीलदार बायतु को आज ही विद्यालय का निरीक्षण कर छात्रों को स्थाई रूप से विद्यालय तक पहुंचने और भविष्य में किसी भी प्रकार की समस्या ना हो इसके लिए उचित समाधान के निर्देश दिए। स्थानीय लीलाला ग्राम पंचायत की उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा बालिकाओं एवं बालकों के मूल निवास प्रमाण पत्र ईमित्र के माध्यम से ऑनलाइन भरवाए गए तथा अन्य पिछडा वर्ग के जाति प्रमाण के दस्तावेज भी ऑनलाइन अपलोड करके तहसीलदार बायतु को सेंड किए गए, ताकि तत्काल प्रभाव से बहुत अधिक संख्या में उपस्थित बालिकाओं के मूल निवास एवं जाति प्रमाण पत्र बनाकर शिविर की उपयोगिता को और अधिक प्रासंगिक बनाया गया। जिससे राज्य सरकार द्वारा जो जन कल्याणकारी भावना सुनिश्चित की गई है, इसका लाभ हर व्यक्ति तक पहुंचे इसको सुनिश्चित किया गया। स्थानीय सरपंच हंसराज गोदारा ने अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया तथा फुटबॉल के आकार की पानी की 1500 लीटर की टंकियो का निर्माण कर जो नवाचार किया गया। उसका अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला बालोतरा भुवनेश्वर सिंह चौहान द्वारा अवलोकन किया गया।

शिविर से प्रस्थान के समय मुख्यमंत्री सघन वृक्षारोपण महा अभियान और एक पेड मां के नाम वृक्षारोपण कार्यक्रम के तहत पौधा लगाकर आगे के शिविर हेतु प्रस्थान किया। इस अवसर पर हंसराज गोदारा सरंपच लीलाला, सुरेश कुमार तहसीलदार बायतु, डा. भंवरलाल बेनिवाल, पशु चिकित्सा अधिकारी, भवंरलाल गोदारा सहायक विकास अधिकारी, सहित अन्य राजकीय अधिकारी व कार्मिक उपस्थित रहे।

## भीनमाल में बी.एल.ओ. प्रशिक्षण संपन्न

**भीनमाल**, (निसं)। भारत निर्वाचन आयोग नई दिल्ली के निर्देशानुसार समस्त बीएलओ के प्रशिक्षण हेतु विधानसभा क्षेत्र भीनमाल 143 के बीएलओ भाग 1 से 6० तक का प्रशिक्षण विकास भवन कचहरी परिसर भीनमाल में संपन्न हुआ।

मास्टर ट्रेनर हमीर सिंह चारण व थानाराम प्रजापत ने बीएलओ कार्य पर प्रकाश डालते हुए जानकारी प्रदान की इसमें उन्होंने बीएलओ की भूमिका निर्वहन, आवेदन फॉर्म भरने का कार्य व मूल्यांकन तथा केस स्टडी पर विस्तार से बताया गया। नई दिल्ली से प्रशिक्षित ए ग्रेड बीएलओ शंकरलाल गहलोत ने वोटर हेल्पलाइन ऐप तथा बीएलओ ऐप पर कार्य करने पर विस्तार से जानकारी प्रदान की गई। ऐप में डाउनलोड, लोगीन, होम पेज, फॉर्म आवेदन 6, 6क, 6ख, 7 व 8 सबमिट करने की जानकारी विस्तार से प्रोजेक्ट के माध्यम से बतायी गई इसमें चेक लिस्ट, घर-घर सर्वे व मतदान केंद्र में सुविधाओं को अपडेट पर विस्तार से बताया गया । इसी प्रकार वोटर हेल्पलाइन ऐप पर अद्यतन की जानकारी प्रदान की गई। एएलएमटी हमीर सिंह ने ऑनलाइन एसेसमेंट के साथ-साथ संपूर्ण प्रशिक्षण का संचालन किया। प्रशिक्षण में प्रोजेक्टर की व्यवस्था सरवन कुमार जीनगर वरिष्ठ अध्यापक ने की। इसी प्रकार आगामी 8 व 9 जुलाई 2025 तथा 14 व 15 जुलाई 2०25 को भी शेष बीएलओ का प्रशिक्षण विकास भवन में आयोजित किया जाएगा।

# परिवेदनाओं का त्वरित निस्तारण करें : डॉ. गावंडे

**जालोर के कलैक्ट्रेट सभागार में जिला कलैक्टर डॉ.प्रदीप के .गावंडे की अध्यक्षता में अधिकारियों की साप्ताहिक बैठक आयोजित हुई।** फोटो-राष्ट्रदूत

**जालोर**, कासं)। जिला कलैक्टर डॉ प्रदीप के. गावंडे की अध्यक्षता में सोमवार को कलेक्ट्रेट सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक संपन्न हुई जिसमें संपर्क पोर्टल व विभागी योजनाओं की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

बैठक के दौरान जिला कलक्टर डॉ. प्रदीप के. गावंडे ने केंद्र सरकार व राज्य सरकार की विभिन्न फ्लैगशिप योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए विभागीय अधिकारियों को प्रभावी मॉनिटरिंग करने के निर्देश दिए। उन्होंने जल जीवन मिशन, लाडो प्रोत्साहन योजना, अमृत योजना, कुसुम योजना, स्वामित्व योजना, मुख्यमंत्री जल स्वावलंबन अभियान 2.0, प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान, कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान, पंच गौरव योजना सहित विभिन्न योजनाओं की समीक्षा करते हुए संबंधित विभागीय अधिकारियों को इन योजनाओं के माध्यम से अधिक से अधिक पात्र व्यक्तियों को लाभान्वित करने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर डॉ प्रदीप के. गावंडे ने संपर्क पोर्टल पर प्राप्त परिवेदनाओं को विभागवार समीक्षा की तथा विभागीय अधिकारियों को संपर्क पोर्टल पर प्राप्त आमजन की परिवेदनाओं का त्वरित रूप से निस्तारण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि विभागीय अधिकारी औसत समय में कमी लाते हुए परिवेदनाओं का गुणवत्तापूर्ण समाधान सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी नंदकिशोर राजोरा, डिस्कॉम एसई धर्मेन्द्र प्रजापति, पीएचईडी के एसई संजय शर्मा, महिला अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक योगेन्द्र देथा, केन्द्रीय सहकारी बैंक के प्रबंधक नारायण सिंह, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उप निदेशक भगवानाराम चौधरी सहित कई जने उपस्थित रहे।

# बिलाड़ा स्टेशन का रेलवे कोड बदला

**जोधपुर** (कासं)। रेलवे ने उत्तर पश्चिम रेलवे के बिलाड़ा रेलवे स्टेशन के रेलवे कोड में परिवर्तन किया है।

जोधपुर मंडल के डीआरएम अनुराग त्रिपाठी ने बताया कि इंडियन रेलवे कॉन्फ्रेंस एसोसिएशन द्वारा जारी पत्र के अनुसार उत्तर पश्चिम रेलवे के जोधपुर मंडल पर बिलाड़ा रेलवे स्टेशन के रेलवे कोड को नए अल्फा कोड में परिवर्तित किया गया है। इसके साथ ही उपरोक्त स्टेशन का संशोधित वर्णमाला कोड तदनुसार आरबीएस,पीआरएस एवं यूटीएस में फीड किया जा रहा है।

मैं अपनी बड़ी बहन के चेहरे पर मुस्कान लाना चाहता था, और जब भी मेरे हाथ में गेंद होती थी तो मुझे उसके संघर्ष की याद आती थी।
– आकाश दीप

भारतीय गेंदबाज, मैच जीतने वाले प्रदर्शन को अपने बहन के नाम करते हुए।

# खेल जगत

**आज का खिलाड़ी**

## मनु भाकर

**पेरिस** ओलंपिक में दो मेडल जीतने वाली मनु भाकर को कजाकिस्तान में होने वाली 16वीं एशियाई चैंपियनशिप के लिए भारतीय निशानेबाजी टीम में जगह मिली है। 16 से 30 अगस्त तक होने वाले इस टूर्नामेंट के लिए सोमवार को 35 सदस्यीय टीम घोषित की गई है। मनु इसमें शामिल एकमात्र ऐसी निशानेबाज हैं जो दो व्यक्तिगत स्पर्धा में हिस्सा लेंगी।भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ द्वारा घोषित अन्य टीमें सितंबर-अक्टूबर में होने वाले आईएसएसएफ जूनियर वर्ल्ड कप और जूनियर एशियाई चैंपियनशिप के लिए हैं, जो सीनियर प्रतियोगिता के साथ ही होगी।

**क्या आप जानते हैं ?...** तेज गेंदबाज आकाश दीप ने बर्मिंघम में इंग्लैंड के खिलाफ एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी के दूसरे टेस्ट में अपने मैच जीतने वाले प्रदर्शन को अपनी बड़ी बहन को समर्पित किया।

# सपाट पिच और ड्यूक्स बॉल इंग्लैंड में टेस्ट क्रिकेट के सार को खत्म कर रहा है : गिल

बर्मिंघम, 7 जुलाई। भारतीय टीम के कप्तान शुभमन गिल का मानना है कि सपाट पिचों और ड्यूक्स गेंद का संयोजन इंग्लैंड में टेस्ट क्रिकेट के सार को खत्म कर रहा है। इंग्लैंड को 336 रनों से हराने के बाद परिस्थितियों को लेकर पूछे गये सवाल के जवाब में गिल ने कहा, गेंदबाजो के लिए यह बहुत मुश्किल हो जाता है। जब विकेट से भी ज्यादा, गेंद बहुत जल्दी नरम और खराब हो जाती है। मुझे नहीं पता कि यह क्या है मौसम, विकेट या कुछ और लेकिन गेंदबाजों के लिए इन परिस्थितियों में विकेट लेना बहुत कठिन हो जाता है। एक टीम के रूप में, जब आपको पता होता है कि विकेट लेना मुश्किल है और रन आसानी से बन रहे हैं, तो ऐसे में बहुत सी चीजें आपके नियंत्रण से बाहर हो जाती हैं।

गिल ने एजबेस्टन में दो पारियों में 269 और 161 रन बनाने को लेकर कहा, कभी-कभी, विशेषकर जब आप कप्तान होते हैं, तो मुझे लगता है कि आपको उदाहरण पेश करना होता है ताकि जब भी कोई दूसरा खिलाड़ी उस स्थिति में हो, तो आप उस खिलाड़ी को निर्देश दे सकें। 'यही टीम को अभी चाहिए और आपको हमेशा अपनी व्यक्तिगत इच्छाओं के बजाय टीम को पहले रखना चाहिए।' या कभी-कभी आप कुछ चीजे आजमाना चाहते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि अगर आप टीम को अपने से आगे रखते हैं, तो आप हमेशा सही दिशा में या सही रास्ते पर चलेंगे और यही मैं इस मैच में करना चाहता था। जब मैं मैदान पर हूं यथासंभव लंबे समय तक खेलना चाहता हूं। जब तक कोई अच्छी गेंद मुझे आउट कर देती है।

भारत की बल्लेबाजी की पूरी ताकत को देखने के बाद गिल ने मजाक में कहा कि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि इंग्लैंड फिर से इतनी सपाट पिच बनाएगा। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें मध्य ओवरों के दौरान कुलदीप यादव की कलाई की स्पिन की कमी खलती है। उन्होंने कहा कि उनके लिए कुलदीप जैसी गुणवत्ता वाले गेंदबाज को बाहर रखना आसान नहीं था, लेकिन उन्हें लगा कि उन्हें थोड़ी गहराई की आवश्यकता है जो वॉशिंगटन सुंदर दे सकते थे और उन्होंने दी भी।

भारत को इतने लंबे टेस्ट मैच खेलने की आदत नहीं है। घरेलू पिचों पर स्पिन को मदद मिलती है और जब भारत बाहर खेलता है तो उसे हरी घास वाली पिच मिलती है। उन्होंने कहा, निश्चित रूप से इससे हमें बहुत मदद मिली। मैं कहूंगा कि भारत में जब हम खेलते हैं तो अधिकतर टेस्ट मैच पांच दिन तक नहीं चलते। लेकिन सौभाग्य से जब हम यहां खेलते हैं तो ज्यादातर दिन हम बल्लेबाजी करते हैं और क्षेत्ररक्षण नहीं करते, इसलिए यह हमारे लिए अच्छा है। पहली पारी में भी, मुझे लगता है कि हमने लगभग 90 ओवर क्षेत्ररक्षण किया, जो लगभग एक दिन के बराबर है। इसलिए मुझे लगता है कि यह अच्छा है। मुझे लगता है कि सीरीज में भी, आने वाले मैचों में अगर आप लगातार रन बनाने में सक्षम हैं और 400 या 300 के आसपास का स्कोर बनाते हैं, तो हम हमेशा खेल में बने रहेंगे।

उन्होंने कहा, मुझे लगता है कि कम से कम थोड़ी मदद तो मिलनी ही चाहिए। अगर गेंद कुछ कर रही है, तो आपको खेलने में मजा आता है। अगर आपको पता है कि मदद केवल 20 ओवर में ही मिलेगी और फिर आपको शेष दिन रक्षात्मक होकर यह सोचना है कि रन कैसे रोकें, तो खेल अपना सार खो देता है।

## भारत की पहली जीत के बाद बड़ा फेरबदल, वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप की लेटेस्ट पॉइंट टेबल

बर्मिंघम, 7 जुलाई। शुभमन गिल की कप्तानी में टीम इंडिया ने एजबेस्टन टेस्ट में इंग्लैंड को पटकनी देकर वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2025-27 चक्र में अपनी पहली जीत दर्ज की है। भारत ने इस दौरान इंग्लिश टीम को 336 रनों के बड़े अंतर से हराया। ये भारत की इतिहास में विदेशी जमीं पर सबसे बड़ी जीत है। इस जीत के साथ ही डब्ल्यूटीसी की अंक तालिका में भी बदलाव हुआ है। ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका टॉप 2 में मौजूद हैं। ऑस्ट्रेलिया ने 2 में से 2 मैच जीते हैं, 24 अंकों के साथ वह पहले नंबर पर है। दूसरे नंबर पर श्रीलंका है, जिसने 1 मैच जीता है और एक मैच ड्रॉ खेला है। श्रीलंका के 16 अंक हैं। टीम इंडिया इस जीत के बाद तीसरे नंबर पर आ गई है। टीम इंडिया ने 1 मैच जीता और 1 हारा है। इस टेस्ट से पहले इंग्लैंड टॉप 2 में थी, लेकिन अब खिसककर चौथे नंबर पर आ गई है। भारत और इंग्लैंड के 12-12 अंक हैं।

# लॉर्ड्स टेस्ट से पहले इंग्लैंड कप्तान स्टोक्स ने मानी हार!

बर्मिंघम, 7 जुलाई। टीम इंडिया के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह एजबेस्टन टेस्ट में नहीं खेले लेकिन इसके बावजूद इंग्लैंड को भारतीय टीम ने घुटनों पर ला दिया। भारत ने एजबेस्टन टेस्ट 336 रनों से जीता। वहीं अब इस करारी हार के बाद इंग्लैंड की टीम में खौफ का माहौल है। बेन स्टोक्स दरअसल, बुमराह की वापसी को लेकर परेशान हैं।

उन्होंने तो यहां तक कह दिया कि जसप्रीत बुमराह जैसे गेंदबाज के खिलाफ तैयारी करना ही नामुमकिन है।दरअसल, एजबेस्टन टेस्ट जीतने के बाद भारतीय कप्तान शुभमन गिल ने कहा कि बुमराह 10 जुलाई से शुरू होने वाले तीसरे टेस्ट में वापसी करेंगे स्टोक्स इस बार से ज्यादा खुश नहीं थे कि उन्हें एक बार फिर बुमराह के बारे में सवालों के जवाब देने होंगे।

बेन स्टोक्स ने कहा कि, मैंने सोचा था कि मैं बिना जसप्रीत बुमराह के सवाल के प्रेस कॉन्फ्रेंस पूरी कर लूंगा। हम इतनी बार एक-दूसरे के खिलाफ खेलते हैं कि हमें पता है कि क्या सामना करना पड़ेगा। हम इसे ट्रेनिंग में भी लागू करते हैं। हम साइड आर्म गेंदबाजी के खिलाफ प्रैक्टिस करते हैं लेकिन वो बुमराह मैच में करते हैं वैसा प्रैक्टिस में कर पाना मुश्किल होता है।

**जसप्रीत बुमराह लॉर्ड्स में वापसी करेंगे तो क्या इंग्लैंड की टीम जोफ्रा आर्चर को उतारेगी?**

इस पर स्टोक्स ने कहा कि वो उनकी हालत देखकर ही कोई फैसला लेंगे। स्टोक्स का मनना है कि एक टीम के तौर पर इंग्लैंड को संतुलित रहना होगा, न तो जीत के बाद बहुत उत्साहित होना चाहिए और न ही हार के बाद बहुत निराश। उन्होंने कहा कि, हमने कुछ बेहतरीन जीत हासिल की हैं और कुछ बुरी हार भी देखी हैं। मुझे लगता है कि मैं और मेरी टीम इन उतार-चढ़ावों में संतुलित रहने में अच्छे हैं।

## पृथ्वी शॉ महाराष्ट्र के लिए खेलेंगे

मुम्बई, 7 जुलाई। महाराष्ट्र क्रिकेट संघ ने कहा है कि पृथ्वी शॉ घरेलू क्रिकेट में अब महाराष्ट्र के लिए खेलेंगे। महाराष्ट्र क्रिकेट के अध्यक्ष रोहित पवार ने कहा कि शॉ का अंतरराष्ट्रीय और आईपीएल अनुभव कीमती है और टीम आने वाले सत्रों में 'पृथ्वी के इस नए सफर में पूरी मजबूती से साथ खड़ी' रहेगी। शॉ ने एक बयान में कहा, अपने करियर के इस पड़ाव पर महाराष्ट्र टीम से जुड़ना मेरे क्रिकेट करियर के विकास में मदद करेगा। मैं मुंबई क्रिकेट संघ का वर्षों से मिले अवसरों और समर्थन के लिए बेहद आभारी हूं। पिछले रणजी ट्रॉफी में टीम को सात में से केवल दो जीत मिली थी और वे अपने ग्रुप से क्वालिफाई नहीं कर सके। सैयद मुश्ताक अली टी-20 ट्रॉफी के ग्रुप चरण में भी 3-3 के जीत-हार का रिकॉर्ड रहा। टीम पहले दौर में ही बाहर हो गई। लेकिन विजय हजारे ट्रॉफी की एक-दिवसीय प्रतियोगिता में महाराष्ट्र ने अपने ग्रुप में शीर्ष स्थान हासिल किया और सेमीफाइनल में वे विदर्भ से हार गए थे। शॉ ने 58 प्रथम श्रेणी मुकाबलों में 46.02 की औसत से 4556 रन बनाए हैं, लेकिन पिछले वर्ष उन्हें खराब फिटनेस और अनुशासन की कमी के चलते मुंबई रणजी टीम से बाहर कर दिया गया था। उन्होंने आखिरी बार मुंबई के लिए दिसंबर 2024 में सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी के फाइनल में खेला था। लिस्ट-ए मुकाबलों में उनके नाम 55.72 की औसत और 125.74 के स्ट्राइक रेट के साथ 3399 रन हैं। टी-20 मैचों में उन्होंने 51.54 के स्ट्राइक रेट और 25.01 की औसत से 2902 रन बनाए हैं। वह आईपीएल 2025 की बड़ी नीलामी में भी नहीं बिके थे। उल्लेखनीय है कि पिछले महीने शॉ ने मुंबई से टीम बदलने के लिए अनापत्ति प्रमाण पत्र (एनओसी) मांगा था। जून के आखिरी में एनओसी मिल गई थी। उस समय शॉ ने कहा था, अपने करियर के इस मोड़ पर मुझे एक और राज्य संघ के अंतर्गत पेशेवर क्रिकेट खेलने का एक अच्छा अवसर मिला है, जो मुझे एक क्रिकेटर के रूप में और अधिक विकसित होने में मदद करेगा।

## भारत की जीत में 7 अंक का रहा अहम योगदान

नई दिल्ली, 7 जुलाई। भारत ने इंग्लैंड के खिलाफ दूसरे टेस्ट में बर्मिंघम में अपनी पहली टेस्ट जीत दर्ज की और इस जीत में सात अंक का महत्वपूर्ण योगदान रहा। क्रिकेट के आंकड़ेविद श्रीकांत पोद्दार ने बताया कि इस जीत में सात अंकों की कहीं न कहीं प्रधानता दिखाई दी। यह मैच साल के सातवें महीने में खेला गया और इसका अंत 187वें दिन हुआ। पहली पारी में भारत ने 587 और दूसरी पारी में 427 रन बनाये। इंग्लैंड ने पहली पारी में 407 रन बनाये। पहली पारी में भारत के दो खिलाड़ी एक ही स्कोर पर आउट हुए। आठवां और नौवां विकेट 574 के स्कोर पर गिरा। इंग्लैंड के भी दो खिलाड़ी एक ही स्कोर पर आउट हुए। इंग्लैंड ने 407 के स्कोर पर नौवां और दसवां विकेट गंवाया।

श्रीकांत ने बताया कि इस मैच की सबसे बड़ी साझेदारी 303 रन की रही जोकि 387 के स्कोर पर टूटी। भारत ने पहले दिन की समाप्ति पर सात विकेट अपने हाथ में रखे और दूसरे दिन सात विकेट गंवाए और 277 रन बनाये। इंग्लैंड ने दूसरे दिन भी सात विकेट हाथ में रखते हुए 77 रन बनाये और तीसरे दिन सात विकेट गंवाए।

भारत ने मैच की दोनों पारी में कुल 1014 रन बनाये जिसका एक पारी का औसत 507 आता है। इस मैच में लंच से पहले सबसे ज्यादा रन तीसरे दिन बने जो 172 रन थे। श्रीकांत ने बताया कि इंग्लैंड की दूसरी पारी 271 रन पर सिमटी और भारत के दो गेंदबाजों ने इंग्लैंड के कुल 17 विकेट लिए। मोहम्मद सिराज ने दोनों पारियों में सात और आकाशदीप सिंह ने 10 विकेट लिए।

# संजोग गुप्ता आईसीसी के नए मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त

दुबई, 7 जुलाई। संजोग गुप्ता को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) का मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया है। संजोग गुप्ता सोमवार को आईसीसी के सातवें मुख्य कार्यकारी के तौर पर इस वर्ष जनवरी में पद छोडने वाले ज्योफ एलार्डिस का स्थान लेंगे। इससे पहले संजोग जियोस्टार में खेल और लाइव अनुभव के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) थे।

आईसीसी के अध्यक्ष जय शाह ने एक बयान में कहा, मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि संजोग गुप्ता को आईसीसी का सीईओ नियुक्त किया गया है। संजोग के पास खेल रणनीति और व्यावसायीकरण का व्यापक अनुभव है, जो आईसीसी के लिए अमूल्य होगा। वैश्विक खेलों के साथ-साथ मीडिया और मनोरंजन परिदृश्य की उनकी गहरी समझ, क्रिकेट प्रशंसकों के दृष्टिकोण और प्रौद्योगिकी के प्रति उनके जुनून के बारे में उनकी निरंतर जिज्ञासा के साथ मिलकर

आने वाले वर्षों में खेल को आगे बढ़ाने की हमारी महत्वाकांक्षा में आवश्यक साबित होगी। उन्होंने कहा, हमारा लक्ष्य पारंपरिक सीमाओं से आगे बढ़ना और क्रिकेट को ओलंपिक में एक नियमित खेल के रूप में स्थापित करना है, दुनिया भर में इसका विस्तार करना और इसके मुख्य बाजारों में इसकी जड़ें गहरी करना है।

आईसीसी ने कहा, इस पद के लिए 25 देशों के उम्मीदवारों से 2500 से अधिक आवेदन आए थे, जो इस पद की अंतरराष्ट्रीय अपील और महत्व को दर्शाता है। उम्मीदवारों में खेल के शासी निकायों से जुड़े अगुवा से लेकर विभिन्न क्षेत्रों के वरिष्ठ कॉर्पोरेट अधिकारी शामिल थे।

अपनी नियुक्ति को लेकर संजोग गुप्ता ने कहा, यह अवसर मिला सौभाग्य की बात है, खास तौर पर ऐसे समय में जब क्रिकेट अभूतपूर्व विकास के लिए तैयार है और दुनिया भर में लगभग दो अरब प्रशंसकों का जोशीला समर्थन प्राप्त है। यह खेल के लिए रोमांचक समय है क्योंकि प्रमुख आयोजनों का कद बढ़ रहा है, व्यावसायिक रास्ते बढ़ रहे हैं और महिलाओं के खेल जैसे अवसरों की लोकप्रियता बढ़ रही है। लॉस एंजिल्स 2028 ओलंपिक खेलों में क्रिकेट का शामिल होना और प्रौद्योगिकी अपनाने में तेजी से वृद्धि दुनिया भर में क्रिकेट के लिए बल-गुणक के रूप में कार्य कर सकती है।

## श्रीलंका ने बांग्लादेश के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए टीम की घोषणा की

कोलंबो, 7 जुलाई। श्रीलंका ने गुरुवार से बंगलादेश के खिलाफ शुरू होने वाली तीन टी-20 मैचों की सीरीज में के लिए अपनी टीम की घोषणा कर दी है।श्रीलंकाई चयनकर्ताओं ने टीम ऑलराउंडर दासुन शनाका और चामिका करूणारत्ने को चुना है। दासुन शनाका लगभग एक साल बाद टीम में वापसी कर रहे हैं। पिछले साल टी-20 में पदार्पण करने वाले 22 वर्षीय खिलाड़ी ने अब तक केवल चार मैच खेले है। टीम में ईशान मलिंगा को भी जगह दी गई हैं। बंगलादेश के खिलाफ टी-20 सीरीज के लिए श्रीलंका की टीम इस प्रकार है:- चैरिथ असलांका (कप्तान), पथुम निसांका, कुसल मेंडिस, दिनेश चांडीमल, कुसल परेरा, कामिंदु मेंडिस, अविष्का फर्नांडो, दासुन शनाका, डुनिथ वेलालेज, वानिंदु हसरंगा, महेश तीक्षणा, जेफरी वेंडरसे, चमिका करुणारत्ने, मथीशा पथिराना, नुवान तुषारा, बिनुरा फर्नांडो और ईशान मलिंगा। श्रीलंका बनाम बंगलादेश पहला टी-20 मैच 10 जुलाई को पल्लेकेले, दूसरा मैच 13 जुलाई को दांबुला में तथा तीसरा मुकाबला 16 जुलाई को कोलंबो में खेला जायेगा।

## कनक ने लहराया भारत का परचम

लखनऊ, 7 जुलाई। लखनऊ स्थित डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय की छात्रा स्वाति और कनक सिंह ने युगांडा पैरा बैडमिंटन इंटरनेशनल टूर्नामेंट 2025 में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक जीतकर भारत का मान बढ़ाया है। स्वाति ने महिला एकल एसयू-5 वर्ग में रजत, महिला युगल एसएल3-एसयू5 में स्वर्ण और मिक्स्ड डबल्स में कांस्य पदक हासिल किया। एक से छह जुलाई तक युगांडा की राजधानी कैंपाला में आयोजित इस प्रतियोगिता में 50 से अधिक देशों के पैरा बैडमिंटन खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया।

## वेस्टइंडीज को 133 रनों से हराकर ऑस्ट्रेलिया ने सीरीज में बनाई अजेय बढ़त

सेंट जॉर्ज, 7 जुलाई। नेथन लायन और मिचेल स्टार्क (तीन-तीन विकेट) की शानदार गेंदबाजी के दम पर ऑस्ट्रेलिया ने दूसरे टेस्ट मैच के चौथे दिन वेस्टइंडीज को 133 रनों से हरा दिया। इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने तीन टेस्ट मैचों की सीरीज में 2-0 से अजेय बढ़त बना ली हैं।

ऑस्ट्रेलिया द्वारा दिये गये 277 रनों के लक्ष्य जवाब में दूसरी पारी में बल्लेबाजी करने उतरी वेस्टइंडीज के बल्लेबाज ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे अधिक देर तक नहीं टिक सकी और उनकी पूरी टीम 34.3 ओवर में 143 रन पर सिमट गई। कप्तान रॉस्टन चेज ने वेस्टइंडीज के लिए सर्वाधिक 34 रन बनाये। इसके आलवा शमार जोसेफ (24), शाई होप (17), ब्रैंडन किंग (14), अल्जारी जोसेफ (13) और केसी कार्टी (10) रन बनाकर आउट हुये। एंडरसन फिलीप 11 रन बनाकर नाबाद रहे। पहली पारी में 60 और दूसरी परी में 30 रन बनाने वाले एलेक्स कैरी को उनकी शानदार बल्लेबाजी के लिए प्लेयर ऑफ द मैच से नवाजा गया।

## मुल्डर दक्षिण अफ्रीका के लिए तिहरा शतक बनाने वाले दूसरे बल्लेबाज बने

बुलवायो, 7 जुलाई। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान वियान मुल्डर ने टेस्ट क्रिकेट का इतिहास का पांचवां सबसे बड़ा व्यक्तिगत स्कोर बनाते हुए 334 गेंदों पर नाबाद 367 रनों की पारी खेलकर रिकार्ड बनाया। मुल्डर ने इस पारी में 49 चौके चार चार छक्के लगाते हुए 109.88 के स्ट्राइक रेट से नाबाद 367 रन बनाकर टेस्ट क्रिकेट में तिहरा शतक बनाने वाले दूसरे दक्षिण अफ्रीकी बल्लेबाज बनने की उपलब्धि हासिल की। उनसे पहले हाशीम अमला ने 2012 में नाबाद 311 रन बनाए थे। हालांकि वह ब्रायन लारा के नाबाद 400 रन के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तिगत रिकॉर्ड को तोड़ने से चूक गए। उन्होंने 297 गेंदों में अपना तिहरा शतक पूरा किया। उन्होंने दूसरा सबसे तेज तिहरा शतक बनाया। पहले नंबर पर वीरेंद्र सहवाग हैं, जिन्होंने 2008 में दखिण अफ्रीका के खिलाफ 278 गेंदों में तिहरा शतक बनाया था। लंच से पहले मुल्डर लैन हटन के 364 और गैरी सोबर्स के नाबाद 365 को पार कर गए। इसके साथ ही वह टेस्ट इतिहास में शीर्ष पांच व्यक्तिगत स्कोर बनाने वाले बल्लेबाजों शूमार हो गए। उनसे ऊपर सिर्फ महेला जयवर्धने (374), ब्रायन लारा (375), मैथ्यू हेडन (380) और ब्रायन लारा (नाबाद 400) हैं।

## महिला क्रिकेट में स्पेशल टास्क एडवोकेट टीम बनी चैम्पियन

जयपुर, 7 जुलाई। वीरांगना वेलफेयर के तत्वावधान में आयोजित वूमेन प्रीमियर क्रिकेट लीग 2025 का जय क्लब में फाइनल हुआ।क्रिकेट प्रतियोगिता में महिला खिलाडियों ने उत्कृष्ट खेल भावना का परिचय देते हुए खेल प्रतिभा का परिचय भी दिया। फाइनल मुकाबले पहले बल्लेबाजी करते हुए सिन्दूर टीम ने 8.3 ओवर में 36 रन बनाएं इसमें सर्वाधिक रन अनन्या 9 रन, शानू 5 रन, मनस्वी 1 रन, चारु 1 रन, यशस्वी 1 रन बनाए जिसमें स्पेशल टॉक एडवोकेट में गेंदबाजी करते हुए ईरान ने 2 ओवर 3 विकेट लिए सानिया ने दो बार में एक विकेट लिया रिद्धिमा ने एक ओवर में 1विकेट लिया स्पेशल टॉक एडवोकेट ने बल्लेबाजी करते हुए 40 रन बनाए आगे जिसमें सर्वाधिक सानिया ने रन 18 ,रिद्धिमा ने 10 रन, आरती 5 रन, ईरान 4 रन , माफिया 1 रन ने बनाए सिन्दूर टीम में गेंदबाजी करते हुए यशस्वी ने 2 ओवर में एक विकेट लिए और मनस्वी ने 2 ओवर में एक विकेट लिया और शानू ने एक रन आउट किया स्पेशल टास्क एडवोकेट टीम विजय हुई मैन ऑफ द मैच सानिया रही। वूमेन प्रीमियर क्रिकेट लीग 2025 के फाइनल के अवसर पर मुख्य अतिथि के उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी विश्नोई विशिष्ट बाबा यश शर्मा मौजूद रहे।अतिथियों ने कहा कि वीरांगना वेलफेयर का यह प्रयास सराहनीय और प्रेरणादायक है। 3 जुलाई से 6 जुलाई 2025 तक जय क्लब, जयपुर में आयोजित हो था। इस चार दिवसीय महिला क्रिकेट प्रतियोगिता में कुल 6 टीमें भाग लिया । प्रतियोगिता लीग-कम-नॉकआउट प्रारूप में खेली जा रही है, जिसमें कुल 9 मैच हुए । विजेता टीम को 21,000 का नकद पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया किया । वीरांगना वेलफेयर अध्यक्ष श्रीमती सीमा राठौड़ ने कहा, यह आयोजन महिला खिलाडियों के आत्मबल को मजबूती देगा और उन्हें खेल के जरिए समाज में नई पहचान दिलाने का अवसर प्रदान करेगा। वूमन प्रीमियर क्रिकेट लीग 2025 केवल एक खेल प्रतियोगिता नहीं, बल्कि नारी शक्ति के जज्बे और संघर्ष का उत्सव है। वूमेन प्रीमियर क्रिकेट लीग सहयोग के रूप में अल्फा फीमेल राइडर्स, बाइक राइडर्स ग्रुप, अखिल भारतीय क्षित्रय महासभा ट्रस्ट रहे।

## शाहपुरा खेल स्टेडियम में ग्रीष्मकालीन क्रीड़ा प्रशिक्षण शिविर क्रीड़ा परिषद द्वारा आयोजित

जयपुर, 7 जुलाई। राजस्थान सरकार द्वारा संचालित "पंच गौरव" के तहत एक जिला एक खेल के अंतर्गत शाहपुरा स्टेडियम पर कबड्डी खेल की कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसमे जिला खेल अधिकारी मानसिंह द्वारा कबड्डी खेल की विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही राजस्थान सरकार के द्वारा खेलो में आउट ऑफ टर्न के द्वारा सीधी भर्ती की जानकारी दी। स्टेडियम में बालक वर्ग में कबड्डी की प्रतियोगिता आयोजित की गई ।आयोजन में लगभग 200 खिलाड़ी उपस्थित थे। शाहपुरा खेल स्टेडियम में ग्रीष्मकालीन क्रीडा प्रशिक्षण शिविर क्रीड़ा परिषद द्वारा आयोजित किया गया था। खेल अधिकारी द्वारा नियमित प्रशिक्षणार्थियों को टी-शर्ट एवं प्रमाणपत्र दिए गए एवं खिलाड़ियों हेतु चने के कट्टे दिए। कार्यक्रम के दौरान अनेक एथेलेटिक्स,कुश्ती, कबड्डी खिलाड़ी एवं अल्पकालीन प्रशिक्षक मौजूद रहे।

## भारतीय फुटबॉल टीम फीफा महिला विश्व कप 2027 के लिए क्वालीफाई कर सकती है

नई दिल्ली, 7 जुलाई। भारतीय महिला फुटबॉल टीम इतिहास रचते हुए 22 साल बाद एएफसी महिला एशियन कप 2026 में जगह बनाई है। दरअसल, ब्लू टाइग्रेसेस ने थाईलैंड को 2-1 से हराकर अगले साल ऑस्ट्रेलिया में होने वाले महिला एशियाई कप में अपनी जगह पक्की कर ली है। वहीं अब इस गौरवशाली पल के बाद अब उम्मीद जताई जा रही है कि यही टीम 2027 फीफा महिला वर्ल्ड कप के लिए भी क्वालीफाई कर सकती है। 2027 फीफा विमेंस वर्ल्ड कप के लिए क्लावीफाई कर सकती है भारतीय टीम? एएफसी महिला एशियाई कप 2026 में भाग लेने वाले 12 देशों में से एक के रूप में भारत के पास पहली बार फीफा महिला वर्ल्ड कप के लिए क्वालीफाई करने और इतिहास रचने का बेहतरीन मौका है। यहां कुछ तथ्यों के आधार पर जानें ये कैसे मुमकिन हो सकता है- कुल 12 देशों को चार-चार के तीन ग्रुप में बांटा गया है। जिसमें हर टीम एक राउंड-रॉबिन खेलेगी। समूह विजेता, उपविजेता और दो सर्वश्रेष्ठ तीसरे स्थान वाली टीमें क्वार्टर फाइनल में पहुंचेगी।

## अल्काराज, सबालेंका विंबलडन के क्वार्टर फाइनल में पहुंचे

लंदन, 7 जुलाई। गत चैंपियन कार्लोस अल्काराज ने एंड्री रुबलेव और महिला वर्ग में शीर्ष वरीयता प्राप्त आर्यना सबालेंका ने एलिस मर्टेंस पर जीत दर्ज कर विंबलडन टेनिस टूर्नामेंट के क्वार्टरफाइनल में जगह बना ली है। रविवार को खेले गये मुकाबले में स्पेन के दिग्गज टेनिस खिलाड़ी अल्काराज ने 14वीं वरीयता प्राप्त रुबलेव के खिलाफ पहला सेट गंवाने के बाद वापसी करते हुए 6-7 (5), 6-3, 6-4, 6-4 से जीत दर्ज की। 22 वर्षीय स्पैनियार्ड ने दूसरे और तीसरे सेट में महत्वपूर्ण ब्रेक पॉइंट को भुनाया और चौथे सेट में एक और ब्रेक के साथ मैच अपने नाम कर लिया। अब अगले दौर में अल्काराज का मुकाबला ब्रिटेन के कैमरून नोरी से होगा। नोरी ने पांच सेटों के मैराथन में चिली के निकोलस जैरी को 6-3, 7-6 (4), 6-7 (7), 6-7 (5), 6-3 से हराया। वहीं पांचवीं वरीयता प्राप्त टेलर फ्रिट्ज ने अपने सर्वश्रेष्ठ विंबलडन प्रदर्शन की बराबरी करते हुए क्वार्टर फाइनल में प्रवेश किया।

## रोहित गावेनदर की घातक गेंदबाजी से जीती रेलवे क्रिकेट अकादमी

जयपुर, 7 जुलाई। सोनी क्रिकेट स्टेडियम पर चल रहे सोनी कप में रेलवे क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 139/5 रन बनाए। जिसमें उत्कर्ष सैनी ने नाबाद 53 रन व उदय सिंह राजावत ने नाबाद 26 रन का योगदान दिया। टीसीए क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में मोहन सैनी ने 2 विकेट लिए।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी टी सी ए क्रिकेट अकादमी मात्र 40 रन पर ऑल आउट हो गई। जिसमें अधिकतम शिव ने 9 रनों का योगदान दिया। रेलवे क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में रोहित गावेनदर ने 6 विकेट व रिंकू ने 3 विकेट लिए। मैन ऑफ द मैच रोहित गावेनदर रहे।

रफीक जोया की घातक गेंदबाजी से जीती आर डी क्लब- दिन का दूसरा मैच आर डी क्लब व आर्यन क्रिकेट अकादमी के बीच खेला गया। जिसमें आर डी क्लब ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवर में 99/6 रन बनाए। जिसमें अनिल कुमार ने 34 रन व विजय दारवाल ने 20 रनों का योगदान दिया। आर्यन क्रिकेट अकादमी की ओर से गेंदबाजी में सागर कुमावत को 2 विकेट मिले। लक्ष्य का पीछा करने उतरी आर्यन क्रिकेट अकादमी 16.1 ओवर में 70 रन पर ऑल आउट हो गई। जिसमें आयुष शर्मा ने 18 रन व सनी ने 15 रनों का योगदान दिया। आर डी क्लब की ओर से गेंदबाजी में रफिक जोया ने 4 विकेट व अनिल कुमार को 2 विकेट मिले। मैन ऑफ द मैच रफीक जोया रहे।

# राजस्थान के वुशू खिलाड़ियों ने एशिया कप में जीते पदक

जयपुर, 7 जुलाई। वुशू फेडरेशन ऑफ़ एशिया के तत्वावधान में दिनांक 2 से 7 जुलाई 2025 तक जिलिन, चीन में आयोजित एशिया कप वुशू प्रतियोगिता में भाग लेने वाली भारतीय वुशू टीम में राजस्थान के खिलाडियों ने 01 रजत व 02 कांस्य पदक जीत राजस्थान प्रदेश व देश का मान बढाया।

हीरानंद कटारिया, उपाध्यक्ष, भारतीय वुशू संघ व अध्यक्ष, राजस्थान वुशू संघ ने बताया कि महक शर्मा ने 75 किलोग्राम भारवर्ग में रजत पदक, जहान्वी मेहरा ने 56 किलोग्राम भारवर्ग में कांस्य पदक व नीतिका बंसल ने 65 किलोग्राम भारवर्ग में कांस्य पदक जीत प्रदेश का गौरव बढाया। राजेश कुमार टेलर, वुशू कोच ने बताया कि महक शर्मा का फाइनल मुकाबले में चीन के खिलाडी बो जियांग से हार का सामना करना पडा तथा जहान्वी मेहरा का सेमीफाइनल मुकाबले में हांगकांग के खिलाडी चिंग चेन से तथा नीतिका बंसल का सेमीफाइनल मुकाबले में वियतनाम के खिलाड़ी गुयेन थिंगोकान्ह से कड़े मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा। जहान्वी, नीतिका व महक के पदक जीतने पर राजस्थान वुशू संघ व सभी पदाधिकारियों ने बधाई प्रदान की।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा एवं केन्द्रीय कोयला व खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने सोमवार को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में भारतीय खान ब्यूरो द्वारा आयोजित खदानों के सम्मान समारोह में 7 एवं 5 स्टार रेटिंग वाली खदानों के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया।

# मुख्यमंत्री व केन्द्रीय खान मंत्री ने 7 व 5 स्टार माइन्स को सम्मनित किया

## भारतीय खान ब्यूरो खनन गतिविधियों के साथ पर्यावरण संरक्षण व सामाजिक उत्तर दायित्व के आधार पर खदानों की रेटिंग करता है

- मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि राज्य सरकार के प्रयास से 2024-25 में राजस्थान की रॉयल्टी में गत वर्ष के मुकाबले 24 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।
- बैठक में मुख्यमंत्री व केन्द्रीय खान मंत्री ने मुख्यमंत्री आवास पर खान विभाग की संयुक्त समीक्षा बैठक की।

जयपुर, 7 जुलाई। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राजस्थान खनन क्षेत्र के विकास के लिए पारदर्शी प्रक्रियाओं, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस तथा आधारभूत संरचना के विस्तार के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमारा लक्ष्य है कि राजस्थान खनन में अग्रणी बने। उन्होंने उद्यिमयों का आ ान करते हुए कहा कि राजस्थान में लोहे से लेकर सोने तक खनिज प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। वे प्रदेश में निवेश करें, राज्य सरकार उन्हें हर संभव सहयोग देने के लिए कटिबद्ध है।

शर्मा एवं केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी सोमवार को राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में भारतीय खान ब्यूरो द्वारा आयोजित 7 एवं 5 स्टार रेटिंग वाली खदानों के सम्मान समारोह में शिरकत कर रहे थे।

समारोह में मुख्यमंत्री ने कहा कि स्टार रेटिंग प्रणाली खनन गतिविधियों की मूल्यांकन प्रक्रिया के साथ पर्यावरण संरक्षण एवं सामाजिक उत्तरदायित्व को बढ़ावा देती है। उन्होंने भारतीय खान ब्यूरो द्वारा पुरस्कृत खदानों के प्रतिनिधियों को बधाई देते हुए कहा कि राजस्थान में भी खदानों का इस तरह से मूल्यांकन कर रेटिंग देने का नवाचार किया जाएगा।

शर्मा ने कहा कि प्रदेश में पूर्ववर्ती सरकार के समय वर्ष 2023-24 में माइनिंग रॉयल्टी के रूप में राजस्व, 3 प्रतिशत बढ़ोतरी के साथ, महज 7 हजार 460 करोड़ रुपये रहा। जबकि हमारे प्रयासों से 2024-25 में रॉयल्टी राजस्व 9 हजार 228 करोड़ रहा, जो गत वर्ष से 24 प्रतिशत अधिक था। यह रॉयल्टी राजस्व एक रिकॉर्ड है।

समारोह में मुख्यमंत्री शर्मा और केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने 7 एवं 5 स्टार रेटिंग वाली खदानों के प्रतिनिधियों को सम्मानित किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमारी सरकार प्रदेश में खनन से राजस्व अर्जन के साथ, खनन और पर्यावरण के मध्य संतुलन पर भी विशेष जोर दे रही है।

मुख्यमंत्री एवं केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर खान विभाग की संयुक्त समीक्षा बैठक कर रहे थे। इस दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में असीम खनिज संपदा की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए, नए खनिज ब्लॉक्स की पहचान की जाए। साथ ही, नीलामी प्रक्रिया में तेजी लायी जाए।

केन्द्रीय कोयला एवं खान मंत्री जी. किशन रेड्डी ने कहा कि राजस्थान खनिज संपदा की दृष्टि से समृद्ध राज्य है। यहां बहुमूल्य एवं दुर्लभ खनिजों की व्यापक संभावनाएं हैं।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी देश में ग्रीन एनर्जी सेक्टर को बढ़ावा देने के लिए दुर्लभ खनिजों के सुनियोजित एवं तीव्र खनन पर विशेष बल दे रहे हैं।

इस दिशा में राजस्थान की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।

# 'अशोक गहलोत सुर्खियों में रहना बंद कर, धरातल पर आयें'

## संसदीय कार्यमंत्री जोगा राम पटेल ने कहा कि गहलोत की पार्टी का अध्यक्ष ही उनकी बात खारिज कर रहा है

- पटेल ने कहा कि गहलोत को समझना चाहिये कि समय के साथ सभी किनारे आते हैं। उन्हें इसे सहन करना चाहिये व अपनी पार्टी के नये लोगों को आशीर्वाद देना चाहिये।

जोधपुर, 7 जुलाई (कासं)। संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक कार्य मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत को सुर्खियों में रहना बंद करके धरातल पर आना चाहिए, क्योंकि उनके बयानों को उनकी पार्टी के अध्यक्ष ही खारिज कर रहे हैं। पटेल ने सोमवार को सर्किट हाउस में मीडिया से बात करते हुए पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत की ओर से गत दिनों मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को हटाने के षड़यंत्र संबंधी बयान को लेकर पूछे गए सवाल के जवाब में यह बात कही।

पटेल ने कहा कि वे कहते हैं, सीएम हट जाएंगे, जबकि उनके नेता गोविंद डोटासरा कहते हैं कि सरकार पांच साल चलेगी, गहलोतजी के पास कोई शिगूफा आया होगा। ऐसे में उनको सुर्खियों में रहना बंद करके धरातल पर आना चाहिए। पटेल ने कहा कि गहलोत ने केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत के साथ समझौते के लिए बात की है, जिसका जवाब केन्द्रीय मंत्री ने दिया है, क्योंकि एक पुत्र के मन में अपनी मां के अपमान के प्रति स्वभाविक पीड़ा होती हैं। पटेल ने गहलोत पर तंज कसते हुए कहा कि उनको यह समझना चाहिए कि समय के साथ धीरे-धीरे सभी लोग किनारे आते हैं, इसलिए इसे सहन करना चाहिए। अपनी पार्टी के नए लोगों को आशीर्वाद देना चाहिए।

पटेल ने कहा कि प्रदेश में सीएम बदलने की कोई कवायद नहीं है। हमारे नेतृत्व ने साफ कहा है कि हमारे यहां सीएम पांच साल के लिए बनता है, इसलिए सीएम बदलने का सवाल ही नहीं हैं। राजस्थान में भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में विकास हो रहा है। इस कारण पीएम खुद तीन दौरे लगातार कर चुके हैं, इसलिए भजनाल शर्मा पूरे पांच साल काम करेंगे और प्रदेश का विकास करते रहेंगे और अगले टर्म में भी सीएम भजनलाल शर्मा ही होंगे।

पूर्व मुख्यमंत्री गहलोत और केन्द्रीय मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत के बीच मानहानि के मामले को लेकर चल रहे विवाद पर पटेल ने कहा कि अशोक गहलोत ने रिपोर्ट को देखकर उनकी माताजी का नाम लिया, यदि ऐसा है तो वे उसे सामने रखें। पटेल ने दावा किया कि जो रिपोर्ट जांच एजेंसी एसओजी ने कोर्ट में पेश की है, उसमें, ऐसी किसी भी रिपोर्ट में, शेखावतजी की माताजी सहित किसी सदस्य का नाम नहीं है। सिर्फ राजनीतिक प्रतिद्वंदिता के चलते आरोप लगाए थे। अब कह रहे हैं कि समझौता कर लो। इसके लिए शेखावत ने इनकार किया है।

मंत्री पटेल ने हनुमान बेनीवाल के उस आरोप का खंडन किया, जिसमें उन्होंने कहा था कि भाजपा के नेता बिना अधिकार सरकारी आवास में रह रहे हैं। पटेल ने कहा कि हमारा कोई भी नेता या विधायक बिना अधिकार के सरकारी आवास में नहीं रह रहा है। उनको क्या है कि विधायक नहीं होते हुए भी सरकारी आवास पर कब्जा जमाए बैठे हैं। वे किस हैसियत से वहां रह रहे हैं। अपनी गलती छिपाने के लिए दूसरों पर आरोप लगाने से कुछ नहीं होगा। उन्होंने कहा कि यदि नाम हैं तो सूची बताएं।

गुर्जर आरक्षण को लेकर बनाई गई मंत्रिमंडलीय कमेटी पर पटेल ने कहा कि सभी विभागों से तथ्यात्मक रिपोर्ट मंगवा ली है। अब समाज के वरिष्ठ लोगों से बात करेंगे, आंदोलन में शामिल लोगों से मिलेंगे। उनकी सुनवाई कर उनका पक्ष जानेंगे। उनको जो न्यायोचित हक मिलना चाहिए, वह दिलाने का प्रयास करेंगे। इससे नाराजगी दूर होगी।

## मेवाड़ की ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

देखना उनकी ज़िम्मेदारी नहीं है कि ऐसी रैलियों और मीटिंगों से पार्टी को फायदा हो? या फिर उनका काम सिर्फ गहलोत और उनके करीबी लोगों को खुश करना ही है?

मेवाड़ की 28 सीटों में से कांग्रेस सिर्फ 6 सीटें जीत पाई थी, जबकि सी. पी. जोशी खुद को इस इलाके का नेता मानते हैं।

सूत्रों के अनुसार, इस रैली का मकसद आदिवासियों को पार्टी से जोड़ना नहीं था, बल्कि दिल्ली की राजनीति में पैर जमाने तथा वहाँ कोई पद पाने की कोशिश थी। जोशी दिल्ली आकर के. सी. वेणुगोपाल, माणिकम टैगोर और राहुल गांधी के करीबी माने जाने वाले अन्य लोगों से मिले, ताकि दिल्ली में कोई पद मिल सके। शायद इसी वजह से पवन खेड़ा को बुलाया गया, जबकि वे आदिवासी नहीं हैं।

अपना पद बचाने के लिए, रंधावा अब वेणुगोपाल के करीबी हो गए हैं, लेकिन राजस्थान में कांग्रेस की राजनीति को लेकर उनकी भूमिका और ज्यादा विवाद पैदा कर रही है।

# सैनेटरी पैड वाले राहुल के वीडियो पर दिल्ली में भी एफआईआर

- बिहार में सैनेटरी पैड पर राहुल गांधी का फोटो लगाने सम्बंधी फेक वीडियो पर अब तक तीन शिकायतें दर्ज हो चुकी हैं।

नयी दिल्ली, 07 जुलाई। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी के सैनेटरी पैड वीडियो से जुड़े विवाद को लेकर यहां एक शिकायत दर्ज की गई है, जिसे मिलाकर, देशभर में इस मुद्दे में अब तक तीन शिकायतें दर्ज हो चुकी हैं।

युवा कांग्रेस के अनुसार, यह शिकायत संगठन के अध्यक्ष उदय भानु चिब, बिहार कांग्रेस के प्रभारी कृष्ण अल्लावरु, लीगल सेल के चेयरमैन रूपेश सिंह भदौरिया के नेतृत्व में यहां मंदिर मार्ग पुलिस थाने में दर्ज कराई गई है। युवा कांग्रेस लीगल सेल दिल्ली के अध्यक्ष विवेक पुनिया द्वारा राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल के माध्यम से एक समानांतर शिकायत भी प्रस्तुत की गई है। इससे पहले रविवार को तेलंगाना तथा कर्नाटक में इस मामले में प्राथमिकी दर्ज कराई गई है। एक एफआईआर तेलंगाना राज्य लीगल सेल अध्यक्ष अधिवक्ता जे. शिवा चरण रेड्डी और समन्वयक अधिवक्ता गुदूर निखिल रेड्डी के नेतृत्व में अपराधियों के खिलाफ दर्ज की गई है। कर्नाटक में, बेंगलुरु के हाई ग्राउंड्स पुलिस थाने में भारतीय न्याय संहिता 2023 की विभिन्न धाराओं के तहत प्राथमिकी दर्ज की गई है।

## थप्पड़ कांड...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

याचिका में अधिवक्ता रजनीश गुप्ता ने अदालत को बताया कि प्रकरण साधारण मारपीट का है, जबकि उसे हत्या का प्रयास का बताकर रिपोर्ट दर्ज की गई। बूथ पर निर्वाचन आयोग की ओर से लगाए गए सीसीटीवी और मौके पर मौजूद तहसीलदार के मोबाइल से की गई रिकॉर्डिंग में एसडीएम का गला घोंटने जैसा कुछ रिकॉर्ड नहीं हुआ है। इसके अलावा एसडीएम की मेडिकल रिपोर्ट में भी न तो गले पर और ना ही शरीर के किसी अन्य हिस्से पर ऐसी कोई प्राणघातक चोट मिली है। मामले में पुलिस ने न सिर्फ बीएनएस की धारा 109 (1) के तहत हत्या का प्रयास का मामला दर्ज किया। वहीं इसी धारा में आरोप पत्र भी पेश कर दिया। दूसरी ओर अदालत ने भी इसी धारा में याचिकाकर्ता पर चार्ज फ्रेम कर दिए। जबकि प्रकरण ज्यादा से ज्यादा साधारण मारपीट का ही बनता है। इसलिए उसके खिलाफ किए गए चार्ज फ्रेम आदेश को रद्द किया जाए। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने निचली अदालत की कार्रवाई पर रोक लगाते हुए राज्य सरकार से जवाब तलब किया है।

## जज के पद पर नियुक्ति...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

न्यायाधीश के रूप में नियुक्ति 2021 से लंबित है, के प्रकरण ने न्यायिक स्वतंत्रता पर कार्यपालिका की लंबी छाया को उजागर किया है। किरपाल का आरोप है कि उनकी नियुक्ति उनकी यौन सम्बंधी प्राथमिकताओं और उनके साथी की राष्ट्रीयता पर उठाई जा रही आपत्तियों के कारण रुकी हुई है।

किरपाल ने कहा है कि इस देरी के बावजूद, वे अपनी सहमति वापस नहीं लेंगे: "मैं अपनी अंतरात्मा के अनुसार कार्य करुँगा। जब नियुक्तियों की बात होती है, तो यह सिर्फ दो पक्षों, कोलीजियम और सरकार की बात नहीं होती, बल्कि न्यायालयों की भी बात होती है। और अगर न्यायालय कुछ नहीं कर रहे, तो कोई और क्या कर सकता है?"

दातार और मजूमदार वकीलों की उस निरंतर बढ़ती सूची में शामिल हो गए हैं, जिन्होंने व्यर्थ इंतजार किया। इनमें से एक वकील रामास्वामी नीलकंदन का नाम चार अन्य वकीलों के साथ जनवरी 2023 में अनुशंसित किया गया था। उन चार वकीलों को फरवरी में नियुक्त कर दिया गया, लेकिन नीलकंदन, जो ओबीसी वकील हैं, अभी भी इंतज़ार कर रहे हैं।

इसी तरह से, सुभाष उपाध्याय, जिनका नाम अप्रैल 2023 में उत्तराखंड उच्च न्यायालय के लिए अनुशंसित किया गया था, और अरुण कुमार, जिनका नाम मई 2023 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय के लिए अनुशंसित किया गया था, दोनों अभी भी इंतज़ार कर रहे हैं।

वकील अमित सेठ का नाम अक्टूबर 2023 में सरकार को भेजा गया था, उनका प्रकरण मध्य प्रदेश उच्च न्यायालय के लिए पांच सदस्यीय सूची में से एकमात्र लंबित प्रकरण है।

अब भी 27 वकील अपनी नियुक्ति का इंतज़ार कर रहे हैं, जिनमें से चार महिलाएं हैं – शमीमा जहां (गुवाहाटी हाईकोर्ट, जनवरी 2024), श्रीजा विजयलक्ष्मी (अप्रैल 2024), ताजल वाशी (गुजरात हाईकोर्ट, अक्टूबर 2024), और शीतल मिर्धा (राजस्थान हाईकोर्ट, मार्च 2025)।

## '3 से 5 करोड़ ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

की रिश्वत निजी संस्थानों से ली गई थी, ताकि एनएमसी की मान्यता मिल सके, चाहे मेडिकल बुनियादी ढांचा कैसा भी हो।

डॉ. मेहरोत्रा ने कहा, "यह कहानी स्वयं स्वास्थ्य मंत्रालय के अंदर शुरू हुई, जहाँ अधिकारी मेडिकल कॉलेजों की मंजूरी से संबंधित संवेदनशील फ़ाइलों को एक्सेस और साझा करते हैं।" ये दस्तावेज, जिसमें आंतरिक नोटिंग, निरीक्षण कार्यक्रम और पहचान की जानकारी होती है, उन्हें गुपचुप तरीके से मोबाइल के माध्यम से निजी एजेंटों को भेजा जाता है, जो देशभर के मेडिकल कॉलेजों के लिए काम करते हैं, और यह सब नकदी के बदले किया जाता है।

उन्होंने कहा, इस प्रारंभिक जानकारी से कॉलेजों को निरीक्षणों का आयोजन कराने में सहायता मिलती है, जिसमें नकली फैकल्टी, प्रॉक्सी मरीज और जाली बायोमेट्रिक उपस्थिति दिखाई जाती थी, जिससे इन्हें एनएमसी से अनुकूल रिपोर्ट मिलती थी।

डॉ. मेहरोत्रा ने पुष्टि की, निरीक्षण टीमों को नियमित रूप से रिश्वत दी जाती थी, और कुछ मामलों में, अधिकारियों ने कॉलेजों को जाली दस्तावेज व फर्जी योग्यता तय करने में मदद तक दी, ताकि इन अधिकारियों द्वारा नियामक कार्यवाही पूरी की जा सके और इन कॉलेजों को मान्यता मिल सके।

# बिहार मतदाता सूची पर चुनाव आयोग के खिलाफ सुनवाई 10 जुलाई को

## सुप्रीम कोर्ट की डबल बैंच ने वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल का शीघ्र सुनवाई का अनुरोध स्वीकार किया

- बिहार में विधानसभा से पहले मतदाता सूचि के विशेष गहन पुनरीक्षण के फैसले का राजनीतिक दलों के अलावा कई स्वयंसेवी संस्थाएं भी विरोध कर रही हैं।

नयी दिल्ली, 07 जुलाई। उच्चतम न्यायालय ने सोमवार को कहा कि बिहार की मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण करने के चुनाव आयोग के फैसले की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर 10 जुलाई को विचार होगा।

न्यायमूर्ति सुधांशु धूलिया और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की अंशकालीन कार्य दिवस पीठ ने याचिकाकर्ताओं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल के इस मामले में शीघ्र सुनवाई करने का अनुरोध स्वीकार करते हुए कहा कि अदालत गुरुवार को इस मामले में विचार करेगी।

बिहार में नवंबर में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। उससे पहले मतदाता सूची का विशेष गहन पुनरीक्षण करने के चुनाव आयोग के इस फैसले पर सवाल उठाये जा रहे हैं। विभिन्न राजनीतिक दलों के अलावा, कई स्वयंसेवी संस्थाएं पुनरीक्षण के लिए निर्धारित समय समेत, अन्य व्यावहारिक दिक्कतों का हवाला देते हुए आयोग के इस फैसले का खुलकर विरोध कर रही हैं। उनका कहना है कि इससे बड़ी संख्या में मतदाता अपने मताधिकार से वंचित हो सकते हैं। इसलिए याचिकाकर्ताओं ने अदालत से गुहार लगाते हुए कहा है कि चुनाव आयोग के गत 24 जून को जारी उक्त आदेश को रद्द कर दिया जाए।

याचिकाकर्ताओं में कांग्रेस महासचिव के सी वेणुगोपाल, तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा, राष्ट्रीय जनता दल सांसद मनोज कुमार झा, राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी सांसद सुप्रिया सुले, सीपीआई के महासचिव डी राजा, शिवसेना (यूबीटी) के अरविंद सावंत, झारखंड मुक्ति मोर्चा सांसद सरफराज अहमद और भाकपा (एमएल) के दीपांकर भट्टाचार्य शामिल हैं। इसी प्रकार, गैर सरकारी संगठनों – एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स, पीयूसीएल और सामाजिक कार्यकर्ता योगेंद्र यादव समेत अन्य ने इस संबंध में चुनाव आयोग के 24 जून, 2025 के फैसले की वैधता को शीर्ष अदालत में चुनौती देते हुए अलग-अलग याचिकाएं दायर की हैं।

याचिकाकर्ताओं ने दावा किया कि यह कदम संविधान के अनुच्छेद 14, 19, 21, 325 और 326 के साथ-साथ, जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1950 और मतदाता पंजीकरण नियम, 1960 के नियम 21 ए के प्रावधानों का उल्लंघन है। उन्होंने तर्क दिया कि यदि इस आदेश को रद्द नहीं किया गया तो, मनमाने ढंग से और उचित प्रक्रिया के बिना, लाखों मतदाताओं को अपने प्रतिनिधियों को चुनने से वंचित किया जा सकता है।

## हाईकोर्ट ने...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

कि आरोपी बाहुबली और प्रभावशाली है। धौलपुर में केस की सुनवाई होने से याचिकाकर्ता के साथ-साथ गवाहों की जान-माल को भी खतरा है। आरोपी मलिंगा के खिलाफ अन्य आपराधिक प्रकरण भी दर्ज हैं। ऐसे में केस को धौलपुर से बाहर भेजा जाए।

## एसआई 2021 ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

कैबिनेट सब कमेटी ने अपनी रिपोर्ट में भर्ती को फिलहाल निरस्त नहीं करने की बात कही है और इसे मुख्यमंत्री स्तर पर भी सहमति दी जा चुकी है। इस याचिका में सब कमेटी के इस आदेश को चुनौती नहीं दी गई है। ऐसे में याचिका को सारहीन मानते हुए खारिज किया जाए। यदि याचिकाकर्ता सब कमेटी के निर्णय को चुनौती देना चाहे तो उसके लिए अलग से याचिका दायर कर सकता है।

इस दौरान अदालत ने कहा कि मुख्यमंत्री स्तर पर मामला इतने दिनों तक लंबित क्यों रहा। इसके साथ ही अदालत में पहले की राय को लेकर सारी नोटशीट पेश क्यों नहीं की गईं। इस पर महाधिवक्ता ने कहा कि मुख्यमंत्री कार्यालय में पत्रावली का परीक्षण चल रहा था और मामले में पूरी पारदर्शिता से निर्णय लिया गया है। दूसरी ओर, राज्य सरकार के प्रार्थना पत्र का जवाब देते हुए याचिकाकर्ता की ओर से अधिवक्ता हरेन्द्र नील ने कहा कि भर्ती रद्द करने की मांग आज भी जीवित है। कोर्ट की ओर से बार-बार कहने के बाद ही भर्ती निरस्त नहीं करने का निर्णय पेश किया गया है। ऐसे में याचिका को सारहीन नहीं कहा जा सकता।

## दलाई लामा के जन्म...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

आतंकवादियों के खिलाफ किया गया था, के दौरान भारत की सैन्य स्थिति की रियल-टाइम जानकारी मिल रही थी।

भारत और चीन के बीच, दलाई लामा और भारत में उनकी मौजूदगी को लेकर, अकसर कूटनीतिक टकराव होता रहा है। भारत ने हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में तिब्बत की निर्वासित सरकार को शरण दी हुई है।

दलाई लामा 1959 में चीन से भागकर भारत आए थे, जब चीनी सेना ने तिब्बत में घुसकर नियंत्रण ले लिया था। तब से भारत ने उन्हें और उनकी निर्वासित सरकार को शरण दी है, जिससे चीन को हमेशा आपत्ति रही है।

अब, जब दलाई लामा अपने जीवन के नौवें दशक में प्रवेश कर चुके हैं, तो उनके उत्तराधिकारी को लेकर बड़ा सवाल उठ खड़ा हुआ है। दलाई लामा ने हमेशा कहा है कि उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी का पुनर्जन्म तय करने का अधिकार केवल उनके ट्रस्ट को है, जबकि चीन का कहना है कि अगला दलाई लामा बीजिंग की कम्युनिस्ट पार्टी सरकार द्वारा निर्धारित प्रक्रिया से ही चुना जाएगा।

कभी-कभी दलाई लामा ने यह भी संकेत दिया कि यह परंपरा खत्म की जा सकती है और आगे कोई दलाई लामा नहीं होगा। लेकिन उसके बाद उन्होंने अपनी राय बदली और अब यह माना जा रहा है कि दलाई लामा की संस्था उनकी मृत्यु के बाद भी जारी रहेगी।

बौद्ध धर्म की मान्यता के अनुसार, दलाई लामा का पुनर्जन्म होता है और नए दलाई लामा की पहचान एक पारंपरिक और रहस्यमयी प्रक्रिया के तहत की जाती है, जिसे सदियों से अपनाया जा रहा है। लेकिन चीन की सरकार का कहना है कि उच्चतम लामाओं का चयन उसकी कम्युनिस्ट सरकार द्वारा मंजूर की गई एक सरकारी प्रक्रिया से ही होगा।

इसमें सामान्य प्रक्रिया अपनाई जाती है, जैसे कि लॉटरी पद्धित। भावी लामाओं के नाम गोल्डन अर्न (सोने के घड़े) में रखे जाते हैं, जो कि कम्युनिस्ट सरकार द्वारा दिया गया होता है। इस प्रक्रिया ने तिब्बती बौद्धों के बीच भारी नाराज़गी और नफ़रत पैदा की है।

भविष्य के दलाई लामा की पहचान पूर्व में पुराने पारंपरिक तरीकों से अनुयायियों के बीच से की जाती थी। तथापि, जैसे ही एक लड़के को दलाई लामा घोषित किया गया, उसे बीजिंग की सरकार ने अगवा कर लिया और तब से उसके बारे में बहुत कम जानकारी उपलब्ध है।

## शताब्दी ...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

के संगठन के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर ने सोमवार को यहां केशव कुंज में एक संवाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। उन्होंने कहा कि संघ की स्थापना के शताब्दी वर्ष में हिंदू समाज में धर्म जागरण और बुराइयों को दूर करने को लेकर देशभर में मंडल और गांव स्तर पर एक लाख से अधिक जगहों पर हिंदू सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। इसी तरह खंड और नगर में 11,360 स्थानों पर सामाजिक सद्भाव बैठकें और 924 जिलों में प्रमुख नागरिक गोष्ठियां भी आयोजित की जाएंगी।

उन्होंने कहा कि ये कार्यक्रम आगामी दो अक्टूबर, विजयदशमी से शुरू होंगे और एक साल तक चलेंगे। मुख्य कार्यक्रम नागपुर में आयोजित किया जाएगा।

# तहव्वुर राणा ने माना कि वह पाक सेना के बेहद करीब है

## एनआईए की पूछताछ में राणा एक एक करके कई राज उगल रहा है

- राणा ने बताया कि रावल पिंडी के आर्मी मैडिकल कॉलेज से एमबीबीएस करने के बाद उसे पाकिस्तान की सेना ने कई महत्वपूर्ण मिशनों पर अलग-अलग देशों में भेजा था।

नई दिल्ली, 07 जुलाई। 26/11 मुंबई आतंकवादी हमलों से जुड़े एक अहम घटनाक्रम में मुंबई क्राइम ब्रांच ने इसी साल अप्रैल में राष्ट्रीय जांच एजेंसी की कस्टडी में बंद मुख्य आरोपी तहव्वुर राणा से गहन पूछताछ की थी। पुलिस सूत्रों के अनुसार, इस मामले में जांच के दौरान कई जानकारियां पहले से ही रिकॉर्ड में थीं। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि राणा अभी भी मानसिक रूप से अपने दिए हुए पुराने जवाबों पर टिका हुआ है। पुलिस को वह जानकारियां तो दे रहा है, लेकिन उसके बातचीत के तरीके से उसकी कट्टरपंथी विचारधारा भी झलकती है।

अपने बयान में राणा ने दावा किया कि वह पाकिस्तानी सेना का एक भरोसेमंद व्यक्ति था। उसने बताया कि इराक द्वारा कुवैत पर आक्रमण के दौरान उसे सऊदी अरब में एक गुप्त मिशन पर भी भेजा गया था, जिससे पाकिस्तानी सैन्य प्रतिष्ठान के लिए उसके रणनीतिक महत्व का पता चलता है।

राणा ने बताया कि उसने 1986 में रावलपिंडी के आर्मी मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की पढ़ ाई पूरी की थी, जिसके बाद उसे क्वेटा में कैप्टन (डॉक्टर) के पद पर नियुक्त किया गया। उसने सिंध, बलूचिस्तान, बहावलपुर और सियाचिन-बालोतरा सेक्टर सहित, पाकिस्तान के कई संवेदनशील सैन्य क्षेत्रों में भी काम किया।

पूछताछ के दौरान, राणा ने अब्दुल रहमान पाशा, साजिद मीर और मेजर इकबाल को जानने की बात भी स्वीकार की। ये तीनों पाकिस्तानी नागरिक हैं और माना जाता है कि 26/11 मुंबई हमलों में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी। राणा कई भाषाओं जैसे- हिंदी, अंग्रेजी, अरबी और पश्तो का जानकार है।

वहीं, क्राइम ब्रांच को दिए अपने बयान में राणा ने डेविड हेडली के बारे में भी कई खुलासे किए। उसने बताया कि 2003 और 2004 के बीच हेडली ने लश्कर-ए-तैयबा के साथ तीन ट्रेनिंग कोर्स में हिस्सा लिया था, हालांकि उसे सभी कोर्स के नाम याद नहीं हैं।

जब उससे पूछा गया कि मुंबई में पहला इमिग्रेशन सेंटर खोलने का विचार किसका था, तो राणा ने दावा किया कि यह पूरी तरह से उसका अपना विचार था, हेडली का नहीं। हेडली को भेजे गए पैसों के बारे में राणा ने कहा कि यह रकम कारोबारी खर्च के तौर पर भेजी गई थी। राणा ने यह भी स्वीकार किया कि मुंबई में ऑफिस होने के बावजूद क्लाइंट हासिल करने में चुनौतियां आईं।

अपने पिछले सैन्य करियर के बारे में बताते हुए राणा ने बताया कि सियाचिन में एक असाइनमेंट के दौरान, उसे पल्मोनरी एडिमा हो गया था, जिसकी वजह से उसे लंबे समय तक ड्यूटी से अनुपस्थित रहना पड़ा। इस लंबी अनुपस्थिति के कारण उसे भगोड़ा घोषित कर बर्खास्त कर दिया गया।

पुलिस ने यह भी बताया कि डेविड हेडली के कोर्ट में दिए हुए बयान के बारे में भी राणा की स्टडी अच्छी है।

## 'जेन स्ट्रीट की...

( प्रथम पृष्ठ का शेष )

रूप में काम करती हैं। सेबी ने कहा है कि जेन स्ट्रीट की बड़े पैमाने पर खरीदारी ने खुदरा निवेशकों को निवेश करने के लिए प्रभावित किया, जिससे बाजार में हेरफेर हुआ।

राष्ट्रदूत ( एचयूएफ ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, ( राज. ) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908